

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

مैं

हसैन

से

हसैन

लेखक

हज़रत नुसरत आलम शेख (जाफ़र)

आंसुओ की स्याही से

जो यह किताब मैं शुरू करने जा रहा हूँ। वह असल में रसूल की उस हदीस को कितना सही साबित करती है, की जब मक्के के मुशरिकीनो ने रसूल के चचा जनाब अबू तालिब से कहा। की आप अपने भतीजे को समझाए की वह हमारे बुतों को बुरा ना कहे। यह बात जब पैगम्बर (नबी सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) तक पहुंची। तो आपने फरमाया अगर मक्के के मुशरिकीन मेरे एक हाथ पे चाँद और एक हाथ पे सूरज रख दे तो भी मैं अल्लाह का दीन लोगो तक पहुंचाता रहूँगा। रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) यह जानते थे की यह मुशरिकीन मेरे हाथ पे सूरज-चाँद क्या रखेंगे। बल्कि एक दिन ऐसा भी आएगा की मुझे खुद अपने सूरज और चाँद इस्लाम पे कुर्बान करने पड़ेंगे और यह हदीस कितनी सही है। और रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की सोच कितनी दूर तक की है, की खानदाने बनी हाशिम (रसूल का खानदान) सेराजन मुनीर कौन है (रसूल-ए-खुदा) और कमर बनी हाशिम कौन है (अब्बास) यानी जो चीजे रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने बताई सूरज और चाँद उनकी मुराद इन्ही बेटो से थी।

यह किताब वाकिया-ए-करबला जो मैं आपके सामने लिख रहा हूँ। यूँ समझो की मैं खुद देख रहा हूँ और लिख रहा हूँ। यानी मैं दोनों काम कर रहा हूँ। आज कल की ज़बान में मैं लाइव टेलीकास्ट कर रहा हूँ। इन गुनेहगार आँखों ने जो देखा उसको उसी तरह लिख रहा हूँ। अपने खून से ताकि दुनिया को मालूम हो मैं हुसैन से हूँ, मैं हुसैन से हूँ, मैं हुसैन से हूँ।

शुक्रिया

हज़रत नुसरत आलम शेख (जाफ़र)

२६ रज्जब ६० हिजरी अजब दिन है, आज सूरज में वह तेज़ी नहीं है जो रोज़ होती थी मदीने का रेगिस्तान आज बहुत खामोश है शायद किसी आने वाले तूफान की पेशीनगोई कर रहा हो एक जईफ़ सा शक्स नूरानी दाढ़ी सफ़ेद कपडे पहना मस्जिदे नाबुवी में बैठा इबादत में मशगूल है, नमाज़-ए-इशा हो चुकी है लोग अपने घरों को जा चुके हैं। मैं बड़ा परेशान हूँ की मस्जिद में छोटा सा चिराग जल रहा है। और मैं उस शक्स को पहचान नहीं पा रहा हूँ। मैं धिरे-धिरे दबे पाँव उनके करीब पहुंच जाता हूँ, अरे यह तो हुसैन इब्ने अली हैं। मैं चौका और देर होने की वजह पूछने के लिए उनके पास बैठ गया की इनकी इबादत ख़त्म हो और मैं पूछूँ, तभी अचानक एक आवाज़ ने हमको चौका दिया “ए हुसैन तुम्हे वालिए मदीना ने इसी वक्त हाज़िर होने के लिए कहा है” यह आवाज़ एक सिपाही की थी जो मदीने के गवरनर वलीद का पैगाम लेकर आया था। हुसैन उस्से मुखातिब होते हैं और फरमाते हैं के आज तो बहुत रात हो चुकी है इन्शा-अल्लाह मैं कल हाज़िर हो जाऊंगा यह कहकर मस्जिद के बाहर तशरीफ़ लाते हैं और अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर से मुलाकात करते हैं। इब्ने जुबैर पूछते हैं मौला यह क्या माजरा है ?! इतनी रात गए गवरनर का बुलाना हमे ठीक नहीं लगता इसपर हुसैन फरमाते हैं के हाकिम-ए-शाम माविया का इन्तेकाल हो गया है और मुझे यज़ीद की बैत के लिए बुलाया गया है। हुसैन कडक आवाज़ में बोलते हैं शायद वलीद यह नहीं जानता की मैं रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) का नवासा, अली का बेटा, फात्मा का लाल हूँ और हसन का छोटा भाई हुसैन हूँ। ए इब्ने जुबैर मैं हुसैन हूँ, मैं हुसैन हूँ, मैं हुसैन हूँ।

हज़रत हुसैन मायूसी की हालत में घर तशरीफ़ ले जाते हैं, आप जैसे ही घर में तशरीफ़ फरमाते हैं आपके चेहरे की परेशानी आपकी मायूसी सबकुछ बयान कर रही थी, उम्मे लैला, रब्बाब और बहन कुलसुम(बेवा), जो आपके साथ रहती थी आपकी माँ उम्मुल बनीन(सगी नहीं), आपकी नानी उम्मे सलमा(सगी नहीं), आपके तमाम भाई(सगे नहीं) आपको घर लेते हैं. लेकिन एक भी

इमाम से पूछने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा है। एक अजीब सा सन्नाटा, मायूसी, उदासी है और थोड़ी दूर पर जलता हुआ रौगन इतना नूर बिखेर रहा है जैसे वह खत्म होने वाला हो और उसकी रौशनी में हमें सब कुछ साफ नज़र आ रहा है लेकिन मेरी आंखें बंद हैं क्योंकि वहां पे परदे दार औरते भी हैं। तो मैं अपनी आंखें कैसे खोल सकता हूँ। लेकिन मैं बहेरा नहीं सुन तो सकता हूँ, इसी सन्नाटे को तोड़ती हुई जनाबे कुलसुम की आवाज़ "अब्बास" बहन ज़ैनब को बुलाओ। हुसैन कहते हैं नहीं, आज मुझको वालिए मदीना वलीद ने बुलवाया था। शायद शाम का हाकिम का इन्तेकाल हो गया है, और इसी लिए वह मुझसे उसके बेटे यज़ीद की बैत लेना चाहता है। खैर मैं इन्शा-अल्लाह कल जाऊंगा, लेकिन तुम सब यह समझ लो की मदीना छोड़ने का वक्त आ गया जब यह खबर जनाबे ज़ैनब को लगती है तो वह परेशान हाल अपने भाई से मिलने आ जाती है।

अब घर में खामोशी नहीं है उदासी है अब जोश है। नवजवान बनी हाशिमो में अब वह सब अब्बास की निगरानी में मीटिंग करने लगे की कल हम सब अपने मौला के साथ चलेंगे। उनमें से एक आवाज़ आई नहीं अपने आका के साथ चलेंगे। यह आवाज़ अब्बास की थी जो अपने को हुसैन का गुलाम कहते थे और उन्हें आका कहकर पुकारते थे।

बात अब्बास की निकली और मैं उनके बारे में कुछ ना बताऊ तो शायद यह दास्ताँ अधूरी रह जाएगी, फात्मा ज़हेरा की शहादत के बाद हज़रत अली ने अपने भाई अकील को बुलाया और कहा "अकील तुम तो अरब के सब कबीलों को जानते हो" मैं चाहता हूँ की मैं किसी बहादुर कबिले की लड़की से निकाह करूं और अल्लाह हमको ऐसा बेटा दे जो हमारे हुसैन की नुसरत करे खैर कबिले कलबी की साहब जादी फात्मा कलबी से आपका निकाह हुआ. इनको उम्मुल बनीन भी कहते हैं, आपसे ४ बेटे पैदा हुए।

१) अब्बास

२) जाफ़र

३) उस्मान

४) अब्दुल्लाह

जब उम्मुल बनीन दुल्हन बनकर हज़रत अली की घर की देहलीज़ पर आई तो आप वहीं देहलीज़ पर बैठ गई, और हज़रत अली से फ़रमाया की मैं अपने शहजादों और शहज़दियों से मिलना चाहती हूँ जब हसन, हुसैन, ज़ैनब, कुलसुम आ गए जो की फात्मा ज़हेरा बनीते मुहम्मद (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के बच्चे थे. उम्मुल बनीन ने हाथ जोड़ कर कहा मेरे शहजादों और शहज़ादियो यह ना समझना की मैं इस घर में तुम्हारी माँ बनकर आई हूँ बल्कि मुझे अपनी कनीज़ समझना मैं अपनी शहज़ादी फात्मा ज़हेरा की तरह मुहब्बत तो नहीं दे पाऊँगी लेकिन मैं उनकी कमी आपको नहीं महसूस करने दूंगी ।

यही बात उम्मुल बनीन ने अपने चारो बच्चो को भी सिखाई, इसलिए अब्बास हुसैन को अपना आका कहते थे ।

एक तरफ घर की तमाम औरते इबादत में मशगूल है और दूसरी तरफ नौजवाने बनी हाशिम अपनी मीटिंग ख़त्म कर चुके हैं । लेकिन इन दोनों के बीच हज़रत हुसैन ज़ानों के बल बैठ जाते हैं और चेहरा कब्रे मुक़द्दस रसूल-ए-ख़ुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की तरफ कर लेते हैं. तभी उनकी आँखों से आंसू जारी हो जाते है, जैसे की नाना जान से रू-ब-रू बात कर रहे हो । मेरे लिए अफ़सोस की बात यह है की मैं सुन नहीं पा रहा हूँ इस लिए मैं और करीब जाता हूँ की मेरे कान

और उनके लबो के बीच लग भग फासला ना के बराबर अब कुछ आवाज़ मेरे कानो में आ रही है

“ऐ नाना जान आपकी उम्मत ने हमारे ऊपर बहुत जुल्म किये हैं हमारी माँ को हमसे छीना, हमारा बाप शहीद हुआ, हमारे भाई का कलेजा कटा ऐ नाना जान क्या यह वही वक्त है जिसका आपने खुदा से वादा किया था ऐ नाना जान हम कुर्बानी देने को तैयार हैं, नाना जान मैं आपके वादे को पूरा करूँगा” यह गुफ्तगू चल ही रही थी की ज़ैनब की आवाज़ आती है की भाई आपने क्या सोचा है, हज़रत फरमाते हैं की मुझे बशारत हो गई है। मैं कल जाऊंगा, लेकिन बहन कहती है की आप अकेले नहीं जाएंगे घर के सारे मर्द आपके साथ जाएंगे, हुसैन कहते हैं के लेकिन मुझे वलीद ने अकेले बुलाया है, मैं अकेले जाऊंगा। खैर कुछ गुफ्तगू के बाद तय होता है की तमाम बनी हाशिम साथ में जाएंगे लेकिन वलीद के महल में इमाम तन्हा जाएंगे और अगर अन्दर से हज़रत हुसैन की आवाज़ गैर मामूली तौर पर हो तो तमाम नौजवान अन्दर आ जाएंगे। अब अब्बास की आँखों में नींद कहां अली अकबर भी बेचैन, मुस्लिम भी बेचैन, बहन परेशान, बीवियों में खौफ, माँ ओ में ममता के आंसू साफ़ झलक रहे हैं लेकिन इमाम मुतमईन है।

वलीद के महल के बाहर अब हुसैन पहुंच चुके हैं। दिन है २७ रज्जब ६० हिजरी वक्त सुबह का, तय शुदा बातों के तेहत नौजवानों को बाहर छोडा और इमाम अन्दर दाखिल हो गए, थोड़ी दूर चलने के बाद उनको महसूस हुआ के उनके पीछे कोई आ रहा है, आप सकते हैं और मुड कर कहते हैं अब्बास हमने तुम्हे मना किया था तुम क्यों आए। अब्बास हाथ जोडकर कहते हैं मैं तो आपका गुलाम हूँ आपकी जूतियाँ उठाने आया हूँ। (इस ज़माने में ऐसा चलन था के बड़े लोगो के साथ एक गुलाम चलता था जो जूतियां उठाता था और उसकी गिनती नहीं में होती थी) यहां पर मैंने अब्बास की तेज़ ज़ेहनियत शेर के जैसी तेज़ निगाहे महसूस की उन्होंने इतनी देर में महल के

अन्दर का पूरा मुआइना कर लिया के कितने सिपाही और कहां-कहां है और जब समझ लिया की मेरे आका को कोई खतरा नहीं है तो अब्बास बाहर चले गए।

हज़रत हुसैन के पहुंचते ही वलीद खडा हो गया लेकिन वलीद के करीब बैठा मरवान बिन हकम बैठा रहा, हमको कहीं नहीं मिलता की आपस में सलाम दुआ मरवान से हुई या नहीं। हज़रत हुसैन ने मरवान से फ़रमाया तुम भी मौजूद हो तब तो सब गलत होगा, लेकिन वलीद ने चालाकी दिखाते हुए हुसैन का इस्तेकबाल किया और कहा मैं माफ़ी चाहता हूँ के हमने आपको तकलीफ दी। दमिश्क से हमारे हाकिम का ख़त आया है और वह ख़त पढने लगा “वलीद मैंने दमिश्क की हुकूमत संभाल ली है और मैं चाहता हूँ के तुम चाहे जैसे भी हो अब्दुल्लाह इब्ने उमर, अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर और खास तौर पर हज़रत हुसैन इब्ने अली से मेरी बैत लो और अगर वह इस पर राज़ी ना हो तो.....वलीद खामोश हो गया”, हज़रत हुसैन ने कहा आगे पढो। वलीद ने ख़त आगे बढाया और कहा आप खुद पढ ले, हज़रत हुसैन ने ख़त हाथ में लिया और पढने से पहले चारो तरफ़ देखा के कुछ सिपाही हाथो में तलवार लिए कुछ खाली हाथ और उन खाली हाथ के पीछे एक छोटी सी टुकड़ी और मरवान के चेहरे पे मुस्कान और वलीद के चेहरे पे खौफ़ साफ़ नज़र आ रहा था। हज़रत हुसैन ने ख़त को पढा और वलीद को वापस कर दिया। वलीद से कहा ए गवनीर मदीना मेरे जैसी शख़्सियत किसी खुफिया ठिकाने पर बैत नहीं कर सकते, तुम तमाम मदीने वालो को जमा करो और जो मुझे कहना होगा में उनके सामने कहूँगा। वलीद तो जैसे इसी मौके की तलाश में था फ़ौरन राज़ी हो गया और कहा आप जा सकते हैं। मरवान फ़ौरन खडा हो गया और वलीद से चीख कर बोल "ए बेवकूफ़ हुसैन अगर चले गए तो तेरे हाथ नहीं आएंगे आगे बढ और उनका सर काट दे"। यह सुनकर हज़रत हुसैन को तैश आ गया और उन्होंने तलवार निकाल कर कहा के हकम के बच्चे तू हमारे सर काटने का हुकुम देता है, तू क्या चाहता है मैं यज़ीद जैसे बद किरदार, शराब खोर की बैत कर लूं, ना मुमकिन है। क्युकी यह गुप्तगू हज़रत हुसैन की बुलंद

आवाज़ में थी तो तमाम बनी हाशिम महल में दाखिल हो गए, उनके हाथों में तलवारे देख कर वलीद फ़ौरन भाग गया. अब मरवान शर्मिदा होकर बैठ गया ।

हज़रत हुसैन वापस तो आ गए लेकिन वह ये समझ गए की अब मदीने में रहना दुस्त नहीं और हुकुम दिया की सफ़र की तैयारी शुरू की जाए ।

मैं यहां पर यह बताना ज़रूरी समझता हूँ के हज़रत हुसैन ने मरवान और वलीद को यहीं मारना मुनासिब क्यों नहीं समझा और यह बात यहीं पर ख़त्म क्यों नहीं करदी । लेकिन जब हमारा ज़ेहन हज़रत हुसैन की गुफ़्तगू पे जाता है, यानी ख़ुफ़िया ठिकाना, ख़ुफ़िया मुकाम तब समझ में आता है की शायद हज़रत हुसैन यज़ीद के कारनामे को मंज़रे आम पर लाना चाहते थे के दुनिया देखे की कौन हक़ पर है और कौन बातिल पर है ।

मदीने में तलातुम है, आज का दिन क्या पैग़ाम लेकर आया है घर वाले सफ़र की तैयारीयों में मशगूल हैं और हज़रत हुसैन सबसे मुलाकात करने में मशगूल हैं । मुहम्मद हनिफ़िया भी आते हैं और कहते हैं की आप क्यों जाना चाहते हैं । यहीं पर रहकर मुकाबला-ए-यज़ीद कीजिए । आप फरमाते हैं की खुदा की यही मरज़ी है और मैं नहीं चाहता की हमारी खातिर मदीना उजाड़ बने, यहां नाहक खून बहे और कब्रे नाना मुबारक पर कुछ आंच आए । हुसैन ने यह केह तो दिया लेकिन मैं बखूबी समझ रहा हूँ की या हुसैन आपके जाने के बाद मदीना यूं भी उजाड़ हो जाएगा । कब्रे हसन और कब्रे फात्मा ज़हेरा से रोने की आवाज़े आंगी कब्रे नबी (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की रौनक हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगी, मैं कितना सही सोच रहा था । दुनिया की हर बुजुर्ग की मज़ार जो ईमान वाले हैं, तमाम मौजूज़ात हुआ करते हैं, लेकिन मज़ारे नबी (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) पर कभी नहीं क्या वाकई नबी-ए-करीम (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) हुसैन की जुदाई के बाद खामोश हो गए, या कुछ और या हुसैन के साथ वह भी मक्के चले गए क्युकी रसूल

(सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने फरमाया था के मेरा हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ और मेरी किताब का मौजू भी यही है की “मैं हुसैन से हूँ” मेरे पहले कितने यह दावा कर चुके हैं और मेरे बाद ना जाने कितने करेंगे “मैं हुसैन से हूँ” ।

यह रात जैसे ढलने का नाम ही नहीं ले रही थी लेकिन आफताब को तो नमूदार होना ही था, रात ने बहुत कोशिश की वह खत्म ना हो लेकिन वह हार गई लेकिन इस रात हुसैन घर पे नहीं थे, पहले अपनी माँ की कब्र पर गए और बिलग बिलग कर रोने लगे जैसे बच्चा अपनी माँ से बिछड़ने के बाद रोता है वह बच्चा जो अपनी माँ से बिछड रहा हो उसे ना तो खाने की लालच ना खिलौने की लालच वगैरह वगैरह कोई भी नहीं रोक सकता, उसको सिर्फ अपनी माँ की गोद चाहिए होती है, हमको याद है जब फात्मा ज़हेरा की शहादत हुई तो हुसैन ७ बरस के थे रोये थे लेकिन इतना नहीं जितना आज क्युकी बाच्चे को मालूम था के अगर माँ नहीं तो कब्र तो है लेकिन आज कब्र भी छूट रही है. माँ की कब्र पर कुछ बाते करने के बाद अपने भाई की कब्र पर जाकर ऐसे चिपकते हैं जैसे गले लगा रहे हो और यह दिखाना चाह रहे हो, की हम अलग अलग नहीं बल्कि एक हैं यानी हसनैन है । काफी आंसू बहाने के बाद आपके कदम कब्रे मुबारक नाना जान की तरफ बढे और जैसे कब्र मुबारक दूर से नज़र आया आप बच्चे की तरह दौड़ कर कब्र से लिपट जाते हैं मुझे याद आ रहा है वह अली का घर रसूल-ए-खुद तशरीफ़ लाए हैं आवाज देती है और हुसैन दौड़ कर रसूल की टांगो पर लिपट जाते हैं और रसूल हुसैन को गोद में उठा लेते हैं लेकिन आज गोद नहीं है रसूल नहीं एक मज़ार हैं और तन्हा हुसैन रोते-रोते हुसैन की आँख लग जाती है और ख्वाब देखते हैं नाना जान तशरीफ़ लाए हैं और कहते हैं मेरे फरजंद जो वादा मैंने खुदा से किया है उसे पूरा करने का वक्त आ गया है और हुसैन की आँख खुल जाती है । हुसैन यह कहकर उठते हैं ए नाना जान मैं खुदा के दीन को बचाऊंगा और आपका किया वादा निभाऊंगा ।

२८ रज्जब ६० हिजरी की सुबह नमूदार हो चुकी है, लेकिन नबी-ए-करीम (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) का घराना पिछली रात से सोया नहीं, मदीने वालो का हुजूम घर के बाहर जमा हो रहा है, हुकूमत में बेचैनी है और वलीद कुछ चाह कर भी कुछ नहीं कर पा रहा है, काफिला जाने को तैयार हो रहा है और मदीना उजड़ने को बेचैन ।

मैं कैसे भूलूं कब्रे मादर पर बिलखना तेरा,

मैं कैसे भूलूं कब्रे नाना से लिपटना तेरा,

मैं कैसे भूलूं कब्रे भाई से चिपकना तेरा,

मैं कैसे भूलूं अपनों से बिछड़ना तेरा,

खुदा हाफिज़ हो नबी के घर वालो,

खुदा हाफिज़ हो खुदा के चाहने वालो,

खुदा हाफिज़ हो ईमान पर चलने वालो,

खुदा हाफिज़ हो मेरी गोद में पलने वालो,

गमे जुदाई मदीना ना कभी भूल पाएगा,

और वह एक राज़ नुसरत को यह बताएगा सिर्फ गमे हुसैन में बहते रहे मेरे आंसू,

रोज़े हशर सैलाबे अशक खुदा को वह दिखाएगा,

ए हुसैन तुम्हे मदीना ना भूल पाएगा ।

सैकड़ो मदीने वालो का हजूम मस्जिद-ए-नबुवी में मौजूद है क्युकी उसी हद में हज़रत हुसैन का घर भी है, सारे ऊट और घोड़े तैयार खड़े हैं, नम आँखों से मदीने वाले एक आखरी कोशिश कर रहे हैं की हुसैन मदीना ना छोड़े समझा रहे हैं, रसूल का वास्ता दे रहे हैं, कसमे दे रहे हैं,लेकिन साथ देने पर राज़ी नहीं हैं। दबी ज़बान में नतीजा यह आ रहा है की हालात को देखते हुए बैत कर लेना चाहिए। हुसैन यह जानते हैं की बैत करके अपनी जान तो बचाई जा सकती है, लेकिन इस्लाम मर जाएगा, लेकिन यह बात तो एक ईमान वाला ही समझ सकता है, इंसान नहीं। बेशक इस्लाम में हर हाल में अपनी जान बचाने का हुकुम दिया है, लेकिन जिसने इस्लाम को यह हुकुम दिया यकीनन वह खुदा होगा, लेकिन उसी खुदा ने इस्माइल की कुर्बानी पेश करने का भी हुकुम दिया था, लेकिन पैगम्बर की जान खुदा ने बचा ली क्युकी यहां पर पैगम्बर की जान और खुदा के हुकुम के बीच जंग थी, लेकिन हज़रत हुसैन जानते थे के हमारी जंग हमारी जान और इस्लाम के बीच में है और इस्लाम इन्शा-अल्लाह फ़तेह होगा।

इसी मिलने मिलाने में मगरिब से सूरज आधा आ गया और नमाज़े जोहर का वक्त हो गया। हज़रत हुसैन ने अपनी मदीने की आखरी नमाज़ अदा की और तमाम दुवाओ के बाद नमाज़ खत्म हुई नमाज़ में सैकड़ो लोग शरीक हुए और एक कोहराम बरपा हुआ इसी बीच वलीद ने अपना एक कासिद यज़ीद को रवाना किया और यह पैगाम भेजा की “या अमीरुल-मोमिनीन जैसा की आपने हुकुम दिया था की इन्कारे बैत पर हुसैन का सर काट लेना मैं अमल में नहीं कर पाया लेकिन मैंने हुसैन को इतना मजबूर कर दिया की वह आज मदीना छोड़कर मेरी सरहदों से बाहर जा रहे हैं अब आप जैसा समझे वैसा करें”। मैं यहां पर दावे से यह नहीं कह सकता की पहले कासिद ने मदीना छोड़ा या हुसैन ने क्युकी मैं इतने बुरे हालात में हुसैन को छोड़कर नहीं जा सकता इसलिए वलीद के महल में क्या हुआ मुझे नहीं पता।

हज़रत हुसैन ने अपनी वालिदा उम्मुल बनीन (सगी नहीं) से स्क्सत हुए तो उन्होंने एक अजीब काम किया। बनीन ने अपने चारो बेटो को आवाज़ दी जब चारो बेटे आ गए तो उन्होंने चारो बेटे हुसैन पर निछावर कर दिए। और अपने बेटो से कहा अगर तुम्हारी ज़िन्दगी में हमारे शहजादे पर कोई आंच आ गई तो मैं तुम्हे दूध नहीं बक्शुंगी। मैं रोज़े-हशर में जनाबे फात्मा ज़हेरा के सामने क्या मुह दिखाउंगी फिर उन्होंने अब्बास का शाना पकड़ा और कहा मैं अपना शहजादा तुम्हारे हवाले कर रही हूँ और अगर इन्हें कुछ हो गया और तुम बच गए तो वापस मत आना क्युकी शायद अब वह वक्त आ रहा है जिसके लिए तुम पैदा हुए। हुसैन स्क्सत हुए और अपनी नानी उम्मे सलमा (सगी नहीं) के पास गए और जाने की इजाज़त मांगी। उम्मे सलमा ने फरमाया की मैंने रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) से तुम्हारी शहादत के बारे में सुना था लेकिन बेटा मुझे कैसे मालूम पड़ेगा के तुम शहीद हो गए। हज़रत हुसैन ने एक मुट्टी मिटटी उनको दी और कहा नानी जान जिस दिन यह मिटटी खून की तरह लाल हो जाए तो समझ लीजिएगा के आपका नवासा शहीद हो गया है।

अब हज़रत हुसैन अपनी बेटी फात्मा सुगरा से मिलते हैं जो उस वक्त बीमार थी और साथ नहीं जा रही थी तमाम ज़िद के बाद भी वह स्कने को राज़ी नहीं थी लेकिन हज़रत हुसैन ने यह कह कर खड़े हो गए के खुदा का हुकुम नहीं है के तुम साथ जाओ।

तमाम शहजादियाँ मेहमील में सवार हो चुकी हैं घोड़ो के तस्मे बन चुके हैं और ठीक इसी वक्त सूरज का ढलना शुरू हो चूका है लेकिन हुसैन एक बार फिर नाना के रोज़े पर चले जाते हैं और बहुत गिरया करते हैं एक नाना और नावासे की जुदाई एक कब्र में आराम फरमा है और दूसरा हयात है इतनी दर्द नाक थी की इसको लफ़्ज़ों में बताना मुमकिन नहीं है हुसैन घोड़े पर बैठते हैं और खुदा हाफ़िज़ के बाद काफ़िला चल देता है। अभी तो काफ़िले में ५०० अफराद (मर्द) मौजूद

हैं अभी कुछ ही दूर काफिला गया था की रूक गया किसी ने खबर दी हुसैन आपकी बेटी सुगरा पीछे आ रही है हुसैन रूकते हैं और अपनी बेटी से आने का सबब पूछते हैं सुगरा जवाब देती हैं बाबा मैं अकेले टिकने को राज़ी हूँ, लेकिन मेरा छोटा भाई अलीअसगर (चन्द दिन का बच्चा) हुसैन की फ़ौज का सबसे छोटा सिपाही मुझे दे दीजिये मैं उसके साथ खुशी खुशी रह लूंगी बच्चा फात्मा सुगरा की गोद में आ चुका है और वह उसे सीने से चिपकाए आगे बढ़ती है। रब्बाब अलीअसगर की वालिदा बेचैन कैसे अपना छोटा बच्चा छोड़ दू। अजीब कश्मा-कश का माहौल हुसैन परेशान एक बाप अपनी बेटी से अपना बेटा लेने की कोशिश कर रहा है। लेकिन बच्चा बाप की गोद में आने से इंकार कर रहा है। इसी दरमियान जनाबे ज़ैनब, हज़रत अब्बास सब कोशिश कर रहे हैं लेकिन सबकी कोशिशें बेकार हो गई बच्चा ऐसा चिपका सुगरा के सीने से जैसे माँ के सीने से चिपक जाया करते हैं। यानी जितनी मुहब्बत सुगरा के सीने में छुपी हुई है उतनी ही मुहब्बत उस नन्हे बच्चे के दिल में भी है। इसलिए एक दुसरे को छोड़ना नहीं चाहते। लेकिन अब सवाल यह है की अब काफिला बढ़े तो कैसे बढ़े, क्युकी माँ रब्बाब अपने बच्चे को कैसे छोड़ दे, जो की अभी माँ का दूध पीता है और सुगरा देने को राज़ी नहीं मशियात भी खामोश हवा भी रूकी हुई लेकिन सूरज डूबता जा रहा है, शायद वह भाई बहन की जुदाई या माँ बेटे की जुदाई देखना नहीं चाहता लेकिन मैं कहूँगा “ए सूरज तू तो बहुत बड़ा है, तू ना जाने कितने बरसो से जल रहा है, लेकिन तू यह नहीं देख सकता। तू कबतक मुह छुपाएगा तुझे तो ना जाने अभी क्या-क्या देखना पड़ेगा”।

तमाम कोशीशों के बाद भी जब बच्चा बहन से जुदा नहीं हुआ तो हज़रत हुसैन आगे बढ़ते हैं और ना जाने बच्चे के कान में क्या कहते हैं बच्चा बाप को देखता है और तड़प कर बाप की गोद में आ जाता है हुसैन के चेहरे पर मुसकुराहट है और हुसैन बच्चे को रब्बाब की गोद में दे देते हैं।

मैं कहूँगा ए हज़रत हुसैन आज आपके चेहरे पर मुसकुराहट है लेकिन एक दिन ऐसा आएगा की आपका चेहरा मुबारक इसी के खून से लाल हो जाएगा और आप तब भी बच्चे को माँ की गोद में देंगे लेकिन आंसुओ के साथ ।

मैं नहीं समझ पाया की हज़रत हुसैन ने बच्चे से क्या कहा और हालात ऐसे नहीं थे की मैं पूछता ए हज़रत हुसैन आपने बच्चे से क्या कहा । काफिला मदीने की सरहदों से पार हो चुका हजारो मदीने वाले गम में डूबे अलविदा कह रहे हैं धूल का गुबार उड़ रहा है और इसी बीच सूरज मगरिब की तरफ झुका जा रहा है धूल, गुबार यह बता रहा है, जैसे कोई काफिला जा रहा हो । अपने सीने में एक दर्द नाक दास्तान समेटे हुए मैं अभी सरहद पर ही रुक गया हूँ और मैं कभी उड़ते हुए गुबार को देखता हूँ और कभी रोते हुए गमज़दा मदीने वालो को देखता हूँ और अचानक मुझे मगरिब से डूबता हुआ सूरज नज़र आने लगता है । मुझे कुछ याद आ रहा है, के एक वह वक्त था जब नबी-ए-करीम (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) अपने तमाम साथियों के साथ मक्के से हिजरत करके मदीने आ रहे थे, जैसे कोई सूरज नज़र आ रहा हो मदीने वालो के चेहरे पर एक खुशी एक जज्बा एक नई उमंग है के यह आता हुआ गुबार हमारे लिए पैगामे खुदा ला रहा है लेकिन यह वक्त ६० साल पहले का है जब नबी-ए-करीम (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) मदीना आ रहे थे मक्के वालो से जान बचाकर । नबी-ए-करीम (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) मदीने आए लेकिन ६० बरस के बाद मदीने वालो से जान बचाकर आले रसूल मक्का जा रहे हैं शायद आसमान में चमकते हुए सूरज के लिए निकल कर डूबने का ही वक्त था । क्युकी तब सूरज निकल रहा था और आज सूरज डूब रहा है ।

आज मदीने के किसी घर में चूलहा नहीं जला और ना जाने क्यों रोज़ा-ए-मुबारक रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) पर रौशन चिराग बार-बार बुझ रहा था शायद यह रात मदीने की

शामे गरीबा है. वलीद की फ़ौज से डर कर कोई कुछ कहने को राज़ी नहीं मदीना आज वीरान हो गया और एक नई सुबह के इंतज़ार में सो गया ।

देखो देखो अल्लाह वाले राह कुर्बानी चले,
चाहे उनकी जान जाए चाहे उनका घर जले,
चन्द बच्चे कुछ ज़ईफ़ और थोड़े से नौजवान,
साथ कुछ पर्दा नशीन बस ख़त्म हुसैनी कारवाँ,
आगे है शोरे अली और हाथ में उनके अलम,
है अल्लाह-अकबर के नारे कर्बला को चल दिए,
देखो देखो अल्लाह वाले रहे कुर्बानी चले,
चाहे उनकी जान जाए चाहे उके घर जले,
रौज़ा छूटा नाना का, भाई का छूटा मज़ार,
करती रहेगी मादरे कब्र तेरा इंतज़ार,
रोती हैं मदीने की गलियाँ अब तेरी याद में,
सबको रोता छोड़कर तुम कर्बला को चल दिए,
तुम सवार नाना के ऊपर हमको अब भी याद है,

आए थे जन्नत से कपडे वह भी हमको याद है,
कह रहा है घर का कोना-कोना एक ही सदा,
सूना हमको कर के तुम कर्बला को चल दिए,
लुट जाएगा काफिला यह कूफे की राह में,
बीबियों के सर खुले होंगे शाम के बाज़ार में,
होंगे नेज़े पर कटे सर आल और अन्सार के,
जानते थे सब हुसैन पर कर्बला को चल दिए,
इस्लाम रहेगा आभारी, ए हुसैन इब्ने अली,
बच गया नाना का दीन, ए हुसैन इब्ने अली,
हर बरस नुसरत सुनाएगा वह हुसैनी दास्तान,
छोड़ कर क्यों मदीना कर्बला को चल दिए,
देखो देखो अल्लाह वाले रहे कुर्बानी चले,
चाहे उनकी जान जाए चाहे उनके घर जले ।

मैं हुसैनी काफिले को सफ़र में ही छोड़कर दमिश्क चला गया ।

सजा हुआ चमकता हुआ यज़ीदी महल यह ऐलान कर रहा था जैसे किसी शहजादे को बादशाहत मिली हो और उसका जशन हो । मैं तो सोच रहा था के शायद महल जनाबे माविया का सोग मना रहा होगा, क्युकी अभी तो एक ही हफ़ता हुआ है, लेकिन यहां कोई अफ़सोस नहीं है, सजी हुई कनिज़े, नए कपड़ो में गुलाम, इतर से मुअत्तर महल, चौकस दरबान । यह सब अपने बादशाह की शान बयान कर रहे थे । बड़े अफ़सोस के साथ कहना पड़ रहा है के मैं यज़ीद को बादशाहे इस्लाम कहूँ या खलीफ़ा-ए-इस्लाम कहूँ । मैंने पिछले खलीफ़ाओ की सादगी देखि है, टूटे हुए मिम्बर देखे, फटे हुए कपडे देखे, सूखे टुकडो पर गुजारा देखा, इस्लामी जंगो में हुए ज़ख्मो के निशान देखे । ठाट बाट तो पहली बार देख रहा हूँ । हो सकता है के यह दिखावी ठाट-बाट दुसरे मज्हबो को मुतासिर करने के लिए हो की हुकूमते इस्लाम गरीब नहीं हैं, नंगी और लाचार नहीं है, हो सकता है के महल के अन्दर का माहौल इस्लामिक माहौल हो । मैं डरा हुआ धीरे से महल में दाखिल हो गया शराब बना हौज़ जिसमे शराब भरी हुई मोटे मोटे कुत्ते, चांदी और सोने से बना हुआ एक सिहासन सुर्ख कपड़ो में बैठा हुआ एक इंसान नशे में चूर मौजूद पाया, शायद यही यज़ीद है । मैं तो आया था जनाबे माविया की खिराजे अकीदत के लिए, लेकिन मैंने यहां इस्लाम को ही मुर्दा पाया । मैंने बहुत कोशिश की के मैं कब्रे माविया का पता लगाऊ लेकिन कोई बताने को राज़ी नहीं हुआ खैर शायद यह हज़रत आएशा का बदला होगा ।

इसी बीच कासिद वलीद का ख़त लेकर आता है ख़त पढने के बाद यज़ीद एक मीटिंग बुलाता है ।

मीटिंग में यह तय पाया के हज़रत हुसैन को मक्के में हज के दौरान धोके से कतल कर दो लाखो हाजियों में किसने कतल किया यह पता लगाना मुश्किल होगा ।

यहां पर एक बात तो साफ़ हो गई के यज़ीद हज़रत हुसैन से खुलकर लड़ना नहीं चाहता था और वह हुसैन के कतल को सिर्फ़ एक हादसा बताना चाहता था साजिश नहीं ।

३ शबाबान ६० हिजरी आज हज़रत हुसैन ५७ बरस के हो गए और इत्तेफाक समझिए के वह आज के ही दिन मक्के की सरहद में दाखिल हुए अजीब बात है. रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) जब मदीने में दाखिल हुए तो आपकी पैदाइश का दिन (नई ज़िन्दगी) और हज़रत हुसैन मक्के में तो यह पैदाइश का दिन और नई ज़िन्दगी ।

आपका काफ़िला शोएबे-अबू तालिब में खेमा ज़न हुआ मुसल-सल ४ महीने हुसैन यहीं रहे.

हज़रत हुसैन उस शख़्सियत का नाम है, जो पैदा तो हुए फात्मा ज़हेरा की शिकन से और आपके वालिद अली इब्ने अबू तालिब थे । लेकिन सरवरे कायनात रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने कई हदीसों में फ़रमाया “ या हुसैनो मिन-नि-व-अना-मिनल-हुसैन ” यानी हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ । यह बात तो समझ में आती है के एक नवासा नाना से हो सकता है । लेकिन एक नाना नवासे से नहीं हो सकता तो यानी बात साफ़ है की यहां पर हुसैन का मतलब नबी-ए-करीम (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की निगाहों में कुछ और था, मेरे मतलब से हुसैन का मतलब “ इस्लाम ” से था । और इमन से था और क्यूकी अगर हुसैन की जगह इस्लाम रख कर पढे तो हो जाएगा “ इस्लामो-मिन-नि-व-अना-मिनल-इस्लाम ” यानी इस्लाम मुझसे है और मैं इस्लाम से हूँ । यह बात तो दुनिया पर ज़ाहिर है की पैदा करने वाले से बचाने वाले का स्तबा ज्यादा होता है शायद इसी लिए हज़रत इब्राहीम ने अपने पालने वाले चचा को अपना बाप कहा और कुरआन भी इसका शाहिद है और शायद इसी लिए हज़रत इसा (अलैहे सलाम) ने अल्लाह को अपना बाप कहा और शायद इसी लिए अल्लाह ने रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को हुसैन का बाप कहा (आले इमरान की आयत नंबर.६१) और शायद मेरे खयाल से रसूल ने हुसैन को

अपना बाप कहा क्युकी इस्लाम की नाव बनी उमय्या के हाथों में आकर डूबने लगी थी और हुसैन ने उसे बचा लिया यानी इस्लाम बचा लिया हमारी निगाहों में हमारे रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) खुदाई पैगाम लेकर आने वाले इस्लाम को मुकम्मल करने वाले और बनी आदम को पैगम्बरी से आजाद कराने वाले खुदाई नूर का हिस्सा थे । लेकिन हुसैन कयामत तक मुकम्मल इस्लाम को खेने वाले बने । रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने हदीस में फरमाया की हमारे एहले बैत नूह के उस सफिने (नाव) की तरह हैं की जिसपे जो सवार हुआ वह निजात पायेगा और जिसने उसे छोड़ दिया वह हलाकत में होगा ।

हमने कुरआन को यह कहते सूना की अगर मेरी आयत किसी पहाड पर नाज़िल होती तो वह चकना चूर हो जाता वह अपनी जगह से खिसक जाता एक अजीब मसला है, कुरआन दावा तो कर रहा है अपनी आयातों की मज़बूती का, उसकी बुलंदियों का, उसकी अफज़लियतों का, लेकिन तमाम यहदी, नसरानी खुद रसूल की हयाती में इन्ही आयातों का मज़ाक उडाते रहे उन्हें झूठा कहते रहे (माज़-अल्लाह) लेकिन न तो उनकी ज़बाने सड़ी और न तो उनको मौत आई । लेकिन जब हम एक किनारे दूर खड़े होकर नसरानियो और मुसलमानों के बीच पहले मुभाईले (सुलाह) को देख रहे थे, दूर से रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) अपने नवासो का हाथ पकड़कर और उनके पीछे हज़रत अली और आपकी सहाब जादी फात्मा ज़हेरा आ रहे थे । ताकि मुभाईला किया जाए । अभी तो सिर्फ आ रहे हैं मुभाइला (सुलाह) शुरू नहीं हुआ, छुपे हुए नसरानी यह कहते हुए भाग गए की मैं वह चेहरे देख रहा हूँ की अगर यह इशारा कर दें तो पहाड चकना चूर हो जाए, अपनी जगह से खिसक जाए वगैरह-वगैराह । अजीब माजरा है दावा-ए-कुरआन मुकम्मल हो रहा है, एहले बैत पर, हज़रत हुसैन पर, तो अगर इतना बड़ा दावा सुनकर रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) यह फरमाए “ मैं हुसैन से हूँ ” तो क्या गलत है और बात को मैं साफ करता हूँ की यही नसरानी नबी-ए-करीम (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के सामने

मुभाइले की शर्त रख कर चले गए तब उन्होंने रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) का चेहरा नहीं देखा था ? । पीछे फात्मा ज़हेरा परदे में थी और हज़रत अली को जंगे बदर और जंगे ओहद में देख ही चुके थे यानी वह भी कोई नया चेहरा नहीं था यानी अब सिर्फ हज़रत हसन और हज़रत हुसैन के चेहरे देखे और बिना जंग के इस्लाम फतेह हुआ और नसरानियो की बहुत बड़ी हार मानी गई । मुभाइले से भाग जाना रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने एक हदीस में फरमाया की देखो हसन और हुसैन मेरे दो फरजंद हैं और तुम इनका साथ कभी न छोड़ना चाहे उस वक्त बैठे हो या खड़े हो । जिसने इनको तकलीफे दी उसने मुझे तकलीफे दी और जिसने मुझे तकलीफे दी उसने खुदा को तकलीफ दी । और खुदा को तकलीफ देने वाला जहान्नुमी है और आगे कहा जिसने इन्हें दोस्त रखा उसने मुझे दोस्त रखा और जिसने मुझे दोस्त रखा उसने खुदा को दोस्त रखा जो की जन्नती हैं. यानी यहां पर हुसैन और अल्लाह के बीच रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) आ रहे हैं चाहे दुश्मनी में हो, चाहे दोस्ती में हो । अब अगर मैं यह कहूँ के खुदा तक पहुंचने के लिए हुसैन को भी ज़रियाए रसूल अपनाना होगा और रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को अल्लाह तक पहुंचने के लिए ज़रियाए हुसैन बनाना होगा । तो अगर अब रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) कहें की हुसैन मुझसे हैं और मैं हुसैन से हूँ तो यह बात बिलकुल दुरूस्त है और समझ में आती है । ऊपर के बयान में रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने यह फरमाया की चाहे यह बैठे हो चाहे खड़े अब इसको समझने के लिए बैठने का अलफ़ाज़ हज़रत हसन की तरफ जोड़े और खड़े का अलफ़ाज़ हज़रत हुसैन की तरफ जोड़े तो कहना गलत नहीं होगा यहां पर बैठने का मतलब मुहाइदा है, और खड़े होने का मतलब जंग ।

हज़रत हुसैन की पैदाइश से कुछ दिन पहले उम्मुल फज़ल बीनते हारिस ने एक ख्वाब देखा और उन्होंने अपना ख्वाब रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) से बताया के रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) मैंने ख्वाब में देखा की आपके जिस्म का एक हिस्सा जुदा होकर

मेरी गोद में आ गिरा इसका क्या मतलब है । रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने फरमाया अनकरीब मेरी बेटी के यहां एक बच्चे की विलादत होगी और वह बच्चा तुम्हारी गोद में परवरिश पाएगा । वह घडी ३ शाबान ४ हिजरी बरोज़ जुमा वक्त-ए-फज़र आ गई जब हुसैन दुनिया में तशरीफ लाए तो उस वक्त रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) मस्जिद में थे किसी इंसान के खबर देने से पहले फ़रिश्ते जिब्राइल ने आपको मुबारक बाद दी और यह कहा की खुदा ने इस बच्चे का नाम शब्बीर रखा है, तो रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने फ़रमाया की मेरी ज़बान अरबी है । तो फ़रिश्ते जिब्राइल ने कहा आप इसका नाम हुसैन रखा । रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) अपनी बेटी के घर तशरीफ लाते हैं और बाहर से ही आवाज़ देते हैं लाओ मेरे बेटे हुसैन को लाओ जनाबे फिज्ज़ा आती हैं और कहती है कौन हुसैन ? । यहां तो सिर्फ हसन है रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने फ़रमाया जो बच्चा अभी अभी तशरीफ लाया है । यह सुनते ही फिज्ज़ा दौड़ी दौड़ी हज़रत फात्मा के पास जाती है, और कहती है बीबी मुबारक हो आपके छोटे शहजादे का नाम रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने हुसैन रखा है । जनाबे फात्मा ने फ़रमाया यह कहो की अल्लाह ने रखा है । क्यूकी बाबा जान का कोई भी गैबी पैगाम, पैगाम-ए-इलाही होता है खैर बच्चे को गुसुल के बाद सफ़ेद कपडे में लपेट कर रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को दिया गया, रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की गोद में आते ही बच्चे ने आंखे खोल दी और छोटे छोटे मासूम होटो ने जुम्बिश की, लेकिन मैं समझ नहीं पाया, मैं बड़े ताज्जुब में हूँ की जैसे यह बच्चा कुछ कह रहा हो लेकिन अचानक मेरे ज़ेहन ने कहा की यह एक पैदाईशी बच्चे की हरकत है और कुछ नहीं लेकिन रसूल मुस्कुराए और कहा वालेकुम अस-सलाम-व-रहमतुल्ला-हे-बर्कातह । यह मुस्कुराहट शायद मैं दुनिया के किसी भी बच्चे में नहीं देख पाऊ, लेकिन हाय अफ़सोस की मुझे एक मुस्कुराहट और देखना है । रसूल-ए-

खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने बच्चे का बोसा लिया और अपनी ज़बान चुसाना शुरू कर दी नबी के लुआबे दहेन से हुसैन का पेट भर गया और फिर आपके होट हिले लेकिन अबकी मैं समझ गया के यह खुदा का शुकर अदा कर रहा है। लेकिन हाय अफसोस इसी बच्चे को एक दिन खुदा का शुकर अदा करता देखूंगा लेकिन उस दिन पेट ३ रोज़ का भूखा और प्यासा होगा नबी की गोद नहीं तमाम तीरों का बिछौना होगा सफ़ेद चादर नहीं बोसीदा फटे कपडे होंगे लेकिन शुकर खुदा का ही होगा।

मैं कोई नजूमी (ज्योतिष) नहीं हूँ की मैंने कोई पेशीनगोई (भविष वाणी) कर दी, मैंने वही कहा जो रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के मुह मुबारक से सुना।

रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की आँखों में आंसू बह रहे हैं रिश्तेदार परेशान है, खुद हज़रत अली परेशान, हुजरे में फात्मा ज़हेर परेशान, अली से बर्दास्त नहीं हुआ और पुछा या-रसूल-अल्लाह (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) मेरी जान आप पर से निछावर हो क्या मेरे बच्चे में कोई कमी है ?! रसूल तड़प गए और कहा नहीं-नहीं-नहीं और बोले अभी अभी एक ऐसा फ़रिश्ता जो इसके पहले हमने कभी नहीं देखा था कुछ कह गया “ए रसूल आपका यह हुसैन एक दिन ३ दिन का भूखा प्यासा नैनवा नाम की जगह जो की फुरात के किनारे बसा है अपने तमाम साथियों के साथ आपके उम्मतियों के हाथो कतल कर दिया जाएगा”।

यह सुनकर खुशी का माहौल गम में तब्दील हो गया अब नबी (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के साथ साथ नबी (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की आल भी रो रही है.

मैं सोच रहा हूँ की मेरी जमात के होते हुए क्या यह मुमकिन हो सकता है. मेरे दिल ने कहा हरगिज़ नहीं, जब तक मैं जिंदा हूँ रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) का फरजंद कतल नहीं हो सकता और मैं मुतमइन हो कर रसूल-ए-खुदा को दिलासा देने लगा। लेकिन हाय

अफसोस..... । मदीने वालो की मुबारक बाद के साथ साथ फरिशतो का भी मुबारक बाद देने का तांता लग गया, जिन्नात तो थे ही मैंने कहीं पढा है या किसी आलिम के मुह से सुना है के जिन्नातो के सरदार जिनका नाम जनाब जाफर साहब है (लेकिन इत्तेफाकन मेरा लकब भी जाफर है) ने रसूल-ए-खुदा से ख्वाहिश की ए रसूल-ए-खुदा, की मैं आपके फरजंद हज़रत हुसैन को एक दिन के लिए अपनी हुकूमत में ले जाना चाहता हूँ । यह तो ज़ाहिर है की कोई जिन्नात या कोई इंसान किसी बच्चे को इस तरह देखे, मलैका, फ़रिशते उसकी ताजीम कर रहे हों और खुदा उसका नाम रख रहा हो और खुदा के प्यारे नबी अपना फरजंद बता रहे हों तो उसे हर कोई अपना मेहमान बनाना चाहेगा ।

लेकिन रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) यह कहकर मुस्कराए, की हमारा यह फरजंद तो नहीं इसके ९ वि पीढी का बच्चा तुम्हारी हुकूमत में क़यामत तक मेहमान रहेगा, बेशक रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने सही कहा । क्यूकी यह नबी ऐसे ही हैं जो थोडा, एक, दो, वगैरह-वगैरह नहीं देते हैं, यह तो ऐसे देते हैं की फिर मांगने की ज़रूरत नहीं पडती । मैंने तो एक दिन के लिए मांगा था लेकिन मुझे तो क़यामत तक के लिए मेहमान नवाजी का मौका मिल गया । काश अल्लाह सब की किस्मत इन्ही सरदारो जिन्नात की तरह कर दे आमीन, सुम्मा-आमीन ।

यह बात कितनी सच है के पूरी दुनिया तस्लीम कर रही है की हुसैन की ९ वि पीढी की एक शख्सियत हयात है और इसी दुनिया के किसी हिस्से में रह रही है चाहे वह ग्रीन-लैंड हो या बर्मुडा ट्राइंगल (कोहे-काफ) । लेकिन तमाम मुसलमानों के बड़े-बड़े आलिम और तमाम दुनिया के बड़े बड़े साइंसदां यह कह चुके हैं और कह रहे हैं की बरमूडा ट्रायंगल वह जगह है जहां कोई खुदाई ताकत रहती है जहां का पानी हरा है जहां ऐसी दरिया बहती है जो हीर और मोती उगलती है लेकिन दुनिया के किसी भी इंसान का वहां तक पहुंचना मुमकिन नहीं । तो मैं यहां पे ग्रीन लैंड

के दावे को गलत साबित करता हूँ क्यूकी यहां पर कोई भी खुदाई मौजिज़ा मौजूद नहीं है, यहां पर हम आपको कुदरत और मौजिज़े के बीच का फर्क बताने जा रहा हूँ। कुदरत वह है की जो साइंस के कानून पर खरी उतरती है यानी जो लोह-मेहफूज़ (खुदाई किताब) पर दर्ज है। जब वह होते हैं तो कुदरत कहलाती है, मसलन सूरज का निकलना और डूबना, चाँद का बड़ा होना निकलना और छुप जाना वगैरह-वगैरह कुदरत है और सूरज का पलट कर निकलना, चाँद के दो टुकड़े होना यह मौजिज़ा है।

चाँद के दो टुकड़े होना कुदरत नहीं। यानी जो काम ना मुमकिन हो साइंस के तराजू पर खरा ना उतरता हो (आज तक के इल्म के हिसाब से) वह मौजिज़ा है। तो हम ऊपर कह चुके हैं खुदाई मौजिज़े यानी जहां साइंस का कानून है भी और नहीं भी। वह है जज़ीरा-ए-बर्मुडा (कोहे-काफ़) जिन्नातो की हुकूमत और वहां इंसान रह रहा है और साइंस का दावा है वहां इंसान नहीं पहुंच सकता लेकिन यहां पर हमारे रसूल का वादा यानी मौजिज़ा-ए-रसूल है।

हज़रत ईसा (अलैहे सलाम) ने अन्धो को आंखे दी, मुर्दों को जिंदा किया, लंगडो को पैर बक्शे इसाई इन मौजिज़ात को बहुत फक्र से बताते हैं और मैं भी तस्लीम करता हूँ, बेशक इसा (अलैहे सलाम) बड़े पैगम्बरों में से एक है और उनकी वालिदा जनाबे मरियम (अलैहे सलाम) तमाम बेहतरीन औरतों में से एक हैं, लेकिन हज़रत ईसा ने उन्ही को रौशनी दी जिनकी किस्मत में रौशनी थी किसी वजह से रौशनी चली गई हो जैसे बुढापा, बीमारी, वगैरह-वगैरह। उन्ही को टांगे दी जिनकी किस्मत में टांगे थी। किसी वजह से बहुत लोगो की टांगे काम नहीं करती थी जैसे कोई हादसा हो गया, पोलियो। उन्ही को जिंदा किया जो किसी हादसे की वजह से मर गए थे, जैसे किसी का क़त्ल हो गया, किसी की हादसे में मौत हो गई। लेकिन हमारे नबी (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने उनको रौशनी दी जो पैदाइशी अंधे थे और जिनकी किस्मत में रौशनी नहीं थी।

हज़रत हुसैन ने उनको बेटे दिए जिनकी किस्मत में लोहे-मेहफूज़ में बेटे नहीं लिखे थे, यह है हमारे मौजूज़ाते मुहम्मदी और आल-ए-मुहम्मद ।

जब हज़रत हुसैन की पैदाइश हो गई तो तमाम लोगो ने मुबारक बाद दी और फरिशतो का भी सिलसिला शुरू हो गया अब उनमें वह भी फरिशते शरीक हो गए जो खुदाई अज़ाब में मुब्तिला थे । यानी वह इस इंतज़ार में थे की कोई ऐसा शक्स पैदा हो की जिसका वास्ता खुदा ना टाल सके और उसकी तौबा कुबूल हो सके ।

ऐ फरिशतो जब हज़रत इब्राहीम के घर हज़रत इस्माइल पैदा हुए तो तुम क्यों नहीं आए, जिनकी जान के बदले जन्नत से दुम्बा आ गया, तब भी तुम उनकी एहमियत नहीं समझ पाए, जिनकी एडियों से ज़म-ज़म आ गया तब भी तुम उनकी एहमियत नहीं समझ पाए, बिना बाप के हज़रत ईसा पैदा हो गए फिर भी तुम उनकी एहमियत नहीं समझ पाए अरे रसूल-ए-खुदा पैदा हो गए तब भी तुम नहीं समझ पाए, हज़रत अली काबे में पैदा हो गए तब भी तुम नहीं आए, तुम सिर्फ हुसैन के गेहवारे (घर का दुवार) पर क्यों आए हो । तो फरिशते कहेंगे अरे नादान नुसरत जाफ़र तुम इतना भी नहीं समझ पाए की सबसे पहले खुदा के ज़रिए खल्क हुआ नूर यह कह रहा है की “मैं हुसैन से हूँ” , तो हुए ना हुसैन सबसे अफज़ल । अरे नादान नुसरत जाफ़र क्या तुमने नहीं देखा (पढा) की एक अदना सी चींटी एक नबी (सुलेमान(अलैहे सलाम) के हाथ पर आकर कहे की मैं आपसे बुलंद हूँ । यानी नबी के हाथ पे आने से अदना से अदना चीज़ भी बुलंद हो जाती है । तो अब हुसैन रसूल से बुलंद हुए तो मैंने क्या गलत कहा, क्या मैं बिदत कर गया हरगिज़ नहीं।

फरिशते दर-दाइल किसी खुदाई ना फरमानी की वजह से अपनी तमाम नूरानी ताकतों को खो चुके थे । उन्होंने रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) से अर्ज़ किया के या रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) मैं हजारो बरस से खुदाई अज़ाब में मुब्तिला हूँ और मेरी

तौबा कुबूल नहीं हो रही है। रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने हुसैन को अपने दोनों हाथों पे बुलंद किया और कहा “ऐ परवरदिगार तुझे वास्ता है उस हक का जो तेरा हुसैन पर है, हुसैन के ज़द मुहम्मद, इब्राहीम, इसहाक, युसूफ, और याकूब पर है तुझे वास्ता है उस हक का जो हुसैन का तुझ पे है फरिशते दर-दाइल के तमाम गुन्हा माफ़ करदें ” और फरिशता आजाब से आज़ाद हुआ और खुदा का शुक्र करता हुआ चला गया।

फरिशते सल-साईल जो किसी कोताही की वजह से अज़ाब में मुब्तिला था रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की इस तरह की दुआ से आज़ाद हुआ। फरिशते फितरूस का वाकिया तो आम है। (इसके लिए हमारी किताब सेराजन मुनीर देखे)।

३ शाबान ४ हिजरी एक ऐसा दिन था जो शायद कभी इससे पहले ना गुजरा हो। नबी (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के पास एक-एक कर के फरिशते मुबारक बाद करने आते गए यहां तक की अब आसमान में एक भी फरिशता नहीं बचा। शायद इससे पहले इतनी बड़ी मुबारक बाद किसी को नहीं मिली थी। हज़रत आदम जो पहले इंसान थे उनकी पैदाइश पे मुबारक बाद की जगह खल्फिशार हुआ। हज़रत नूह की पैदाइश के वक्त भी फरिशतो को इल्म नहीं की इतने बड़े नबी हैं। तो मुबारक बाद कब देते और मान भी ले के अगर फरिशतो को बड़े नबी होने का इल्म भी था तो मुबारक बाद क्यों देते, क्युकी यह सानिये आदम (दूसरा आदम) बन्ने वाले थे और आदम से तो दुश्मनी थी।

हज़रत सुलेमान को दुनिया की सबसे बड़ी हुकूमत मिली लेकिन किसी फरिशते ने उनको मुबारक बाद नहीं दी बल्कि मैंने देखा की एक हुदूद (परिदा) उनको मुबारक बाद दे रहा है। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के ज़द हज़रत इस्माइल की वजह से ज़म-ज़म

नमूदार हुआ और जो आबे हयात (लापता) के बाद दुनिया का सबसे बेहतरीन पानी है कोई मुबारक बाद नहीं बल्कि हज़रत इब्राहीम को मुबारक बाद दी जा रही है, की ऐ इब्राहीम हम तुम्हारे बेटे इस्माइल में सबसे बेहतरीन नबी भेजेंगे तुम्हे मुबारक हो, यानी फरिशतो की मुबारक बाद अल्लाह की मुबारक बाद सिर्फ मुहम्मद (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) और आले मुहम्मद (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के लिए है, बार-बार यह ज़िक्र आता है, जैसे हज़रत मूसा के वली जनाब हास्रन थे और उनके बेटे शब्बर और शब्बीर थे, उन्ही के नाम पर हसनैन का नाम पडा. लेकिन हज़रत हास्रन को कोई मुबारक बाद नहीं मिली। यहां तक हास्रन की ही नसल में १२ पीढिया आई जिन्हों ने यहदी मज़हब को आगे बढ़ाया और वह मूसा के बाद खलीफा हुए, लेकिन उस वक्त के कुछ लोगो ने उनको खलीफा नहीं माना और अपने को खुद खलीफा चुन लिए, तो उसका अंजाम क्या हुआ। मूसा के बाद ईसा तक जितने भी पैगम्बर आए क़त्ल व गारत हो गए। तौरैत इतनी ज्यादा बिगाड़ दी गई की इंजील ने उसको निगल लिया, यहां तक हज़रत ईसा को भी सूली पर चढा दिया गया (भले वह बचा लिए गए), इत्तेफाक से हज़रत ईसा के भी १२ हवारी थे, सिर्फ एक हवारी की दगा की वजह से ईसा सूली चढ गए और जब ईसा आसमान पर उठा लिए गए तो सही मज़हब मानने वाले कुल ११ ही थे। हज़रत ईसा के ऊपर ज़ुल्म के बाद खुदा ने बनी इसराइल पर नबियों का सिलसिला ही बंद कर दिया और नबूवत का सूख हज़रत इस्माइल की मुस्लिम पीढी की तरफ मोड़ दिया हज़रत इस्माइल के बाद उनकी नस्ल में मुहम्मद (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ही तन्हा नबी हुए और नबूवत का सिलसिला बंद हो गया। यानी खुदा जानता था की ईमान किसपर मुकम्मल होने वाला है और मुबारक बाद उन्ही के वास्ते है। ऐ हज़रत ईसा मुझे माफ़ कीजिएगा, आपके एक हवारी ने नबूवत का सूख ही मोड़ दिया और यहदी मज़हब को खत्म कर दिया, ईसाईयत को गुमराह कर दिया, इंजील आसमान पर वापस हो गई, एक हवारी की दगा की वजह से इंसानियत को इतना बड़ा नुकसान हुआ, ऐ ईसा वह हवारी कोई आम नहीं बल्कि आपका इमाम

था, ऐ ईसा मेरे नबी के एक हवारी (हुसैन) की वफा कुर्बानी ने मुहम्मद (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) का मज़हब इतना बुलंद कर दिया की वह दुनिया के तमाम मज़हबो को निगल गया और उसने नामे मुहम्मदी इतना रौशन कर दिया की जो **“सिराजन मुनीर”** बनकर चमकने लगा, तभी तो रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने कहा "मैं हुसैन से हूँ" ।

रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) जब अपना लोआबे-दहन (लार) हज़रत हुसैन को चुसाते थे तो ३ रोज़ तक फिर बच्चे की कोई ख्वाहिश नहीं रहती थी । यह सिलसिला ४० रोज़ तक चला, यानी ४० रोज़ तक हुसैन ने अपनी माँ का दूध नहीं पिया । यह बात तो ज़ाहिर है की जो बच्चा ६ महीने में ही पैदा हो गया हो, यानी छटवासा यानी, वह बहुत कमज़ोर, यानी उस बच्चे के लिए माँ का दूध बहुत मुफीद होगा और अगर उसके मुह में किसी का लोआबे-दहन को दुनियावी लिहाज़ से वह तो ज़हर होगा, यह बात तो आम है की अगर किसी बच्चे को शीशी पिलाई जाए तो डॉक्टर का कहना है की कम से कम २० मिनट तक उसको उबालो वरना बच्चे को बीमारी हो जाएगी ।

लेकिन यहां पर हमारे नबी (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) का लोआबे-दहन एक इंसानी थूक नहीं बल्कि इस कायनात का मल्टीविटामिन है, शहद भी इससे पीछे है, जिसको जिसको मिला वह किस्मत वाला है, कोई ७० ज़बानों का मालिक बना, कोई शेर ख़ुदा ।

साइंस यह साबित कर चुकी है की पैदा होने के ४० रोज़ तक जो भी गिजः बच्चा लेता है उससे उसकी हड्डियाँ, खून, और गोशत (मांस) मुकम्मल हो जाता है बाद के वक्त में सिर्फ बढ़ते रहते हैं यानी हुसैन की हड्डियाँ, खून और गोशत रसूल के लोआबे-दहन से मुकम्मल हुए यानी हुसैन मुहम्मद बना और रसूल फरमाते हैं " मेरा हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ " यह बात तो सच है की अगर किसी को अपनी ज़बान चुसवाओ तो खुद भी उसकी ज़बान चूसनी पड़ती है मिसाल के

तौर पे अगर अपना हाथ किसी से मिलाए तो उसका हाथ आपके हाथ से मिलान पड़ता है और अगर उसी वक्त उसका कोई फोटो खींच ले तो तस्वीर देख कर कहना मुश्किल होगा की कौन किस्से हाथ मिला रहा है बल्कि दोनों हाथ मिले नज़र आएंगे यही बात रसूल और हुसैन के बीच भी है तब ही तो रसूल ने कहा “मैं हुसैन से हूँ” ।

सन ५ बेसद २० जमादुस्तानी बरोज़ जुमा जब रसूल एक बेटी के बाप बने यकीनन रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की बेटी फात्मा ज़हेरा किसी भी तरह से खूबसूरती में कम नहीं हुई लेकिन मैं किसी भी तरह उनकी खूबसूरती मंज़र-ए-आम पर बता नहीं सकता । अजीब इत्तेफाक है के रसूल अपनी बेटी को अपनी जुबान चुसा रहे हैं वही सिलसिला ४० दिनों तक चलता रहता है उम्मुल मोमिनीन जनाबे आएशा से काफी बरस के बाद फरमा रहे हैं की “जब मैं मेराज (खुदा से मिलने) पर गया था तो एक मुकाम पर मुझे भूख का एहसास हुआ और मैंने सिर्फ दिल में परवरदिगार से कहा की जन्नत के सेब बहुत खूबसूरत हैं और फ़ौरन जिब्राइल अमीन एक सेब लेकर हाज़िर हो गए । इतना लज़ीज़ सेब मैंने आज तक नहीं खाया था और उसकी खुशबू मैं अभी तक नहीं भूला हूँ और इसी सेब से जो नुत्फा (कतरा-ए-मनी) बना उस नुत्फे से जनाबे खतीजा हामला (गर्भवती) हुई और मेरी बेटी फात्मा पैदा हुई । लेकिन जब मेरी बेटी पहली बार मेरी गोद में आई और जब मैंने उसे अपना लोआबे-दहन उसको चुसवाया तो उसके मूह से उसी सेब की खुशबू आ रही थी और मैं ४० दिन मुसलसल (लगातार) उस सेब का मज़ा लेता रहा यही बेटी हुसैन की माँ बनी ।

हज़रत फात्मा ज़हेरा की परवरिश ऐसी बेहतरीन औरतों के बीच हुई और ऐसो का साया रहा जो शायद अभी तक आदम से लेकर आज तक किसी को नसीब नहि हुआ होगा सरवरे कायनात का नुत्फा और गोद अमीस्ल मोमिनीन जनाबे खतिजतुल कुबरा (कायनात की बेहतरीन औरतो में से

एक) का शिकन और शीर (दूध), फात्मा बीनते असद का प्यार, उम्मुल फज़ल जौज़ाये अब्बास बिन अबू तालिब का इखलाक, अस्मा बीनते औस जौज़ाये जाफारो तैयार, सफिया बीनते हज़रत हमजा उम्मे एमन, उम्मे हानि वगैरह वगैरह ।

फात्मा ज़हेरा के मुकाबले एक और लड़की है जो जंगली जानवरों के बीच पैदा हुई जंगली इंसान का नुत्फा, बंदरो की गोद, जंगली सहेलियां, कुत्तो से मुहब्बत में पल रही है ।

जनाबे फात्मा ज़हेरा का किरदार और स्तबा किसी माइने में रसूल से कम नहीं था । रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) सहाबाओ के साथ बैठे हुए हैं और बच्ची आ गई (फात्मा ज़हेरा) तो आप खड़े होकर उसका इस्तेकबाल करते थे । और अपनी मसनद पर उसको बिठा देते थे और साथ में खाते थे ।

और इधर जंगल में एक लड़की जो जंगली फल खा रही है और उसके आस-पास कुत्ते और बिल्लिया मौजूद है, ढंग के कपडे भी नहीं पहने है । सुबह से शाम तक सिर्फ सहेलियों के साथ खेलना जानवरों की देख भाल करना और कंडे बनाना (गोबर से एक तरह का बनाया हुआ जलने का सामान) और शाम को जंगली धुनों पर थिरकना और नशे की हालत में सो जाना ।

हज़रत मुहम्मद मुस्तुफा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने उम्मुल फज़ल से कहा की आप मेरी बेटी को तालीम और इस्लामी शरियते बताएं, उन्होंने ने कहा या रसूले खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) आप यह क्या कह रहे हैं, बल्कि मैं और तमाम औरते उल्टा उनसे सीखते हैं । एक बार एक नाबीना शक्स आपसे मिलने आया तो आपने उसे अन्दर बुला लिया तो छोटे बच्चे ने फ़रमाया या बाबा जान मुझे पहले हट जाने दीजिए वह नाबीना है हम तो नहीं वह मेरे लिए ना मेहरम है । रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने कहा सुबहन अल्लाह, जैसे मैं बिना दुनियावी इल्म लिए इल्म का शहर हूँ, उसी तरह तुम भी शहर-ए-शरियत हो सुबहन अल्लाह ।

जनाबे फात्मा ज़हेरा ने आँख खोलते ही फरिश्तों का आना-जाना देखा सहाबाओ का जमघट देखा २४ घंटों की नमाजें देखीं अपनी वालिदा की दौलत देखि, इस्लाम पर कुर्बान होते देखि । रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) पर मसायब देखे कानो में सदा-ए- अल्लाहु अकबर सुनी आयातों की तिलावतें ज़बान से जारी रखी कई-कई दिनों की भूख और प्यास देखि और हज़रत मरियम के वाकिये सुने कभी बाप को रोता देखा, कभी बाप को मज़बूत देखा और धिरे-धिरे मुसलमानों की बढ़ती तादाद देखि, और इधर जंगल में एक लड़की ने बंदरो का नाच देखा, खूंखार बाप का अपनी वालिदा पे जुल्म देखा, कबीले के जांबाजों को अपने ऊपर फिदा देखा, और कभी खुद को अपने किसी गुलाम पे फिदा देखा ।

जनाबे फात्मा ज़हेरा का हर किरदार रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) से मिलता हुआ है, या यूँ कहिए रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) का हर तरिका फात्मा ज़हेरा से मिलता हुआ है । फात्मा वह सितारा है जो सूरज से बहुत दूर है, लेकिन सूरज से बहुत बड़ा है और सूरज के मुकाबले बहुत छोटा दिखाई पड़ता है । यही फात्मा ज़हेरा हुसैन की वालिदा हैं । कौन हुसैन ? । वही हुसैन जिनके लिए रसूल कह रहे हैं “मैं हुसैन से हूँ”। जब फात्मा ज़हेरा घर का काम करने में मशगूल होती तो हज़रत जिब्राइल अमीन हुसैन को झूला झुलाते थे और हज़रत औन, काबील चक्की पीसते थे यहां तक की अगर इनके मूह से यह निकल गया की दरजी कपडे लेकर आ रहा है तो जन्नत से एक फ़रिश्ता कपडे लेकर आ गया । हज़रत हसन के लिए हरा जोड़ा और हज़रत हुसैन के लिए लाल जोड़ा. जन्नत के कपड़ों की यह खासियत होती है की वह हर उम्र में जिस्म पर ठीक आते है (दलील के लिए मेरी २० सफ़र १४३२ हिजरी की तक्रीर का मुताला करें) । कभी हिरनी के बच्चे का वाकिया पेश आ रहा है, तो कभी रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) एक चादर में लेट कर पंजतन का नाम ले रहे हैं । कभी अपने कंधे पर बिठाकर मदीना घुमा रहे हैं । कभी सजदे को तूल दे रहे हैं, क्युकी हुसैन आप पर सवार हैं । कभी अपने बेटे जनाबे इब्राहीम को

हुसैन पर कुर्बान कर रहे हैं। कभी हज़ारों के मजमे में हुसैन को अपना बेटा कह रहे हैं। दुनिया समझ रही है के रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) सबसे ज्यादा हुसैन को प्यार करते हैं। लेकिन हाय अफसोस रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को अपना दीन प्यारा है और यही उनका नवासा इस्लाम पर कुर्बान हो जाएगा तब न रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की मुहब्बत आड़े आएगी और ना खून।

जनाबे फात्मा की तरबियत हुसैन को इतना मज़बूत बना रही है के दुनिया की कोई भी ताकत, कोई भी दौलत, कोई भी जुल्म ना तो छुपा सकता है, ना तोड़ सकता है, अल्लाहु अकबर की सदाओं के साथ सोकर उठना और खुदा के शुक्र के साथ सो जाना, इस तरह तेज़ी से ज़िन्दगी गुज़र रही है। हुसैन ने मुभाईला भी देखा, जंगे भी देखि और सुनी लाखों को मुसलमान होते देखा, अपने वालिद की बुलंदी देखि, रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) सा सूरज देखा, माँ को मरियम से भी पाक देखा, इसके साथ-साथ घर में फाके देखे, कंगाली देखि, अपने वालिद को यहदी के बाग में मजदूरी करते देखा, नाना की मौत भी देखि, मदीना रोता देखा, माँ पर जुल्म होते देखा और उसी हाल में शहादत देखी, खिलाफत की लड़ाई देखी, अपने वालिद को रस्सी से जकड़ा देखा, साहिबे जुल्फिकार को सब्र करते देखा, मदीना झुकता देखा, कुफा देखा कई जंगे देखी, अपने वालिद का क़त्ल देखा, भाई हसन की सुलह देखी, कुफा छुटता देखा, मदीने में हसन का जनाज़ा देखा, लाशे पर लगे ७० तीर देखे। मगर हुसैन ने कुछ नहीं कहा सिर्फ सब्र के आंसू निकाले और हुकुम-ए-खुदा का इंतज़ार करते रहे।

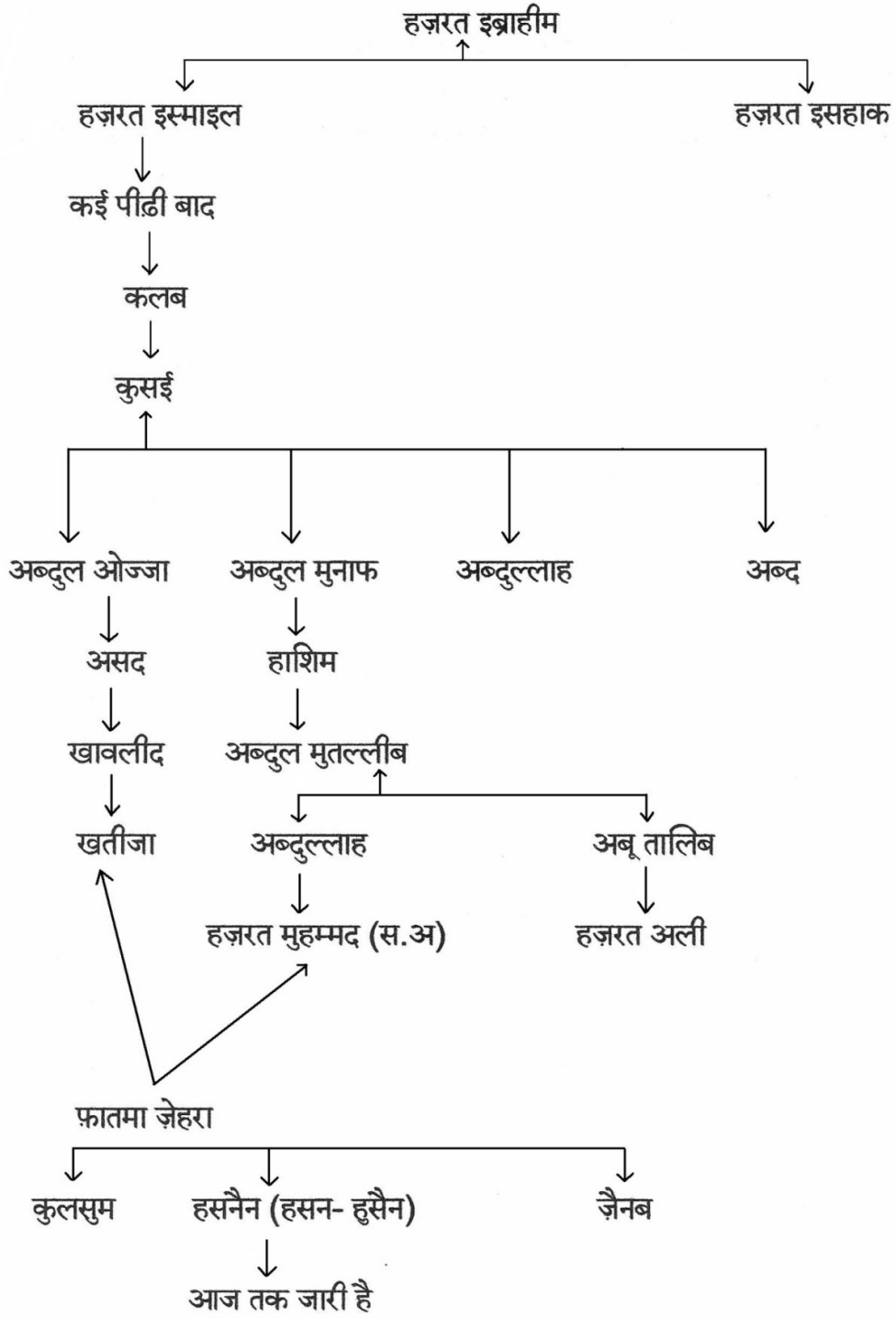
अगर हुसैन की माँ फात्मा ज़हेरा थी, तो बाप भी किसी से कम ना थे, (फ़तेह खैबर) मालिके जुल्फिकार, रहबर की मौत, हैदर का लकब, असद उल्लाह गालिब, रसूल का वसी अमीस्ल मोमिनीन, हज़रत अली इब्ने तालिब सा बाप भी था। दावते जुल-अशीरा (खानदानी दावत) में

रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) का साथ देने के लिए जो शक्स खड़ा हुआ यह वही अली है । जिसने मक्के के मुशरिकीन बच्चो की हड्डियां तोड़ दी यह वही अली है, उम्र है १० बरस, अली की बहादुरी उनके कारनामे उनका इल्म उनकी सादगी का लोहा दुनिया मान चुकी है ।

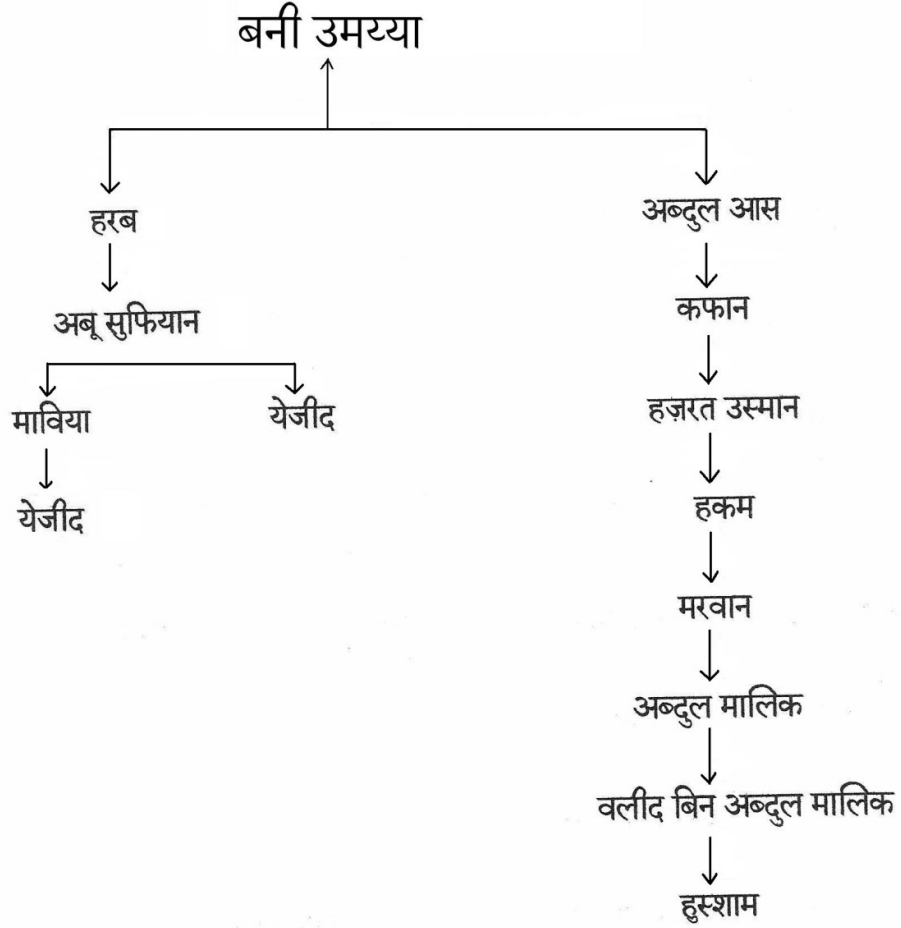
दूसरी तरफ खानदान तो यही है लेकिन शाखे अलग-अलग है । हुसैन बनी हाशिम है और यज़ीद बनी उमय्या यानी बनी शम्स ।

शजरा-ए-हुसैन

शजरा-ए-हुसैन



शजरा-ए-बनी उमय्या



हमको याद आ रहा है वह ८ वि हिजरी फ़तेह मक्का का वह वक्त की रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) मुसलमानी फ़ौज के साथ मक्के का घेराव कर चुके हैं और मक्के के अन्दर तलातुम मचा है, काबे के बुत ज़मीन दोष होने के लिए बेकरार हैं। मक्के के मुशरिकीन जान बचाने के लिए बेकरार, इन दोनों के बीच अबू सुफियान परेशान है के शायद आज मैं मारा जाऊं। खैर उसका सोचना भी ठीक है। इस्लाम की पहली जंग यानी जंगे बदर में अबू सुफियान के बड़े-बड़े सूरमा (अत्बा यानी हिन्दा के बाप, शीबा हिन्दा का भाई, उमरू अबू सुफियान का बेटा वगैरह-वगैरह) क़त्ल हुए। जंगे ओहद में जो मुसलमान हार गए थे, अबू सुफियान की जौज़ा हिन्दा ने हज़रत हमज़ा का कलेजा चबाया जो उसकी कसम थी, ७० मुसलमान शहीदों की ऊँगली काट कर अपने गले में हार पहना, मक्के फ़तेह के पहले हर जंग में अबू सुफियान मुसलमानों के खिलाफ रहा, तो यक़ीनन उसका शक़ सही है के आज वह मारा जाएगा, हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुतल्लिब के समझाने पर वह इस्लाम लाने पर राज़ी हो गया।

समझ में नहीं आ रहा है की यह इस्लाम था, या इस्तिस्लाम। फिर भी दिल में डर की कहीं रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) मुझे मौत के घाट ना उतार दें। जिसकी सर्गमियों की वजह से रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को मक्का छोड़ना पड़ा, जिसकी वजह से रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के अपने शहीद हुए, जिसकी वजह से मुसलमान शहीद हुए, जिसकी वजह से रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के दांत शहीद हुए, मुझे वह बंद किले वाले याद आ रहे हैं जो किले के अन्दर से रसूल को बुरा भला कह रहे थे उन्होंने किसी मुसलमान को मारा भी नहीं था, रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को कोई चोट भी नहीं पहुंचाई थी, सिर्फ़ चन्द बुरी बातें बक रहे थे तो ७०० लोगों का सर कलम कर दिया गया बा-हुकुम-ए-रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) तो अबू सुफियान का क्या होगा? तो यह वही रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) हैं।

अल्लाह वाले, परहेजगार, नूरे-ए-खुदा, सरवरे कायनात को एक जाहिल दिमाद नहीं समझ सकता, मैं दूर से खड़ा देख रहा हूँ किताबों में झांक रहा हूँ रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) कह रहे हैं की जो भी मुशरिकीन अबू सुफियान के घर में पनह लेगा उसे अमान है. अब अगर ६१ हिजरी में आशूरे के दिन हु को माफ़ करें तो मैं कहूँगा के रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने बिलकुल सही फ़रमाया था के “मेरा हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ”।

रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने माविया बिन अबू सुफियान से कहा तेरी आल मेरे नवासे का क़त्ल करेगी, तो माविया ने जवाब दिया मैं शादी ही नहीं करूँगा। वक्त गुजरता गया और माविया एक ऐसी बिमारी में मुब्तिला हो गए जिससे छुटकारा पाना आसान नहीं था। वाकिया कुछ इस तरह है की एक बार जनाब माविया अपनी फ़ौज के साथ "नजत" नाम की जगह के सफ़र पर थे और इनकी तबियत खराब हो गई, मौजूद हकीम ने आपकी जांच पडताल करी और कहा आपके जिस्म में मौजूद माददा ज़हर बन रहा है इसलिए आपको शादी करनी पड़ेगी वरना आपकी मौत हो जाएगी और शादी भी फ़ौरन के फ़ौरन।

अब तमाम सिपाहियों ने जंगल में खोज बीन शुरू कर दी और उस कबीले पर निगाह पड़ी जहां खूबसूरत लडकी जिसका ज़िक्र हम ऊपर कर चुके हैं रहती थी। इस तरह माविया की शादी “मैसूमा बीनते बहदिल कलबी” के साथ हो गई और उसी रात नजत के इसी जंगल में यज़ीद का नुत्फ़ा करार पाया गया (मैसूमा हामला हो गई) और २२ हिजरी में यज़ीद दमिशक में पैदा हुआ, कुछ आपसी अन बन के बाद मैसूमा अपने मैके चली गई और तलाक हो गई ६ बरस यज़ीद जंगलो में ही तरबियत पाता रहा, कुत्ते बिल्लियो से खेलना जंगली जानवरों का शिकार करना कबीले के ढोल ताशे, शराब, सबकुछ का आदि हो गया, ८ बरस की उम्र में माविया ने यज़ीद को अपने पास

बुला लिया, महलो की शान, गुलाम , कनिजें, दौलत, इज्जत के नशे में यज़ीद जवानी की तरफ बढ़ने लगा ।

हज़रत अली की शहादत के बाद जब हज़रत हसन से और हज़रत माविया से सुलह हुई और इस शर्त के साथ, बादे माविया यज़ीद जानशीन नहीं बनेगा और आल-ए-रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) से बैत नहीं ली जाएगी. लेकिन बादे माविया यज़ीद खलीफा बना और उसने हज़रत हुसैन से बैत लेनी चाही लेकिन हज़रत हुसैन ने बैत नहीं की ।

मक्के में आने के बाद ये खबर जंगल की आग की तरह फैल गई के हज़रत हुसैन यज़ीद की बैत का इनकार करके मक्के आ गए हैं । क्युकी हज़रत हुसैन के मक्का पहुंचने के २ दिन पहले अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर मक्का पहुंच चुके थे, इसलिए मक्का के लोग उनकी तरफ मुतवज्जो थे । लेकिन हज़रत हुसैन के पहुंचने के बाद लोग उनकी तरफ मुतवज्जो हो गए, यह बात इब्ने जुबैर को बहुत नागवार गुजरी क्युकी कहीं-ना-कहीं जुबैर खलीफा बन्ने के ख्वाब देख रहा था । उनको लगा की हुसैन उनकी रूकावट हो सकते है । यु समझिये की रूकावट हो गए और उन्होंने हज़रत हुसैन के खिलाफ चुपके-चुपके गिरोह बंदी शुरू कर दी । दमिश्क में यज़ीद को जब हज़रत हुसैन के बैत ना करने की खबर मिली और मदीना छोड़कर मक्के आने की खबर मिली तो यज़ीद ने पहला काम यह किया की वालिये मक्का याहया बिन हाकिम को हटा कर अपना वफादार उमरो बिन साद बिन कैस बिन अबुल आस बिन उमैय्या को वालिये मक्का बनाया । उसने मक्का आते ही हज़रत हुसैन पर नाका बंदी कर दी और उनसे मिलने वालो की फेहरिस्त बनाना शुरू कर दी । क्युकी मक्का वाले पहले ही तमाशबिन रहे हैं, तो उन्होंने हुसैन से राबता करना कम कर दिया, अब हज़रत हुसैन को यह एहसास होने लगा की मक्का उनके लिए महफूज़ नहीं है । मदीना पहले ही छुट चुका था । हज़रत हुसैन ने अब कोई नई सिम्त में जाने का इरादा किया, हज़रत हुसैन

के सामने ५ रास्ते थे, कुफा जो उनके वालिद की दास्तल हुकूमत रह चुका था और वह खुद वहां रह चुके थे और खुद बड़े-बड़े लोगो को जानते थे (रईस और ताकतवर). जब हज़रत अली के खिलाफत के दौर में तल्हा और जुबैर की बगावत हुई और उन्होंने हज़रत आएशा (रादिअल्लाह ताला अन्हा) के साथ मिलकर जंगे जमल अंजाम दिया तो उनके साथ बसरा के लोग थे । और हज़रत अली के साथ कुफे के लोग अल्वी शिया कहलाए यानी शियाने अली, यह बात सच है की कुफे में शियों की तादाद ज्यादा थी और सब हज़रत अली के साथ थे लेकिन कुफियो में खासियत थी के कमजोर हुकूमत के साथ ज़ालिम और ज़ालिम हुकूमत के साथ कमज़ोर हो जाते थे और घरों में बैठ जाते थे । हज़रत अली की शहादत और जनाबे माविया की शहादत के बीच २० साल का वक्त है और यह २० साल दमिशक की हुकूमत ने कुफियो पर बहुत जुल्म किया तकरीबन ३५००० अल्वी शियों का क़त्ल हुआ नतीजतन बहुत से शिया कुफा छोड़कर दूर-दराज़ के ठिकानों पर चले गए और जो कुछ बचे वह बहुत कमज़ोर, गरीब, और लाचार थे ।

दूसरा रास्ता हज़रत हुसैन के लिए यमन का था जहां अल्वी शियों की तादाद ज्यादा थी और कुफे के मुकाबले बेहतर थे, और वहां के लोग चाहते भी थे के हज़रत हुसैन यमन आ जाए ।

तीसरा रास्ता हिन्दुस्तान का था क्युकी उनकी एक बीबी शहर बानो की बहन मेहर बनो की शादी हिन्दुस्तान के महाराजा के साथ हुई थी और हिन्दुस्तान के लोग चाहते थे की हज़रत हुसैन अपने मज़हब के साथ हिन्दुस्तान आए क्युकी सिंध तक इस्लाम की जड़े फैल चुकी थी और हिन्दुस्तान के लोग इस्लाम की बातों में बड़ी दिलचस्पी (रुचि) लेते थे और वह इस्लाम के उपदेशों के प्यासे थे । क्युकी यहां पर बौध और जैन धर्म का बोल बाला था जो की अहिंसात्मक मज़हब था, मेरे हिसाब से हज़रत हुसैन के लिए सबसे सही जगह हिन्दुस्तान ही थी लेकिन

भुगौलिक नज़र से मक्के से यहां तक का सफ़र मुश्किल था. बड़े-बड़े दरिया, सेहरा, नक्लिस्तान पहाड़ के मुकाबले एक छोटा सा काफ़िला ।

चौथा रास्ता सबसे आसान मदीने की वापसी थी । बेहतरीन हज भी, ढेरो दौलत भी और अपनों का खून भी नहीं सिर्फ़ इस्लाम का सौदा यज़ीद की बैत. लेकिन जिनका नाना एक हाथ पे चाँद और एक हाथ पे सूरज के मुकाबले भी इस्लाम न बेच सका तो नवासा कैसे बेच देगा.

पांचवा रास्ता यज़ीद के खिलाफ जंग ।

इधर यज़ीद ने मक्के में ३०० खारजियो को हाजियों के भेष में तैनात कर दिया की मौका मिलते ही हुसैन को मक्के में ही क़त्ल कर दो । ताकि सारी बदनामी खारजियो के सर आ जाए और यज़ीद का दामन पाक रहे । क्युकी खारजी उमैय्या और अल्वी से हटकर एक नई जमात का नाम है । लेकिन यज़ीद यह चाहता था की किसी भी तरह हुसैन को कुफे लाया जाए और यहां लाकर क़त्ल कर दें. इधर कुफे में सरगर्मिया तेज़ हो चुकी है और सब को यह पता चल चूका है की हुसैन यज़ीद की बैत का इनकार करके मक्का आ चुके हैं, कुफे के एक छोटे से मकान में हज़रत सुलेमान बिन सरद जो सहबिये रसूल भी हैं, कुछ इकठ्ठा होकर एक मीटिंग कर रहे हैं और काफ़ी बहस और सोच समझ कर एक ख़त हज़रत हुसैन को लिखा "हम लोगो ने वालिये कुफा नोमान बिन बशीर के पीछे नमाज़ पढना बंद कर दी है और हम यज़ीद को खलीफा नहीं मानते, आप कुफे तशरीफ़ ले आए और हम सब आपके साथ हैं । इस ख़त के ऊपर जनाब सुलेमान बिन सरद, मसय्य बिन बरखिया हबीब इब्ने मज़ाहिर वगैरह-वगैरह के दस्तख़त थे । ये पहला ख़त १० रमज़ान ६० हिजरी को हानि बिन हानि सक्की के हाथो हज़रत हुसैन को पहुंचा । यकीनन यह कुफे की दावत का पहला ख़त था । और सुलेमान बिन सरद के मकान में तक़रीबन २० लोग मौजूद थे जिनके सामने यह ख़त लिखा गया था लेकिन खुदा जाने यह २० अल्वी शियों की बातें पूरे कुफे में

कैसे पहुंच गई और जिसको देखो वह हुसैन को खत लिख रहा है । १२ रमज़ान ६० हिजरी ५३ खत एक साथ सैएद बिन अब्दुल्लाह के हाथों पहुंचते हैं और हर खत पे २-३ लोगो के दस्तखत हैं यानी दो दिन के अन्दर अल्वी शियों की तादाद २० से बढ़कर १५० हो गई, अगले १० दिन के बाद १५० खत पहुंचते हैं, जनाब कैस बिन मसाहिर के हाथ और हर खत पे ५ से ६ लोगो के दस्तखत है । यानी अल्वी शियों की तादाद २० से बढ़कर १००० से ऊपर हो गई और सबका एक ही मज़मून "आप यहां चले आए हम आपके साथ हैं हम यज़ीद के जुल्म से परेशान हैं । हम उसके खिलाफ जंग करना चाहते हैं । बस आप चले आइए । इस तरह ईद की शुरूआत तक १५०० खत पहुंच चुके थे और अल्वी शियों की तादाद १ महीने में १०००० तक पहुंच चुकी थी. कहाँ छुपे थे शिया २० साल मुसल-सल, जुल्म होता रहा तब सब खमोश रहे किसी ने मदीने में कोई खत नहीं भेजा । हज़रत हसन की शहादत के बाद हुसैन को कुफे आने की दावत नहीं दी । ये यज़ीद के खिलाफा बनते ही उसके जुल्म के खिलाफ थे । टिड्डी कहाँ से नमूदार हो गया ।

मुझे फक्र है उन चिड़ियों (अबाबील) पर की जब अब्दुल मुतल्लिब के दस्तर ख्वान का बचा हुआ खाना पहाडियों पर बिखेर दिया जाता था तो झुण्ड-के-झुण्ड अबाबीलो के इस खाने को नोश फरमाते थे और जब अब्दुल मुतल्लिब को ये एहसान-मन्द परिदे उन्ही पहाडियों से जिस चोंच से खाते थे उन्ही चोंच में छोटे-छोटे कंकर (अपनी हैसियत के हिसाब से) लेकर आ गए थे लेकिन अफसोस यह झूटे कुफे वाले, ये मक्कार कुफे वाले जो हज़रत अली के एहसान के बदले उनके बेटे के क़त्ल की साजिश में शरीक हो चुके हैं ।

इस तरह तक़रीबन १२००० खत ईद का महिना ख़त्म होते-होते हुसैन के पास आ चुके थे, यानी पूरा कुफा हुसैन के साथ है । एक अजीबो गरीब खत जिसका मजमून इस तरह है "खेतियां लह-लहा रही है, तालाब पानी से लबरेज़ है, और मेवो से लदे पेड़ आपके मुन्तज़िर है और हमारी

तलवारे आपका साथ देने के लिए बेचैन हैं” यह खत हज़रत हुसैन को मिला जनाब अब्दुल रहमान बिन अब्दुल्लाह के हाथ मिला । इस खत के ऊपर शबस बिन रबई, हजर बिन जरब, यज़ीद बिन हारिस, उमर बिन अब्दुल्लाह, मुहम्मद बिन आमिर के दस्तखत थे और यह सब हुसैन के खिलाफ जंगे कर्बला में यज़ीद की फ़ौज में मौजूद थे और इस चीज़ का खुलासा हमारे बड़े-बड़े आलिमों ने अपनी किताब में किया है ।

तमाम खत मिलने के बाद हुसैन ने अंसारों के साथ, अजीजों के साथ मशवरा शुरू किया की हम इन खातो पर यकीन करें या ना करें, हम कुफे जाए या ना जाए, क्युकी तमाम खत इसमें से ऐसे थे जिनमें यह लिखा था की “हम कुफे वाले बिना इमाम के हैं और अगर आपने हमको सही राह नहीं दिखाई तो हम रोज़े हशर में खुदा से कहेंगे की हम अपने इमाम से मदद मांगते रहे और वह नहीं आए जिसकी वजह से हमारा ईमान बिगड़, गया जिसके ज़िम्मेदार हुसैन हैं”। हम नहीं लेकिन हज़रत हुसैन यह जानते थे की इसी तरह के अल्फ़ाज़ २५ साल पहले उनके वालिद से और २० बरस पहले भाई से कहे थे । लेकिन यही लोग दोनों की शहादत से बाद खामोश बैठे रहे । हज़रत हसन की शहादत के बाद हज़रत हुसैन ने हुकूमत की बातों में दखल देना बिल्कुल बंद कर दिया था यहां तक की छोटे-छोटे मसलों से भी परहेज़ करने लगे थे और अपने को घर में बंद कर लिया था यानी हुकूमत को हज़रत हुसैन से कोई खतरा नहीं था । यहां तक ५६ हिजरी में हज़रत माविया जब मदीने आए और उन्होंने ने हज़रत हुसैन से यज़ीद की जानशीनी पर राज़ी होने को कहा तो आपने साफ़ अल्फ़ाज़ों में फ़रमाया की मेरे जैसा शक्स यज़ीद जैसे फ़ाज़िर और फ़ासिर जैसे इंसान की बैत नहीं कर सकता और ना ही मैं आपके किसी मसले में बोलूंगा, आपको जो करना हो करें हमसे बैत की उम्मीद ना करें । इसपर अमीर शाम खामोश हो कर लौट गए और फिर दुबारा बैत की बात नहीं की । यहां तक हज़रत माविया ने अपने बेटे यज़ीद से कहा देखो हमारे बाद तुम

हुसैन से बैत की बात ना करना वरना एक नई मुसीबत खड़ी हो जाएगी, जैसा चल रहा है वैसा चलाते रहना लेकिन यज़ीद का गुस्सा हज़रत माविया की मौत के बाद रंग लाया और हज़रत हुसैन को मदीना छोड़ना पड़ा। कहीं ऐसा ना हो की सेहराओ में भटकता हुआ शेर पूरी येजीदी हुकूमत ही निगल जाए और बनी उमय्या का ख्वाब अधूरा रह जाए। शायद हज़रत माविया की दूर अनदेशी आंखे यह देख रही थी और वह जानते थे की जो शक्स मेरी बैत ना करसका तो यज़ीद की बैत कैसे कर सकता है।

मक्के में खानदान-ए-बनी-हाशिम में बड़ा तला तुम है। हज़रत हुसैन यह समझ कर मक्का आए थे की वह पुर-सुकून तरीके से यहां रहेंगे लेकिन खतो के आने-जाने की वजह से वालिये मदीने पर यज़ीद की सख्ती और वालिये मक्का पर सख्ती करने का हुकम शायद उनको यहां रहने नहीं देगा। हज़रत हुसैन यह समझ चुके हैं की यज़ीद जाल फेक चूका है और अब उसके शिकंजे से निकलना बहुत मुश्किल काम है। मक्का वालो के बदले हुए सूख घरो की तलाशी और अल्वी शियाओ पर जुल्म की शुरूआत हो चुकी है, लेकिन बहाने कोई और है उधर अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर की साज़िश के किसी तरह हज़रत हुसैन मक्का छोड़ दें। आखिर यह तय पाया की पहले किसी भरोसे मन्द शक्स को कुफे भेजा जाए ताकि इन तमाम आए हुए खतो के जवाब भेजें और वह खुफिया तौर पर खत भेजने वालो से राबता कायम करें और अपने हाथो पर हज़रत हुसैन की तरफ से बैत लें और जब उसको पूरा यकीन हो जाए की हालात हज़रत हुसैन के हक में हैं तो वह हज़रत हुसैन को खबर करे, फिर उसके बाद हज़रत हुसैन कोई फैसला लेंगे और जब तक हज़रत हुसैन मक्के में ही रहेंगे। बड़ा सोच समझने के बाद जनाबे मुस्लिम बिन अकील बिन अबू तालिब का नाम तय पाया, हज़रत मुस्लिम हज़रत अली के भाई अकील के बेटे हैं और इस वक्त उनकी उम्र २८ साल है। आपने जब हज़रत हसन की शहादत के वक्त कुफा छोड़ा था तब आपकी उम्र ८ साल

थी यानी आपका बचपन कुफे में गुजरा था। लेकिन २० बरस में कुफा बहुत कुछ बदल चुका है। ५
जीकाद सन ६० हिजरी को हज़रत मुस्लिम अपने २ बेटो मुहम्मद और इब्राहीम इनकी उम्र ७ और
८ साल है और अपने २ साथियो अब्दुल रहमान बिन अब्दुल्लाह, कैस बिन मसाहिर और हज़रत
हुसैन का कुफियो के नाम लिखा खत लेकर कुफा खाना हो गए.

हज़रत मुस्लिम पहले मदीना तशरीफ़ लाए और ३ दिन तक मदीना में ही ठहरे फिर यहीं से
आप कुफे की राह चल दिए, लेकिन अफ़सोस आपके चलते ही धूल भरी आंधिया शुरू हो गई
और इनके साथी जो कुफे की राह अच्छी तरह जानते थे रास्ता भूल गए। गरम रेगिस्ताम में
भटकता हुआ छोटा सा काफिला जिसमे कुल ७ लोग हैं ना जाने किधर जा रहा है कोई नहीं
जानता अब तो टूटने का ही सहारा है की वह जिधर ले जाए, यह सातों उसके पीछे पीछे चले जाए
। हमे पहली हिजरी की वह रसूल की ऊटनी की याद आ रही है की जब मदीने में हर शक्स इस
बात पर आमादा था के रसूल हमारे यहां ठहरेंगे और ऊटनी के फैसले ने एक बहुत बड़ा फैसला
कर दिया था वरना रसूल के मदीना में कदम रखते ही जंग छिड जाती। यानि यहां पर ऊटनी नहीं
बल्कि मरजिए खुदा थी बहाना ऊटनी था। आखिर हज़रत मुस्लिम का खाना पानी सब खत्म हो
गया मौत सर पर मंडराने लगी और इनके २ साथी उसी हालत में खुदा को प्यारे हो गए। अब पांच
लोगो का काफिला अल्लाह से दुआ मांगता हुआ बस चल रहा है, वादिए मिजाक में पहुंच कर
आपको कुछ पानी नसीब हुआ। इसी दरमियान पीछे से एक कूफी काफिला भी आ जाता है,
खाना पानी के बाद आप उसी काफिले के साथ कुफे की तरफ चल पड़ते हैं और २२ ज़िकाद ६०
हिजरी कुफा पहुंच जाते हैं। कुफा पहुंच कर आप जनाब **“मुख्तार बिन अबी उबैदा सक्की”**
के घर में पनाह लेते हैं यकीनन आप सुलेमान बिन सर्द के घर में ही रुकते लेकिन जिस वक्त आप
कुफे पहुंचे तो वह कुफे में मौजूद नहीं थे।

हज़रत मुस्लिम कुफा पहुंच गए। यह खबर पुरे कुफे में बहुत जल्द फैल गई और तमाम कूफी गिरोह पे गिरोह उनसे मिलने आने लगे। २ दिन के बाद मस्जिदे कुफा में ज़ोहर की नमाज़ के बाद हज़रत मुस्लिम ने हज़रत हुसैन का वह खत पढा जो वह लेकर आए थे। “एहले कुफा वालो तुम्हे हज़रत हुसैन बिन अली का सलाम हो जैसा की तुमने हमे खत भेजे है और तुम हमारे हाथ पर बैत करना चाहते हो तो मैं बहुत जल्द तुम्हारे पास पहुंचूंगा, हमारी तरफ से हमारे चचा जाद भाई मुस्लिम बिन अकील पर बैत करो और गोया समझना की तुमने हज़रत हुसैन के हाथो बैत की है”।

इस खत को सुनने के बाद जनाब हबीब बिन मज़हर और मुस्लिम बिन औसजा ने भी तकररि की और उसके बाद बैत का सिलसिला शुरू हो गया और चार दिन बाद १८००० कुफियो ने बैत कर ली। बाज़ रिवायतो में इनकी तादाद अलग अलग है १०, १२, ३० वगैरह वगैरह लेकिन मेरे नज़दीक १८,००० ही दुरूस्त है।

कुफे के हालात बदल चुके हैं, जगह जगह लोगो का जमघट, सिर्फ यही बातें हो रही हैं। अवाम में बड़ी खुशी है और यज़ीद के खिलाफ बगावत करने के लिए तैयार हैं। मुस्लिम हज़रमी गवरनरे कुफा स्मान बिन बशीर से कहता है की कुफे के हालात नाज़ुक हो रहे हैं और बगावत का खतरा है। लेकिन जुमे के खुतबे में गवरनर के इस बयान ने “की जब तक खुलकर कोई बात मेरे सामने नहीं आ जाती मैं कोई फौजी कारवही नहीं करूंगा क्युकी मैं इबादत में कमज़ोर हूँ गुनाह में पुरजोर नहीं बनना चाहता” इस खुतबे ने आग में घी का काम किया, क्युकी कूफी कमज़ोर हाकिम के सामने पुरजोर और ज़ालिम हाकिम के सामने कमज़ोर रहे हैं। गवरनर के इस बयान के बाद अवाम में हुकूमत का डर खत्म हो गया और खुलकर यज़ीद की बुराई करने लगे और हज़रत हुसैन के कुफे आने का इंतज़ार करने लगे।

यज़ीद के २ खास मुखबिर १) मुस्लिम बिन सईद २) अमारा बिन अक्बा ने फ़ौरन इसकी खबर यज़ीद को भेज दी। यज़ीद ने अपने वज़ीर सरजॉन बिन मंसूर समी से राय लेकर बसरा के गवरनर **अब्दुल्लाह इब्ने ज़ियाद** को मुस्लिम बिन उमरू बहाली के हाथो पैगाम भेजा की तुम फ़ौरन कुफे की गवरनरी संभालो और मुझे हर हाल में मुस्लिम बिन अकील का सर चाहिए। इब्ने ज़ियाद फ़ौरन बसरा से कुफे के लिए रवाना हो गया और बसरा की गवरनरी अपने भाई उस्मान को दे दी क्युकी इब्ने ज़ियाद कोई फ़ौज लेकर रवाना नहीं हुआ था, वह तन्हा मुस्लिम बिन उमरू के साथ एक काफिला जो बसरे से कुफा आ रहा था उस में शरीक हो गया। क्युकी इब्ने ज़ियाद को डर था की कूफी उसे क़त्ल ना कर दे। इधर हज़रत मुस्लिम बिन अकील ने अपने भाई हज़रत हुसैन को एक ख़त रवाना किया जिसमे लिखा था **“कुफे के हालात अच्छे हैं और १८,००० लोगो ने बैत कर ली है हुकूमत कमज़ोर पड़ चुकी है, आप फ़ौरन कुफे चले आए, कुफे के लोग कुफे के बाहर आपका इंतज़ार कर रहे हैं”** इधर अब्दुल्लाह इब्ने ज़ियाद जब कुफे के करीब पहुंचा तो उसने काला अमामा सर पर और मुह पर लपेटकर सफ़ेद अरबी घोड़े पर सवार हो कर कुफे में दाखिल हुआ। इधर हुसैन का इंतज़ार कर रहे कुफियों ने देखा की एक काफिला आ रहा है तो वह समझे की हुसैन आ रहे हैं. क्युकी सय्यद ही काला अमामा पहनते हैं और अवाम काफिले के पीछे पीछे हो लि अल्लाहु अकबर के नारे लगाते हुए। कुफियों की तादाद धीरे धीरे बढ़ती गई इब्ने ज़ियाद खामोशी से अपने गवरनर हाउस की तरफ बढ़ता रहा और उसकी तेज़ निगाहें और चालाक दिमाग कुफियों की हर हरकत को नाप रही थी और वह जैसे ही महल के करीब पहुंचा उसने अपना अमामा हटा दिया और उसी वक्त मुस्लिम बिन उमरू ने बुलंद आवाज़ में कहा की चलो भागो यहां से यह हमारे नए गवरनर अब्दुल्लाह इब्ने ज़ियाद हैं। बेशक अब्दुल्लाह इब्ने ज़ियाद का नाम कुफियों के सामने नया था लेकिन ज़ियाद का नाम पुराना था। ज़ियाद ने माविया के ज़माने में कुफियो पर इतना जुल्म ढाया था की उसके बेटे का नाम सुनते ही कूफी डर गए और

कहने लगे अरे यह ज़ियाद का बेटा है ? डर कर भाग खड़े हुए, एक भगदड़ मच गई बस इसी डर का फायदा इब्ने ज़ियाद ने उठाया उसने फ़ौरन ८०,००० की फ़ौज से पूरे कुफे में नाका बंदी करवाई, नुमान बिन बशीर अपने वतन शाम को लौट गया । कुफे के हालात अब उलटे हो चुके हैं, लोग सहमे घरों में बैठे हैं, बाज़ार बंद हैं, सन्नाटा बरपा है, हालात के मद्दे नज़र अब्दुल्लाह इब्ने ज़ियाद ने फ़ौरन ही अराफतो (सेक्टर वार्डन) को बुलाया और सख्ती से कहा की हमें हर मोहल्ले की मर्दुम शुमारी चाहिए की कौन मेहमान किसके घर में आया है और कौन कुफे के बाहर गया है, सब का रजिस्टर चाहिए जिसने भी कोताही बरती उसकी जान की अमान मैं वापस लेता हूँ और इस काम के लिए ज़ियाद ने खुसूस ३०० लोगो को मुकर्रर किया । कूफी यह समझ रहे हैं की यह सख्ती मुस्लिम बिन अकील के लिए की जा रही है, और वह डर कर अपने घरों में दुबक गए । एक बार फिर वह बात सच हुई की ज़ालिम हाकिम के सामने कूफी कमज़ोर हुए ।

जब मुस्लिम बिन अकील कुफे में तशरीफ़ लाए थे तो आपने अपने दोनों बेटों को खुफ़िया तौर पर काज़ी शररी के घर छोड़ दिया था क्युकी यह अल्वी शिया थे । जब फ़ौजी कारवाही तेज़ हुई तो जनाबे मुस्लिम को मुख्तार के घर में खतरा महसूस होने लगा क्युकी खुद मुख्तार कई दिनों से कुफे के बाहर थे, इस लिए उसी रात जनाबे मुस्लिम ने चुप-चाप हानि बिन अवराह के घर पनाह ली क्युकी हानि बिन अवराह कबिले मुराद मजहज के सरदार थे और इनके साथ हमेशा १२००० शमशीर ज़न नौजवान चलते थे, कुफे से दमिश्क तक इनका दब-दबा था दुसरे अल्फाजो में मुस्लिम १२००० शमशिरो के साथ में आ गए थे । लेकिन फ़ौजी कारवाही, घरों की तलाशी जारी थी । इब्ने ज़ियाद को यह बात नहीं मालूम थी की हज़रत मुस्लिम कहाँ छुपे हैं और वह चाह कर भी नामी कुफियो के घर कि तलाशी नहीं करवाना चाहता था, की कहीं ऐसा ना हो की यह लोग बगावत करके मार डाले इसलिए तलाशी सिर्फ़ आम घरों में ही हो रही थी और नाम चीन लोगो के लिए खुफ़िया जाल फैलाया जा रहा था ।

हालात काफी खराब हो चुके हैं। खुफिया तौर पर हबीब इब्ने मज़ाहिर, मुस्लिम बिन औसजा, असदी, अबू सम्माम सैय्यदी, अब्दुल्लाह बिन यज़ीद, काबाह बिन शाहब वगैरह ने जंग की तैयारी शुरू कर दी। अबू समामा को असलहे इकठ्ठा करने का ज़िम्मा सौंपा गया मुस्लिम औसजा ने रकम जमा करने का बीड़ा उठाया। बाकी लोगो ने अवाम से खुफिया तौर पर मिलना शुरू किया इब्ने ज़ियाद अपने जासूसों के ज़रिए इन सब पर निगाह रखे हुए था क्यूकी हबीब इब्ने मज़ाहिर हज़रत हुसैन के काफी करीबी माने जाते थे इस लिए उनपर कोई खुफिया नज़र नहीं रखी गई यह एक चाल के तेहत था, ताकि मज़ाहिर मुतमइन रहे। इब्ने ज़ियाद ने अपने खुसूस गुलाम मुतवक्कल को ३००० दिरहम देकर एक चाल चली, मुतवक्कल ने दो दिन लगातार मस्जिद-ए-कुफा में नमाज़ पढ़ी और उसने दूसरे दिन मुस्लिम बिन औसजा से कहा की मैं शाम का कारोबारी हूँ और यहां कारोबार के सिल सिले में आया हूँ और मैंने सुना है की खानदान-ए-रसूल का एक शक्स फरजंद-ए-रसूल की तरफ से बैत ले रहा है, मैं भी बैत करना चाहता हूँ और ३००० दिरहम उन्हें देना चाहता हूँ क्यूकी आपके जिम्मे रकम जमा करना था तो आप सोच में पड़ गए और कहा मैं नहीं जानता हूँ किसी और से पूछे। मुतवक्कल ने कहा आप मुझे सबसे ज्यादा नेक और परहेजगार नज़र आ रहे हैं इस लिए मैंने आप से ही पूछना मुनासिब समझा, अपनी तारीफ सुनकर औसजा खुश हो गए और उसे अपने साथ हानि के घर ले गए। मुतवक्कल दिन भर मुस्लिम बिन अकील के साथ रहता और रात में दिन भर का हाल-चाल इब्ने ज़ियाद को बताता।

इब्ने ज़ियाद ने हानि को अपने पास बुलवाया क्यूकी हानि के तालुकात पुराने थे तो हानि उससे मिलने चले गए अब यह खुदा ही जाने की १२००० शमशिरो के साए चलने वाल शक्स तन्हा कैसे चला गया। दरबार में पहुंचते ही इब्ने ज़ियाद का बिगड़ा हुआ रूप देख कर हानि को अपनी गलती का एहसास हो गया। पहले तो उन्होंने मुस्लिम बिन अकील की मौजूदगी का इनकार किया

लेकिन जब मुतवक्कल की गवही सामने आई तो कहने लगे की वह बिन बुलाए मेरे घर आ गया है मैं जाकर उसे भगा दूंगा ।

इब्ने ज़ियाद ने कहा नहीं तुम्हे उसे मेरे हवाले करना होगा, हानि ने जवाब दिया ताकि तू उसे कत्ल कर दे । इस बात पर ज़ियाद ने हानि की पिटाई करवाई और कैद खाने में डाल दिया । जब यह खबर अवाम में पहुंची की हानि शहीद कर दिए गए तो उनके कबिले वालो ने गवरनर हॉउस घेर लिया १२००० जवान हाथ में तलवार लिए तैनात थे और उस वक्त महल में ३०० सिपाही थे । इब्ने ज़ियाद ने हालात को देखते हुए अपने सिपेसलार मुहम्मद बिन अशअस के ज़रिए यह कहलाया की किसी मोतवर इंसान को भेज कर दिखवालो की हानि मरे है या जिन्दा । काज़ी शर-राह इस काम के लिए भेजा गया । इब्ने ज़ियाद ने कहा काज़ी अगर तुम अपनी आल की हिफाज़त चाहते हो तो वहां जाकर कह दो की हानि जिन्दा है वर्ना एक बहुत बड़ा लशकर शाम से आ रहा है और बागी कुफियो के साथ तुम भी मारे जाओगे, तुम्हे मेरी तरफ से अमान रहेगी अगर मेरा कहा मानोगे, काज़ी शर-राह ने सोचा की मैं पहले ही से हुकूमत का गुनेह गार हूँ क्युकी मैंने मुस्लिम बिन अकील के बच्चो को पान्हा दी है, ऐसा ना हो की तलाशी के दौरान मेरे घर वाले मारे जाए तो उसने बाहर निकलकर अवाम से कहा के हानि ठीक ठाक है और हुकूमत ने अपनी करवही की वजह से नज़रबन्द कर दिया है अब यह भी खुदा ही जाने की १२००० शमशीर ज़न अपने मालिक को देखे बिना एक काज़ी की बात पर राज़ी हो गए और वापस लौट गए । जब हानि की गिरफ्तारी की खबर मुस्लिम बिन अकील को लगी तो उन्होंने घर छोड़ कर बाहर निकल आए मस्जिद-ए-कुफा के बाहर एक छोटी सी तक्ररि करके आप बामुश्किल ६००० का लशकर जुटा पाते हैं और महल का घेराव कर लेते हैं । छोटी सी जंग छिड जाती है लेकिन यह क्या ६००० का लशकर बामुश्किल ३०० का रह गया क्युकी लशकर के नाम पर जो शक्स थे उन्होंने जंग देखि ही नहीं थी, क्युकी यह नारे लगाना चीखना ही जानते थे और निहत्ते भी थे । ३०० जो बचे थे उनकी भी औरते

बच्चो का वास्ता देकर खीच कर ले गई। इधर ज़ियाद की फ़ौज ने पूरे शहर की नाका बंदी कर रखी थी और महल की तरफ आना मना था। अब्दुल्लाह इब्ने ज़ियाद और कहाब बिन शाहब को गिरफ्तार कर लिया गया हबीब इब्ने मज़ाहिर घर में कैद कर लिए गए, मुस्लिम बिन औसजा भी नज़रबंद हो गए, मुख्तार और सुलेमान शहर में नहीं थे, कबीले हानि और कबीले मुराद बिन सय्यार के थे। अब तन्हा मुस्लिम बिन अकील कुफे की गलियों में भटक रहे हैं अब सारे दरवाज़े बंद हो चुके हैं भूखे प्यासे भटकते हुए एक चबूतरे पे बैठ जाते हैं।

बनी कन्धा की एक ज़इफा तव्वा अपने बेटे बिलाल का दरवाजे पर खड़ी इन्तेज़ार कर रही है। उसकी नज़र एक ज़ख्मी शक्स पर पड़ती है, पूछती है बेटा तुम कौन हो यहां क्यों बैठे हो। आप फरमाते हैं मुझे थोड़ा पानी मिलेगा, वह जाईफा पानी पिलाती है और कहती है की शहर की फिज़ा सही नहीं है तुम चले जाओ। तो आप फरमाते हैं मैं हज़रत हुसैन का भाई मुस्लिम बिन अकील हूँ, मुस्लिम का नाम सुनते ही वह जाईफा आपको अन्दर बुलाकर अपने कमरे में बिठा लेती है। जब जाईफा का बेटा वापस आत है तो वह अपने बेटे को सारा वाकिया पेश करती है। तो उसका बेटा आँखों में हसीन ख्वाब लिए सारी रात सो नहीं पाता है और सुबह होते ही मुहम्मद बिन अश-अस को चन्द दौलत के बदले पता बता देता है। अभी सूरज चढ भी नहीं पाया था की मुहम्मद बिन अशअस ८० सिपाहियों के साथ मुस्लिम बिन अकील को घेर लेता है अब मुस्लिम बिन अकील को जौहर दिखाने का वक्त था, एक ज़बरदस्त जंग होती है और उसमे मुस्लिम बिन अकील गिरफ्तार हो जाते हैं। ज़ियाद के सामने मुस्लिम बिन अकील को पेश किया जाता है और बाहुकुम-ए-ज़ियाद के मुस्लिम बिन अकील को महल से नीचे फेक दिया जाता है और बाद में इनकी गर्दन काट ली जाती है। हानि बिन औसजा को भी कत्ल कर दिया जाता है। दोनों की गर्दने नेजे पर और दोनों के पैरो में रस्सियां बाँध कर घसीटा जाता है। १८००० कूपी जिन लोगो ने बैत की थी आज तमाशबीन बने है यह वाकिया ९ जिल हिज सन ६० हिजरी का है।

मुस्लिम बिन अकील की शहादत के बाद इब्ने ज़ियाद ने फ़रज़न्दे मुस्लिम बिन अकील की खोज शुरू की और यह ऐलान किया की जो बच्चो को ढूँड कर लाएगा उसे ढेर सारे इनाम दिए जाएंगे। जब यह खबर काज़ी शराह को पहुंची तो उसने दोनों बच्चो मुहम्मद और इब्राहीम से कहा की कुफे में रहना दोनों के लिए खतरा है। इस लिए तुम लोग मदीने चले जाओ। काज़ी ने अपने बेटे असद से कहा की शहर से बाहर एक काफिला जो आज रात मदीने जाने वाला है। तुम दोनों को उनके हवाले कर दो। लेकिन असद जब बच्चो के साथ पहुंचा तो काफिला जा चुका था, दूर से जाते हुए काफिले की रौशनी नज़र आ रही थी। असद ने कहा तुम उस रौशनी के सहारे काफिले से मिल जाओ. दोनों मासूम बच्चे अकेले उस रौशनी के सहारे चल दिए। लेकिन कुछ देर बाद रौशनी गुम हो गई। खौफ ज़दा बच्चे अल्लाह को याद करते हुए आगे बढ़ रहे हैं, किधर जा रहे हैं उनको खुद नहीं मालूम, रेगिस्तान की सर्द हवाए, दिलो को चीरने वाला सन्नाटा, कलेजे पर बाप का ज़ख्म, कूफियों की दगा, लेकिन एक खुशी काज़ी का वह खत जो उसने हज़रत हुसैन के नाम लिखा था जो इस तरह था “ए हुसैन कूफियों ने आपके साथ धोखा किया है और आपके भाई मुस्लिम बिन अकील को ज़ियाद ने क़त्ल कर दिया है, आपके चंद चाहने वाले कैद खाने में कैद है, आप यहां नहीं आए, बेशक हमारे दिल तो आपके साथ है लेकिन हमारी तलवार आपके खिलाफ, हानि बिन अवराह का क़त्ल भी हो गया है, मुस्लिम और हानि की लाशे कुफे के दरवाजे पर लटका दी गई है और दोनों के सर यज़ीद के पास भेज दिए गए हैं, मैं शरमिन्दा हूँ की मैं आपके भतीजो की हिफाजत नहीं कर सका और मासूमो को तन्हा ही मदीने खाना कर दिया”।

लेकिन खत पर काज़ी ने अपना नाम और दस्तखत नहीं किये उसको डर था की अगर यह खत पकड़ा जाएगा तो इब्ने ज़ियाद उसका भी क़त्ल कर देगा।

दोनों बच्चे रात भर रेगिस्तान में तन्हा चलते रहे और जब सुबह नमूदार हुई तो उन्होंने अपने को कुफे के करीब पाया यानी आधा घेरा बनाकर फिर कुफे में आ गए क्युकी रात के अंधेरे में बच्चो को सिम्त का पता नहीं चल पाया । कुफा तकर्रीबन ३३ X १७ फरसक (मील) में फैला था यहां पर बच्चो ने एक कुए के किनारे पेड़ को देखा अपने को बचाने के लिए दोनों बच्चे पेड़ पर चढ़ कर छुप गए सुबह-सुबह जब कनीज़ हबीबा कुए पर पानी भरने पहुंची तो उसने कुए के पानी में २ खूबसूरत चेहरे देखे जो काफी मासूम थे । उसने निगाह ऊपर करी तो देखा फूल जैसे मुरझाए हुए दो बच्चे हैं और कनीज़ को देख रहे हैं । लेकिन कनीज़ ने उनको अनदेखा किया और भाग कर अपनी मालकिन को बताया, मालकिन शियाने अली थी, दौड़ कर उस कुए के पास गई और बच्चो को अपने साथ ले आई लेकिन उसके शौहर ने दोनों बच्चो को इब्ने ज़ियाद के हवाले कर दिया । बच्चो को कैद खाने में डाल कर खबर कर दी । इब्ने ज़ियाद ने यह खुशी की खबर दमिश्क में बैठे यज़ीद को भेज दी ।

कैद खाने का दरोगा जिसका नाम "मशहर" था और वह भी शियाने अली था उसने रात के अंधेरे में दोनों बच्चो को आज़ाद कर दिया और एक अंगूठी देकर कहा की तुम लोग कद्दासिया चले जाओ वहां मेरा भाई अब्दुल्लाह रहता है उसको अंगूठी देना वह तुमको मदीने तक पहुंचा देगा । अब इसे किस्मत की खराबी या अल्लाह की मरज़ी कहिए दोनों बच्चे भूखे प्यासे रात भर भागते रहे लेकिन सुबह अपने को फिर कुफे की सरहदों पर पाया, सहमे हुए दोनों बच्चे जो थक कर चूर हो चुके थे एक जाईफा के घर में पनाह लेते हैं । जाईफा ने दोनों बच्चो को खाना खिलाया और तसल्ली दी और घर के उपरी हिस्से पर हिफाज़त से छुपा दिया । रात में जाईफा का शौहर हारिस बिन अरवा घर पहुंचा तो औरत ने पुछा तुम बड़े परेशान लग रहे हो और आज बहुत रात में आए हो क्या बात है ?! उसने बताया की कैद खाने के दरोगा ने मुस्लिम के बच्चो को कैद खाने से

भगा दिया है और ज़ियाद ने बतौर सज़ा ५०० कोढ़े दारोगा को मारने का हुकूम दिया था, जिससे उसकी मौत हो गई। मैं अब कुफे के कैद खाने का नया दारोगा हूँ, मुझे बच्चो को तलाशने का काम सौंपा गया है। इसकी बीबी ने तमाम दलीलों के साथ समझाने की बहुत कोशिश की मगर यह अपनी जिद पर अड़ा रहा।

सुबह होने से २ घंटे पहले बच्चो की सिसकियों की आवाजें आने लगीं जिस वजह से हारिस की आंखे खुल गईं और उसने दोनों बच्चो को कैद कर लिया और पुछा तुम कौन हो ?! बच्चो ने जवाब दिया हम मुस्लिम इब्ने अकील के बेटे हैं यह सुनते ही हरिस खुश हो गया और बच्चो को खम्बे से बाँध कर इतने थप्पड़ मारे के बच्चे लह लोहान हो गए जब उसकी जौजा ने रोकना चाहा तो उसको भी ज़ख्मी कर दिया और जब उसका अपना बेटा बचाने आया तो उसको भी क़त्ल कर दिया, जब गुलाम बीच में पड़ा तो उसके हाथ काट दिए, ना जाने इनाम का लालच अपनों से भी नफरत पैदा कर देता है। क्या ऐसा शक्स रसूल के मज़हब वाला हो सकता है ?! क्या वह खुदा से डरता है ?! नहीं नहीं हरगिज़ नहीं यह तो उन बुत परस्तो से भी गया गुजरा होता है जो बेजान पत्थरो को नेहला धुला कर अपना भगवान मानते हैं। वाह रे कुफे वालो तुम इस्लामी हुकूमत में एक धब्बा हो, तुम मुस्लिम इब्ने अली के कातिल हो, आले नबी के खून के प्यासे हो, तुम इंसान नहीं बल्कि इंसान की खालो में भेडिये हो, शैतान हो।

आज की सुबह यानी ११ जिलहिज ६० हिजरी हज़रत हुसैन अपने सैकड़ो साथियों के साथ कुफे के रास्ते में हैं फज़र की नमाज़ के बाद काफी परेशान हैं, कोई अनहोनी वारदात उन्हें सता रही है, कानो में फ़रज़न्द-ए-अकील के बच्चो के रोने की आवाज़ आ रही है क्यों न आए खम्बे से बंधे यह बच्चे रो-रो कर अल्लाह को याद कर रहे हैं, मदद के लिए रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को बुला रहे हैं, अली को बुला रहे हैं, चचा हसन को बुला रहे हैं।

हारिस दोनों बच्चो को लेकर नहरे फुरात की तरफ चला जाता है। लाख मिन्नतो के बाद हारिस नहीं मानता आखिर में बच्चे रो-रो कर नमाज़ की इजाज़त मांगते हैं। हारिस कहता है की अगर नमाज़ तुम्हे बचा पाए तो पढ लो। जैसे ही नमाज़ खत्म होती है और बच्चे बारगाहे इलाही में हाथ बुलंद करते हैं वैसे ही हारिस की तलवार बड़े भाई मुहम्मद का सर तन से जुदा कर देती है, छोटा भाई इब्राहीम दौड़ कर सर को उठा लेता है और चीख चीख कर रोता है। हारिस मुहम्मद की लाश को पानी में फेकता है, लेकिन लाश डूबती नहीं है, शायद अपने भाई का इंतज़ार कर रही है, बाद में हारिस इब्राहीम का सर काट कर लाश पानी में फेकता है दोनों लाशे आपस में चिपट जाती है और फुरात में गर्क हो जाती है। नहरे-ए-फुरात खुद रो रही है लेकिन उसको यह नहीं मालूम की अभी उसे बहुत कुछ देखना है। हारिस सरो को लेकर ज़ियाद के पास जाता है, इब्ने ज़ियाद नूरानी सर देख कर खौफ से खड़ा हो जाता है और हारिस से कहता है तुम्हे तरस नहीं आया, फिर वह अपने गुलाम मकातिल के हाथो दोनों सर उसी मुकाम पर डलवा देता है, जहां लाशे डाली गई थी। सिरों के पानी में पड़ते ही दोनों लाशे फिर नमूदार होती है और अपने सर के साथ कमायत तक के लिए नहरे फुरात की सतेह में गायब हो जाती है। दोनों बच्चो का सुबह का ख्वाब कितना सच हुआ के उनके वालिद मुस्लिम बिन अकील कह रहे हैं कुछ देर के बाद तुम मेरे पास आने वाले हो।

३ जिलहिज ६० हिजरी आबिस बिन अबी शबीब के हाथो जो खत हज़रत मुस्लिम बिन अकील ने हज़रत हुसैन को भेजा था वह हज़रत हुसैन को मिला आप तो इसी खत के इंतज़ार में थे, आनन फानन में जनाबे मारिया क़िबतिया के घर में एक मीटिंग बुलाई गई और उसमें हज़रत हुसैन ने अपने खास लोगो से कुफा जाने की बात कही इस पर अब्दुल्लाह बिन अब्बास, मुहम्मद हनफिया बिन अली, अब्दुल्लाह इब्ने उमर, उमर बिन अब्दुल रहमान, अब्दुल्लाह बिन जाफ़र, अब्दुल रहमान बिन हर्ष वगैराह वगैराह ने आपको कुफा जाने के लिए मना किया। आपने कहा के

मैं कहीं भी जाऊँ, मैं जिंदा नहीं बचूँगा। यहां तक अगर मैं बिलों में भी छिप जाऊँ तो भी यह हमें
दूंड निकालेंगे, हमारे कुफा जाने में मरज़ी-ए-खुदा है। मुहम्मद हनफिया अगर तुम हमारे साथ नहीं
भी आते तो मैं तुम्हारे लिए जन्नत की गवाही देता हूँ। जल्दी जल्दी हज़रत हुसैन ने हज को उमरे
में बदला लोग यह कहते रहे अय हुसैन पूरी दुनिया से लोग चलकर मक्का आ रहे हैं और आप
हज से २ रोज़ पहले मक्का छोड़ रहे हैं। अपने साथ साथ आप अपने चाहने वालों के भी हज
छुडवा रहे हैं। लेकिन हज़रत हुसैन ने इसकी कोई परवाह नहीं की क्यूकी आप जानते थे की
हाजियों के लिबास में ३०० से ऊपर यज़ीदी सिपाही मक्के में मौजूद है वह आपको काबे के पास,
कुरबानी के मुकाम पर, मकामे इब्राहीम पर कहीं भी क़त्ल कर सकते हैं और हज़रत हुसैन यह भी
जानते थे की उनका क़त्ल करबला में होगा। लेकिन उनके क़त्ल के बहाने काबे में खून बहेगा
और जहां पर खून बहना हराम है। काबे की बेहुरमती होगी और आने वाले वक्त में लोग यहीं
लिखेंगे की इस बेहुरमती के जिम्मेदार सिर्फ हज़रत हुसैन थे। ८ जिलहिज ६० हिजरी को हज़रत
हुसैन ने सैकड़ों लोगों के साथ बाद-ए-मगरिब मक्का को खुदा हाफ़िज़ कहा। कितना खुश हो रहे
होंगे वह सर कटे बुत ज़मिदोश मूरतियाँ, के जिसके नाना ने हमें काबे से बाहर फेका, आज उन्हीं
की उम्मत के चन्द लोगों ने उनके नवासे हज़रत हुसैन को हज से मेहरूम कर दिया। कितना रो रहे
होंगे रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की मेरे पुरखों का वतन आज मेरे फरजंद को
राहे क़त्ल की तरफ बढ़ने को मजबूर कर रहा है, कितनी बेचैन होगी एक माँ की जिसके फरजंद
को खुदा के घर में भी पनाह ना मिल सकी, कितने ताज्जुब में होगी एक बाप की रूह की जो काबे
के अन्दर पैदा हुआ जिसके लिए दीवार-ए-काबा खुद चाक हुई, उसी के लाडले फरजंद हज़रत
हुसैन को काबे से कोई मदद नहीं मिली, क्या खुदा का इम्तिहान इतना सख्त होता है। मुझे याद
आ रहा है वह अपना वक्त किस तरह मैं अपना पहला उमरा करने सन २००४ में गया था और जब
मैं संगे-अस्वद का तवाफ़ करने गया, तो कैसे भीड़ ने मुझे रास्ता दे दिया और मैं उस अज़ीम पत्थर

से जा कर चिपक गया, जैसे उसने मुझे खींच लिया हो। लेकिन उसी अज़ीम पत्थर ने खानदान-ए-रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के साथ वैसा सलूक नहीं किया। लेकिन संगे-अस्वद ने एक वादा ज़रूर किया के “ऐ हज़रत हुसैन मैं बा हुक्म-ए-खुदा से आपको तो नहीं खींच सका लेकिन जो भी आपसे होगा आपका चाहने वाला होगा आपके खून से होगा उसे मैं लाखों की भीड़ में से भी खींच लूँगा और मैं खुद उसे बोसा करूँगा”। अब अगर नुसरत आलम जाफ़र यह दावा करे की मैं हुसैन से हूँ। तो यह गलत नहीं होगा और जिन जिन लोगों के साथ यह वाकिये हों वह भी अपने को मेरी तरह ही समझे और जिनके साथ यह वाकिया ना पेश आया हो वह अपने हज या उमरे को सिर्फ.....

१ जिलहिज ६० हिजरी को जैसे ही वालिये मक्का उमर बिन सईद को खबर लगी की हज़रत हुसैन मक्का छोड़कर जा चुके हैं। वह परेशान हो गया क्यूकी उसको यज़ीद का हुक्म था की किसी भी तरीके से तुम्हे हज़रत हुसैन को मक्के में ही रोक कर रखना है। तो उसने फ़ौरन अपने भाई याहया बिन सईद के साथ ५०० की फ़ौज हज़रत हुसैन को रोकने के लिए भेज दी फ़ौज ने हज़रत हुसैन का रास्ता रोका। लेकिन आज हज़रत हुसैन सैकड़ों लोगों के साथ है और साथ में कुफे वालों के साथ देने का वादा। एक छोटी सी जंग होती है और याहया बिन सईद हारकर वापस चला जाता है, यह वही दिन है के एक तरफ हज़रत हुसैन जंग कर रहे हैं और एक तरफ उनेक भाई मुस्लिम बिन अकील क़त्ल हो रहे हैं। जिनके वादे के भरोसे हज़रत हुसैन ने जंग जीती कुफे में वही लोग बैत तोड़ चुके हैं।

हज़रत हुसैन अपने काफिले के साथ आगे बढ़ते हैं, १३ जिलहिज को “तमीम” नाम की जगह पर खेमा जन हो जाते हैं। आप यहां से कुछ ऊट फरोक्त करते हैं, कुछ ज़स्री सामान वगैराह इक़ठा करते हैं, इससे यह बात साबित होती है की हज़रत हुसैन ने इतनी जल्दी मक्का छोड़ा की

वह जस्री सामान तक मुहैया ना करा सके । तमीम वही मुकाम है जहां हज़रत हुसैन ने अपने भाई मुस्लिम बिन अकेल के नाम एक ख़त लिखा और उसे अब्दुल्लाह बिन यकतर के हाथो कुफे रवाना कर दिया । ख़त का मौजू इस तरह था “बाद सलाम मुस्लिम तुम्हारा ख़त हमको मिला जो मेरे दिल में डर था वह दूर हो गया मैं बहुत जल्द कुफे पहुंचूंगा और तुम हमारी तरफ से लोगो से बैत लेते रहना” ।

कुफे में दाखिल होते ही **अब्दुल्लाह बिन यकतर गिरफ्तार** हो गए, ख़त के साथ-साथ उन्हें इब्ने ज़ियाद के सामने पेश किया गया, इब्ने ज़ियाद ने ख़त पढ़ा और कासिद से कहा की तुम्हारी एक शर्त पर जान बच सकती है की तुम महल की छत पर खड़े हो कर कुफे की अवाम से हज़रत हुसैन की बुराई करो और यज़ीद के कसीदे पढ़ो, अब्दुल्लाह बिन यकतर राज़ी हो गए और उन्होंने महल (कसरे अमराह) की छत पर जा कर कहा “ऐ कुफे वालो हज़रत हुसैन हक़ पर हैं और तुम्हारा हर एक का फ़र्ज़ बनता है की तुम उनकी आवाज़ पर लब्बैक कहो, और येज़ेदी हुकूमत को उखाड़ फेको, हज़रत हुसैन जल्द ही कुफे आने वाले हैं, वह मक्का छोड़ चुके हैं”, नतीजतन अब्दुल्लाह बिन यकतर को महल से नीचे फेक दिया गया और उनका सर कलम कर दिया गया, इब्ने ज़ियाद से यहां पर एक गलती हो गई की जो खबर उसे पोशीदा रखना चाहिए थी वह अवाम में फैल गई । कुफे का माहौल एक बार फिर बिगड़ गया ।

तमीम के मुकाम पर **अब्दुल्लाह बिन जाफ़र** अपने दोनों बेटे **औन और मुहम्मद** के साथ आते हैं और उनके साथ में याहया बिन सईद भी आता है, अब्दुल्लाह बिन जाफ़र एक इज्जतदार नामचीन बहादुर और दबदबे वाले शक्स थे । इसी बिन्हा पर उन्होंने उमर बिन सईद से मिलकर हज़रत हुसैन के नाम अमान-नामा लिखवा लिया था जो याहिया बिन सईद के हाथो से, हज़रत हुसैन तक पहुंचा और उसमे मक्का वापस आने की पेश-कश की गई थी । हज़रत हुसैन ने इसके

जवाब में कहा “मरकजी हुकूमत के आगे एक शहर के गवरनर की अमान कोई माईने नहीं रखता क्युकी मरकजी हुकूमत ही मेरे खिलाफ है और गवरनर के हटते ही उसका अमान-नामा कोई माईने नहीं रखता” ।

मैं केहना चाहूँगा की हज़रत हुसैन का सोचना कितना सही था, यज़ीदी शरियतो के सामने खलीफा एक बादशाह होता है और बादशाह का हुकम शरियत होता है, चाहे वह जायज़ या नाजायज़ हो, इस्लामी शरियत के सामने खलीफा एक शरियत पर मुकम्मल अमल करने वाला एक शक्स होता है जो मुसलमान कहलाता है और शरियत में हर मुसलमान बराबर का हकदार होता है, चाहे अमान एक सिपाही ने दी हो चाहे सिपेसलार ने । चाहे ज़बान एक खलीफा ने दी हो चाहे खुद रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने सब बराबर । मुझे याद आ रहा है मक्का फ़तेह का वह दिन की जब **अब्बास बिन अबू तालिब**, अबू सुफियान को अमान देकर रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) से मिलवाने लाते हैं क्युकी रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की निगाह में अबू सुफियान फ़तेह मक्का से पहले हर जंग का जिम्मे दार था और जिकसी वजह से हज़ारो मुसलमानों का खून बहा था । **खुद रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम)** के चचा हज़रत हमज़ा शहीद हुए थे और जिनकी शहादत का दिन हम शब-ए-बरात की शकल में **मनाते हैं**, जिसकी वजह से हज़रत अली का एक हाथ टूटा था, जो रसूल के २ दांत टूटने का सबब बना, अबू सुफियान जानता था की मेरी माफ़ी मुमकिन नहीं है लेकिन क्युकी अमान एक मुसलमान ने दी थी इस लिए रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने अबू सुफियान को अमान दे दी और साथ में यह भी ऐलान किया की जो भी अबू सुफियान के घर में पनाह लेगा उसे भी अमान है । यह है असली इस्लामी शरियत, लेकिन मैंने यज़ीदी शरियत की भी एक मिसाल देखि जब मुस्लिम बिन अकील को मुहम्मद बिन अशअस ने घेरा तो मुस्लिम बिन अकील इब्ने ज़ियाद के

सामने जाने को राज़ी नहीं हुए और वह अपनी जान बचाने के लिए कुफियो को मदद के लिए आवाज़ देने लगे, तो मुहम्मद बिन अशअस ने उनको जान की अमान का वादा किया और वह उनको इब्ने ज़ियाद के सामने ले गया, जब इब्ने ज़ियाद ने मुस्लिम बिन अकील को कत्ल करने का हुक्म दिया तो मुस्लिम ने कहा मुझे जान की अमान मिल चुकी है और इसपर मुहम्मद बिन अशअस ने हामी भरी, इसपर इब्ने ज़ियाद ने मुस्लिम से कहा की एक आमिल के सामने एक सिपेसलार की अमान कोई माईने नहीं रखती ।

जब हज़रत हुसैन मक्का जाने को राज़ी नहीं हुए तो अब्दुल्लाह बिन जाफ़र सेहत ठीक ना होने की वजह से वापस लौट गए और अपने दोनों बच्चो को हज़रत हुसैन के पास छोड़ दिया । हज़रत हुसैन ने तमीम में ज़्यादा वक्त स्कना मुनासिब नहीं समझा और वहां से आगे बढ़कर **“जस्त”** नाम की जगह पर खेमा जन हुए । अभी तो हुसैनी काफिले में जोश और ढेर सारी उम्मीदें हैं और क्यों ना हो कुफे की पूरी अवाम आपके साथ है और यज़ीद जैसे फासिर और फाज़िर (व्यभिचारी और बलात्कारी) को हटाने का जज्बा । लेकिन हुसैनी काफिले में अभी कुछ ऐसे भी लोग हैं जो हज़रत हुसैन के लाख मना करने के बावजूद काफिले में शरीक हो गए थे, कुछ तो हुक्मत में ऊँचे ओहदे की लालच में और कुछ माल-ए-गनीमत लूटने के चक्कर में थे । इसी मकाम पर हुसैनी खेमो से चन्द दूरी पर जुहैर इब्ने कैन भी खेमा जन थे जो अपने एहलो अवाल के साथ हज से लौटकर कुफे जा रहे थे ।

जनाब जुहैर इब्ने कैन, इब्ने कैस, अरमारी जबली यू तो उस्मानी शिया थे और जब माविया और हज़रत अली से जंगे सिफ्फिन हुई थी तो आप माविया की तरफ थे इस लिए अभी यह उस्मानी शिया हैं आप जैसे ही खाना खाने के लिए बैठे ही थे की आपके गुलाम ने खबर दी के हज़रत हुसैन ने आपको बुलाया है । हज़रत हुसैन का नाम सुनते ही आप चौक गए और खाना

छोड़कर खड़े हो गए क्योंकि यह तो हज़रत हुसैन के खून के प्यासे हैं, इनकी जौज़ा बलहम बीनते उमर ने इनसे कहा जईए आप हज़रत हुसैन से मिलिए, आप जाते हैं और हज़रत हुसैन से थोड़ी गुफ्तगू के बाद अल्वी शिया बन जाते हैं। आप लौटकर आते हैं अपनी बीबी को तलाक देते हैं और अपने एहलो अवाल को कुफे की तरफ जाने का हुक्म देते हैं और अपनी जौज़ा से कहते हैं की आज मैं बहुत खुश हूँ मुझे याद आ रहा है अपना वह दिन जब इस्लामी फ़ौज ने “बलखज़र” पर चढ़ाई की थी और हम फ़तेह आब हुए थे तो मैं बहुत खुश हुआ था, हमारी यह खुशी देख कर जनाब सुलेमान फारसी ने कहा था की तुम उस दिन ज़्यादा खुश होगे जब अपने को फ़रज़न्दे नबी के साथ जंग में देखोगे, यक्रीनन मैं आज बहुत खुश हूँ।

जनाब जुहैर इब्ने कैन कुफे के रईस और शुजा थे। आप आशूरे के दिन तक हज़रत हुसैन के साथ कदम से कदम मिलाते रहे, आप करबला के शहीदों में अब्वलो में गिने जाते हैं।

हज़रत हुसैन जस्त के मुकाम से चलकर “सलाविया” के मुकाम पर स्कते हैं। यहां आपकी मुलाकात अब्दुल्लाह इब्ने सलीम मंज़री असदी से होती है। जनाब सलीम हज़रत हुसैन से मुलाकात करके कुफे की तरफ बढ़ जाते हैं, रास्ते में उनकी मुलाकात बकीर बिन मस-अबा असदी से होती है, क्योंकि आप दोनों एक ही कबिले बनी असद के थे। तो जनाब अब्दुल्लाह ने बकीर से कुफे के हाल चाल पूछे, बकीर ने बताया की मुस्लिम और हानि का क़त्ल हो चुका है। आप यह खबर सुनकर वापस हज़रत हुसैन के पास आते हैं और तन्हाई में मुस्लिम और हानि की शहादत की खबर सुनाते हैं। यह सुनते ही हज़रत हुसैन के मुह से तीन बार “इनालिल्लाहे वा इनाइलैहे राजिऊन” लेकिन हज़रत हुसैन ने इस बुरी खबर को काफिले से पोशीदा रखा लेकिन जब खेमे में गए और हज़रत मुस्लिम की सहाबजादी स्कय्या बीनते मुस्लिम (उम्र १० साल) पर आपकी नज़र पड़ी है तो नाम आँखों से उसे गले लगाया और उसके सर पर हाथ फेरने लगे। हज़रत जैनब यह

मंजर देख रही थी तो उन्होंने कहा क्या मुस्लिम शहीद हो गए?। हाँ में जवाब सुनते ही खेमो में कोहराम मच गया हज़रत हुसैन ने मुस्लिम के भाईयों से कहा की क्या इरादा है?। उन्होंने कहा हम अपने भाई का बदला लेंगे हज़रत हुसैन समझ गए की वह और उनके काफिले वाले जो सोच कर आगे बढ़ रहे हैं वह मुमकिन नहीं है, उसी रात हज़रत हुसैन ने सलाविया छोड़ कर “जबाला” नाम के मुकाम पर कयाम किया, २२ जिलहिज ६० हिजरी हो चुकी है और हमारा कलम करबला से सिर्फ ८ दिन की दूरी पर है। लेकिन यहां से हमारी इस किताब की शुरुआत हो रही है। जबाला के मुकाम पर हज़रत हुसैन को कैस बिन मज़हर और अब्दुल्लाह बिन यकतर की शहादत की खबर मिली। हज़रत हुसैन ने अब अपने काफिले को बताना ही ठीक समझा, हज़रत हुसैन ने इशा की नमाज़ के बाद एक ख़ुत्बा दिया।

“हमे खबर मिली है की मुस्लिम बिन अकील और हानि बिन अरवा, कैस बिन मज़हर, अब्दुल्लाह बिन यख़्तर शहीद कर दिए गए हैं, कुफे वाले बैत से मुकर गए हैं, यूँ समझ लो की हम आगे बढ़ रहे हैं और मौत हमारे पीछे आ रही है, तुमसे जो भी मुझे छोड़ कर जाना चाहे वह जा सकता है, यज़ीदी सिर्फ हमारे दुश्मन हैं, वह तुम्हारी जाने बक्श देंगे”।

और जब सुबह का सूरज नमूदार हुआ तो हुसैनी काफिला आधे से भी कम रह गया था और जब हज़रत हुसैन ने मुकामे जबाला छोड़ा तो यह बचा हुआ काफिला आधे से भी आधा रह गया था। बा-मुश्किल ५० अफ़राद कुछ बच्चे, बनी हाशिम, और आले हरम और कुछ नहीं।

हज़रत हुसैन को यह तो मालूम था की वह मौत की तरफ बढ़ रहे हैं। क्युकी उनके ज़द रसूल-ए-ख़ुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की पेशीनगोई थी। अब लोगो का यह केहना की हज़रत हुसैन ने जान बूझकर अपने को जोखिम में डाला। अगर मान लेते हैं हज़रत हुसैन मदीने में शहीद कर दिए जाते तब यही आलिम यह कहते की हज़रत हुसैन को मदीना छोड़कर मक्का चले

जाना चाहिए था। और अगर मक्के में शहीद हो जाते तो फिर कहते की कुफे वाले बुला रहे थे तो मक्का क्यों नहीं छोड़ दिया, और सबसे अजीम बात की हज़रत हुसैन अकेले क़त्ल हो जाए तो फिर यह हज़रत हुसैन का ज़ाती मसला बन जाता। लेकिन करबला में जो वाकिया पेश आया उसने यह सब सवालों के जवाब दे दिए। अब चाहे किसी भी फिरके का आलिम हो वह हज़रत हुसैन की तरफ उँगली नहीं उठा सकता और मजबूरन यज़ीद को बातिल लिखता है।

जबाला से चलकर हज़रत हुसैन का काफिला “बतने अकीक” (उक्बा) पहुंचता है यहां पर आपकी मुलाकात उमरू इब्ने लोज़ान अकरमी से होती है। जो कुफे से आ रहा होता है, वह बताता है की **“कदासिया”** और **“अजीब”** के रास्तो पर नाका बंदी हो चुकी है आपका आगे बढ़ना ठीक नहीं है। इब्ने ज़ियाद ने रईस कुफियों को लालच देकर अपने साथ मिला लिया है और जो चन्द आपके चाहने वाले थे उनको गिरफ्तार कर लिया है, और जो गरीब तबका है उनके दिल तो आपके साथ है, लेकिन तलवारे आपके खिलाफ। हज़रत हुसैन ने उमरू को दुआ-ए-खैर दी और आगे बढ़ गए, हुसैनी काफिले ने सफ़र-ए-सिम्त बदला और दमिश्क की तरफ मुड़ गए, शब सेहरा में बसर की और वहीं आपने मुहर्रम ६१ हिजरी का चाँद देखा।

सुबह फज़र की नमाज़ के बाद आपका काफिला आगे बढ़ा और सूरज चढ़ने से कुछ देर पहले “शराफ” पहुंच गए। १ मोहर्रम ६१ हिजरी हो चुकी है। आपने अपने काफिले को पानी के ज़खीरे का हुक्म दिया। हज़रत अब्बास ने फरमाया की हम सब पानी से लबरेज़ हैं तो फिर ज़खीरा क्यों, हज़रत हुसैन ने कहा यह अल्लाह की मरज़ी है। और इतना पानी इक़ठा करो की एक पूरा लश्कर पानी पी सके खैर काफिला आगे बढ़ा और रेगिस्तान में दाखिल हो गया तेज़ गर्म हवा के झोंके, धूल का उड़ता हुआ गुबार आपका इस्तेक़बाल कर रहा है। महबिलो में बैठी हुई औरतें खौफ़ ज़दा हैं। अचानक किसी अस-हाब ने तकबीर बुलंद की। आपने कहा बेशक खुदा सबसे

बड़ा है और हम उसकी मरजी पर ही आगे बढ़ रहे हैं, हज़रत अब्बास ने कहा हमे सामने नकलिस्तान (हरा भरा मैदान) दिखाई पड़ रहा है, लेकिन कुछ ही देर के बाद वह हरे भरे पेड़ सब्ज परचमो में बदल गए। यहां तक अब तो साफ़ घोड़े ही नज़र आने लगे। हज़रत अब्बास ने कहा मौला कोई लश्कर है जो हमारी तरफ आ रहा है. हज़रत हुसैन ने फ़ौरन ही अपने काफिले को किसी आड़ में जाने का हुक्म दिया जिससे वह अपनी पीठो को बचा कर सामने से हमला कर सके या हमले का जवाब दे सके। थोड़ी दूरी पर **“जौहशम”** की सूखी पहाडियां नज़र आ रही थी। काफिला फ़ौरन उसी की तरफ चला गया, अभी खेमे गढ़ भी नहीं पाए थे यज़ीदी फ़ौज का १००० का दस्ता जिसके सिपेसलार **हर बिन यज़ीद अर-रियाही** थे। यह फ़ौजी दस्ता प्यास से परेशान और बदहाल था, यहां तक की घोड़े हाफ रहे थे, लडना तो दूर, सही तरीके से खड़े भी नहीं हो पा रहे थे। हज़रत हुसैन ने हर से पुछा क्यों आए हो ?! हर ने कहा आपको घेर कर कुफे पहुंचाने। हज़रत हुसैन ने अस-हाबो को हुक्म दिया के इन सब को पानी पिला दो, **सबील-ए-हुसैनी** लगाई गई और इन्सानों के साथ-साथ जानवरों को पानी से लबरेज़ कर दिया गया। हर को हज़रत हुसैन ने अपने हाथो से पानी पिलाया। जुहेर बिन कैन ने हज़रत हुसैन से कहा मौक़ा अच्छा है हम लोग इनको क़त्ल कर देते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। इस पर और भी असहाब राज़ी थे, मगर हज़रत हुसैन ने इनकार कर दिया, क्युकी वह (हर) इतना कांप रहे थे की पानी का कुजा मुह तक नहीं ले जा पा रहे थे।

हर इब्ने यज़ीद कुफे के एक बहादुर और रईस खानदान के थे और पूरे कुफे में कोई ऐसा बहादुर ना था, जो इनके सामने आकर जंग कर सकता। इनके चचा **जैद बिन उमर बिन कैस** जिनको अहवज के नाम से जाना जाता था मदीने के नामी शकसियत थे और रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के एक बड़े सहाबी।

हज़रत हुसैन ने हेजान बिन मसरूफ अर-मत हजि को ज़ोहर की अज़ान का हुक्म दिया ।

हेजान एक अच्छे खानदान के कूफी थे और मक्के से ही हज़रत हुसैन के साथ थे । आप हज़रत अली के असहाबो में थे और जंगे सिफ्फ़ीन में बहादुरी का कारनामा दिखाया था । आप आशूरे तक हज़रत हुसैन के साथ-साथ रहे और जंगे कर्बला में १५० लोगो का क़त्ल करने के बाद यज़ीदी फ़ौज के हाथ शहीद हुए ।

अज़ान के बाद हज़रत हुसैन ने हर से कहा तुम नमाज़ हमारे साथ पढ़ोगे या अपनी जमात अलग बनाओगे, हर ने हामी भरी और हुसैन के पीछे पूरे यज़ीदी लश्कर ने नमाज़ अदा की । नमाज़ के बाद हज़रत हुसैन ने एक छोटा सा खुत्बा दिया “तुमने हमे ख़त लिख कर बुलाया है हम अपनी मरज़ी से नहीं आए हैं, अगर तुम चाहते हो तो मैं वापस चला जाता हूँ, लेकिन हर ने इसपर कोई जवाब नहीं दिया और अनसुना कर दिया” ।

बरहाल असर की नमाज़ का वक्त हुआ और सब ने मिलकर एक बार फिर हज़रत हुसैन के पीछे नमाज़ पढ़ी और हज़रत हुसैन ने फिर वही खुत्बा दिया लेकिन अब हर अपने को रोक ना पाए और कहा आप किन ख़तो की बात कर रहे हैं, मैं किसी ख़त के बारे में नहीं जानता । हज़रत हुसैन ने हज़रत अब्बास को हुक्म दिया के हर को ख़त दिखाओ, फ़ौरन ही दो बड़े ग़टर हर के सामने उडेल दिए गए, हर ने कहा आप मेरा यकीन मानिए यह ख़त हमने नहीं लिखे और ना ही लिखने वाले को जानता हूँ । हज़रत हुसैन ने अपने काफिले को वापस मदीने चलने का हुक्म दिया । जैसे ही काफिला मदीने वापसी को रवाना हुआ और चन्द कदम आगे बढ़ाए हर की फ़ौज ने रास्ता रोक लिया । हज़रत हुसैन ने कहा हर हमारे रास्ते से हट जाओ वरना हम तुमसे जंग करेंगे यह सुन्ना था और हुसैनी काफिले की आवाज़ बुलंद हो गई और तलवारे चमकने लगी और वह सब हर से जंग करने को अमादा हो गए, हर ने कहा मुझे आपसे जंग करने का कोई हुक्म नहीं मिला और मैं बिना

हुक्म के आपसे जंग नहीं कर सकता, मेरा काम सिर्फ आपको घेर कर कुफे ले जाना है, लेकिन हुसैनी लश्कर जंग पर अमादा था क्यूकी लश्कर को लग रहा था की अभी फौज कम है हम जंग करके मदीने जा सकते हैं। लेकिन हज़रत हुसैन अपनी तरफ से जंग की शुरुआत नहीं करना चाहते, हज़रत हुसैन मदीने वापस जाना चाहते थे और हर उन्हें कुफे लेजाना। खैर बातचीत के ज़रिए आखिर कार यह मसला तय हुआ की ना तो हुसैनी लश्कर मदीने की सिम्त जाएगा और ना ही कुफे की सिम्त, क्यूकी हज़रत हुसैन दमिश्क की सिम्त यानी शाम का सूख इख्तियार कर चुके थे, इस लिए उसी तरफ बढ़ना शुरू किया धीरे-धीरे यह लश्कर मुकामी अजीब-हजानात से थोड़ा तक पहुंच गया हर का लश्कर साथ साथ चल रहा है, क्यूकी दिन पूरा ढल चुका है, तो इसी मुकाम पर शब गुजारना तय पाया। यहां पर कुफे से आते हुए ४ हज़रात आपसे मिलते हैं और साथ में ही टिकने की ख्वाहिश जाहिर करते हैं। हर ऐतराज़ करते हैं की यह लोग आपके साथ नहीं रह सकते इसपर हज़रत हुसैन यह कहते हैं की तुम्हारे पास इस तरह का कोई हुक्म आया है या पहले ही से है, हर खामोश हो जाता है ना जाने क्यों सबील-ए-हुसैन का एहसान हर को खामोश होने पर मजबूर कर देता है। जो ४ लोग मिले वह इस तरह है :-

१) **मजमाऊ बिन अब्दुल्लाह अलआन** थे आपके वालिद अब्दुल्लाह साहाबीए रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) में थे। आपका शुमार कुफे के रईस लोगो में था हज़रत अली की खिलाफत में आपने हज़रत हुसैन को बहुत करीब से देखा और समझा था। जब आपको खबर लगी के हज़रत हुसैन कुफे आ रहे हैं लेकिन कुफे के रास्ते इब्ने ज़ियाद ने तंग कर दिए हैं। तो आप छुपते छुपाते अपने ३ साथियो के साथ रवाना हो जाते हैं। आपकी शहादत आशूरा को जंग-ए-मक्बूला में हुई।

२) **उमर बिन खालिद-अल-सेयादी** आप कूफी थे और अल्वी शिया थे जब इनको अबू समामा ने हज़रत हुसैन के “नरगे” नाम की जगह में घिरे होने की खबर दी तो आप उनके लश्कर में शरीक होने के लिए निकल पड़े आपकी शहादत आशूरा को हुई आपने तन्हा जंग की और काफी बहादुरी से लड़े ।

३) **अबू समामा उमरू बिन अब्दुल्लाह अल सेयादी-** आप कूफी थे और आपने मुस्लिम बिन अकील के लिए हथियारों का ज़खीरा जमा करने का ज़िम्मा लिया था, आप बड़े बहादुर थे जब आप हज़रत हुसैन से मिले तो आपने मुस्लिम बिन अकील का पूरा वाकिया हज़रत हुसैन से बताया । रोज़े आशूरा जब इब्ने ज़ियाद का एक गुलाम पैगामे इब्ने ज़ियाद लेकर हज़रत हुसैन से मिलना चाहता था तो आपने ही कहा था की तुम तलवार लगा कर हज़रत हुसैन के सामने नहीं जा सकते काफी बहस के बाद वह गुलाम बिना पैगाम दिए वापस चला गया आप काफी बहादुरी से लड़े और कैस बिन अब्दुल्लाह के हाथो शहीद हुए ।

४) **जनादा बिन हरस अल सलमानी** आप अस-हाबे अली थे, आप कुफे के रईस और इज्जत दार घराने से थे, आप रोज़े आशूरा को काफी बहादुरी से लड़े और वापस लौटकर हज़रत हुसैन के सामने आए और सवाले आब किया, हज़रत हुसैन ने कहा अब हौज़े कौसर का ही पानी पीना, साकी-ए-कौसर, जामे आब लिए फिरदौस में तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं । आप जंग करने चले जाते हैं और शहादत को गले लगाते हैं ।

१ मुहर्रम की शब हज़रत हुसैन ऊनुदगी (ऊंग) में आ गए और घबरा कर उठ गए, आपने अपने फरजंद अली अकबर को अपने पास पाया और कहा की बेटा अभी-अभी हमने एक ख्वाब

देखा है की जैसे मुझसे कोई कह रहा हो की तुम आगे आगे जा रहे हो और मौत तुम्हारे पीछे पीछे आ रही है। यह सुनकर अली अकबर ने फरमाया की बाबा जान क्या हम हक पर नहीं हैं। हज़रत हुसैन ने कहा के अगर हम हक पर नहीं होंगे तो कौन होगा, अली अकबर ने फरमाया की फिर हमे मौत का क्या डर, मौत हम पर आ पड़े या हम मौत पर जा पड़े।

आज की शब ना तो हुसैनी लश्कर सोया और ना ही लश्कर-ए-हर। हर को इस बात का डर था की कहीं अंधेरे का फायदा उठा कर कहीं हज़रत हुसैन चले ना जाए और हुसैनी लश्कर कल क्या होगा इसपर परेशान। इबादत में मशगूल २ मुहर्रम के नूर में दाखिल हो गया। दोनों लश्कर आगे बढ़ते हैं अभी दोपहर होने में तकरीबन तीन घंटे बाकी है। बनी कस मकातिल के मुकाम पे पहुंच जाते हैं। इसी मुकाम पर हर को इब्ने ज़ियाद का पैगाम मिलता है “इस पैगाम के मिलते ही तुम जहां भी हो हुसैनी लश्कर को वहीं पर रोक दो और इस बात का खयाल रखना की जहां पर तुम लश्कर को रोको वह जगह बे-आबो-दाना होना चाहिए”।

हर ने हज़रत हुसैन को रोकने का हुक्म दिया लेकिन हज़रत हुसैन हर के साथ बातों में मशगूल हो कर आगे बढ़ते जा रहे हैं, हर बार-बार हज़रत हुसैन से स्कने की इल्तेजा कर रहा है, लेकिन हज़रत हुसैन उसकी अन सुनी कर रहे हैं लेकिन अचानक हज़रत हुसैन का घोड़ा स्क जाता है, लाख कोशिशों के बावजूद घोड़ा आगे नहीं बढ़ता यहां तक हज़रत हुसैन ने ६ घोड़े बदले लेकिन कोई भी आगे नहीं बढ़ा। हज़रत हुसैन ने दरियाफ्त किया की यह कौनसा मुकाम है, किसी ने कहा “नैनवा” किसी ने कहा “दस्ते बला” किसी ने कहा “शन्ते फुरात” दूर से एक मुकामी कबिले बनी असद के एक बुजुर्ग शक्स ने बताया इसे “कर्बला” भी कहते हैं। कर्बला उस मुकाम का नाम है। जो दुनिया के खल्क होने से २ मुहर्रम ६१ हिजरी तक ना तो वहां कोई आबाद हुआ और ना तो कोई अनाज पैदा हुआ। सिवाए तकरीबन १ महीने तक हज़रत नूह (अलैहे

सलाम) ने वहां कयाम किया था और ज़र्द आंधियों ने उनके खेमे उखाड़ फेके थे। आखिर परेशान हो कर उन्होंने यह मुकाम छोड़ दिया था। क्यूकी ईराक की तहज़ीब इस दिनिया की सबसे पुरानी तहज़ीब है। जिसे दुनिया **“मुसोपोटानिया”** के नाम से जानती है तो यकीनन कर्बला के रास्ते से लोगो का आना जाना लगा रहता था क्यूकी यही रास्ता हिन्द और चीन को मिलाता था। यूं तो कर्बला का हल्का कई छोटे छोटे गांव से मिलकर बना है जैसे **नैनवा, साफिया, गजिरा, शते फुरात, तिफ़, दस्ते बला**। इसलिए कर्बला को इन नामो से भी जाना जाता है और यह गाँव इतने पास-पास थे की एक गांव का वाकिया दूसरे गांव से मनसुख हो जाया करता था।

दरिया-ए-फुरात यूं तो कर्बला से काफी दूर है लेकिन इसकी एक शाख जिसे **अलकमा** कहते हैं और अलकमा को ही **नेहर-ए-फुरात** कहते हैं जो कर्बला से होकर कुफे तक जाती है यह कर्बला के चटियल मैदान में नीले पानी की लकीर नज़र आती है, चन्द टीले एक नशेब की तरफ थे जिसका नाम **“हैर”** था यहीं पर हज़रत हुसैन की कब्र मुबारक बनी है और अब इसे **“हायर”** के नाम से जाना जाता है कर्बला में तमाम शहीदों के रोज़े ५ मील के दायरे में फैले हुए हैं। हज़रत हुसैन ने **“गजराहा”** गाँव से जहां बनी असद का कबीला आबाद था उन लोगो को बुलवाया क्यूकी यही कबीला इस ज़मीन का मालिक था, चन्द शर्तो के साथ हज़रत हुसैन ने ६०,००० दिरहम पर १६ मुरब्बा मील (mile square feet) का हिस्सा उनसे खरीद लिया और शर्तो के बाद उन ही को वापस कर दिया। इस लिए कर्बला की ज़मीन हुसैनिया के नाम से भी जानी जाती है।

हज़रत हुसैन ने कुछ मिटटी जो अपने साथ लाए थे और कुछ मिटटी कर्बला की उठाकर दोनों को सूँघा और फ़रमाया बेशक यह वही मिटटी है जो जिब्राइल (अलैहे सलाम) ने हमारे नाना

जान को दी थी, फिर दोनों मिट्टी को आपस में मिलाकर उसे फैला दिया गया और यह फरमाया की यहीं हमारी कब्र बनेगी उसके बाद आपने कबिले बनी असद के मर्दों से कहा की चन्द रोज़ के बाद हम सभी लोग कत्ल कर दिए जाएंगे तुम आकर हमारी लाशो को दफन कर देना, फिर उनकी औरतो की तरफ मुखातिब होकर बोले अगर तुम्हारे मर्द ऐसा करने से डरे तो तुम उनकी हौसला अफजाई करना, फिर बच्चो की तरफ पलटे और कहा ऐ बनी असद के बच्चो अगर तुम्हारे माँ बाप हमे दफन ना करे तो तुम हमारी लाशो के पास आकर खेलना और खेल खेल में एक एक मुट्टी मिट्टी लाकर हमारी लाशो पर डाल देना, कम से कम हमारी लाशो को मिट्टी तो नसीब हो जाएगी। आपका ख़ुत्बा अभी ख़त्म भी नहीं हो पाया था की एक पीले रंग की आंधी ने आपका इस्तेकबाल किया ऐसी जोरदार धूल भरी आंधी आपने इससे पहले कभी ना देखि थी। दूर शहर से एक बीबी की रोने की आवाज़ आंधी की आवाज़ों को भी चीर रही थी जब आंधी ख़त्म हुई तो हुसैनी लश्कर का हर फर्द (इंसान) घबराया हुआ और परेशान लग रहा था। हज़रत हुसैन की बहन हज़रत ज़ैनब ने हज़रत हुसैन से कहा भैया यह कैसा मुकाम है यहां तो किसी बीबी के रोने की आवाज़ भी आ रही है हम यहां नहीं ठहरेंगे। हज़रत हुसैन ने कहा ज़ैनब तुमने नहीं पहचान ? वह आवाज़ हमारी तुम्हारी वालिदा हज़रत फात्मा ज़हेर की है और हम यहीं पर मुकाम करेंगे।

नेहर के किनारे खेमे गाड़े जाने लगे लेकिन "हर" ने ऐतराज़ किया खेमे नेहर से दूर गाड़े जाए इसपर हज़रत अब्बास को गुस्सा आ गया और उन्होंने अपनी तलवार से एक लकीर खेमे के आगे खींच दी और कहा अगर हिम्मत हो तो लकीर को पार करके दिखाओ। लेकिन हर हिम्मत ना कर सका, हज़रत हुसैन से लाख समझाने के बावजूद हज़रत अब्बास नहीं माने और जंग पर आमदा हो गए। अब्बास जिन्होंने बचपन से आज तक हुसैन को आका कहा और उनकी हर बात को हुक्म माना, यहां तक के हज़रत हसन के लाशे पर जब तीरों से हमला हुआ था तब भी उन्होंने सब्र किया, क्युकी हज़रत हुसैन ने मना किया था। मदीना छोड़ा अब्बास का सब्र साथ में

है, मक्का छोड़ा लेकिन सब्र ना छूटा, मुस्लिम और उनके बच्चो पर आंसू बहाए लेकिन तलवार ना उठाई, हर ने रास्ता बदलवाया लेकिन अब्बास ने अपना रुख नहीं बदला, क्युकी हज़रत हुसैन का हुक्म था, लेकिन आज वही वफादार अब्बास है और वही आका बस अगर कुछ नहीं है तो सब्र-ए-अब्बास, जब हज़रत हुसैन ने देखा के अब्बास को समझाना मेरे बस का नहीं है तो बहन ज़ैनब को आवाज दी, ज़ैनब ने अब्बास को कई बार अपने पास बुलाया लेकिन वह नहीं आए, तो ज़ैनब ने यह कहा के अब्बास से कहदो के अगर वह नहीं आते है तो उनकी बहन ज़ैनब खुद वहां आ जाएगी। अब्बास यह कहाँ बर्दास्त कर सकते थे के हाशिम खानदान की औरते ना-महरम के सामने आए लेकिन मैं कहूँगा ए-अब्बास आपकी बहन परदे में आना चाहती थी लेकिन आपको गवारा नहीं हुआ, लेकिन आपके बाद यही ज़ैनब बेपर्दा..... अब्बास ने तलवार मयान में रखी और पीछे हट गए। खेमे नहरे फुरात से हटाकर ३ मील दूर गाड़े गए।

इस पूरे वाकिये की जानकारी हर ने अब्दुल्लाह इब्ने ज़ियाद को भेज दी के हमने हुसैन और उनके लश्कर को कर्बला में घेर लिया है और अब वह यहां से कहीं नहीं जासकते। इस बीच हज़रत हुसैन ने एक खत हबीब इब्ने मज़ाहिर को आज ही खाना कर दिया जो इस तरह है “हबीब मैं कर्बला पहुंच चूका हूँ और यहां फौजों ने हमे घेर लिया है, तुम तो जानते हो की नाना जान से हमारा क्या रिश्ता है देखो अगर तुम अपना खून बहाओगे तो रोज़े हशर में रसूल -ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) से इसकी जज़ा मिलेगी” ।

जब यह खुफिया खत कासिद कुफे लेकर पहुंचा तो हबीब इब्ने मज़ाहिर खिज़ाब खरीद कर ला रहे थे। खत पड़ते ही उन्होंने खिज़ाब फेक दिया और कासिद से कहा अब यह बाल मैं अपने खून से रंगुंगा, हबीब अपने घर पहुंचे और अपनी बीबी को बता ही रहे थे की आपके चचा ज़ाद भाई अब्दुल्लाह आ गए। क्युकी हबीब को यह अच्छी तरह मालूम था की अब्दुल्लाह

ज़ियाद के करीबी लोगो में से है और उसे मुझपर निगरानी रखने को इब्ने ज़ियाद ने ज़रूर कहा होगा, तो उन्होंने अपनी बीबी से कहा मैं नहीं जाने वाला मैं कर्बला क्यों जाऊँ मैं बगावत क्यों करूँगा। उनकी बीबी ने कहा ठीक है तुम मेरी चादर ओढ़ लो और छुप कर बैठ जाओ लेकिन हबीब अपनी बात पर अड़े रहे और कहने लगे की मैं अपने बच्चो को और तुम्हे छोड़ कर कैसे जा सकता हूँ। आप कि बीबी ने कहा “मैं धूल खा कर जी लुंगी तुम मेरी परवाह नहीं करो हबीब और खामोश हो गईं”। शायद हबीब अपनी बीबी के मूह से यही सुन्ना चाहते थे। लेकिन इब्ने ज़ियाद का डर उन्हें ऐसा बोलने पर मजबूर कर रहा था। वह कहते रहे की मैं नहीं जाऊँगा यह कहकर अपने भाई के साथ खाना खाया और उसी के साथ बातो बातो में घर से बाहर आ गए। जब उनका भाई चला गया तो आपने गुलाम से कहा की तुम कुफे के बाहर मेरा इंतज़ार करो, गुलाम चला गया आप सीधे मुस्लिम बिन औसजा के घर गए और उनसे पूरा वाकिया बताया, मुस्लिम तो इतने शुजा (बहादुर) निकले फ़ौरन अपने बेटे, जौजा, गुलाम के साथ कर्बला चलने को निकल पड़े, हबीब से कहा तुम आते रहना मैं तो चला। इधर हबीब का गुलाम कुफे के बाहर हबीब के घोड़े के साथ इंतज़ार में है, की कब उनका आका आए और कर्बला पहुंचूँ। इस दरमियान अन्धेरा घना हो रहा है, लेकिन हबीब अभी तक नहीं पहुंचे। अब गुलाम घोड़े से बात करने लगा के अगर मेरे आका नहीं आएंगे तो उनकी जगह मैं जाऊँगा, हबीब ने यह बात सुनी क्युकी वह पीछे पहुंच चुके थे गुलाम को दुआए खैर दी और उसको आज़ाद किया और उसी तारीक में कुफे को खुदा हाफ़िज़ कर कर्बला की तरफ चल दिए। रास्ते में मुस्लिम बिन औसजा से आपकी मुलाकात हो गई।

इधर कुफे में इब्ने ज़ियाद को इस बात का डर था की जब हज़ारो आदमी मुस्लिम बिन अकील की बैत कर सकते हैं, तो कहीं वह एक होकर बगावत ना कर दे और उसने जिन जिन पर

शक था उनको या तो मरवा दिया या कैद खाने में डलवा दिया, मशहूर असहाबे अली **“मिसम तैयार”**, **“रशीद हाजीर”**, वगैरह को क़त्ल करवा दिया। मुख्तार बिन अबू उबैदा अब्दुल्लाह बिन हारिस जैसे पैसे वाले और ताकत वर शख्सियतों को कैद खाने में डलवा दिया यहां तक कुफे के कैद खाने लबरेज़ हो गए।

मिसम तैयार का ज़िक्र आया तो मुझे उनका एक वाकिया याद आ गया की वह किसी की मोहब्बत में हज़रत अली का सर लाने को राज़ी हो गए थे और इसी नियत से वह कुफे आए लोगो से दरियाफ्त किया करते थे, तो पता चला की हज़रत अली मस्जिद-ए-कुफा में मिलेंगे तो आप वहां पहुंच गए उनको मस्जिद से कुछ दूर एक शक्स मिला जो नकाब पोश था (अरब का ढंग था की वहां लोग नकाब डालकर चला करते थे) मिसम ने पुछा ऐ शक्स क्या तुमने अली को देखा है, क्या तुम मुझे वहां पहुंचा सकते हो। उस शक्स ने कहा तुम्हे अली से क्या काम है मिसम ने कहा मुझे जंग करना है और उनको क़त्ल करना है, क्या मैं वजह पूछ सकता हूँ। मिसम ने कहा नहीं तुम सिर्फ उनका पता बताओ।

हज़रत अली ने कहा क्या तुमने इसके पहले अली को देखा है, तुमको उनकी कद काठी के बारे में पता है, क्या तुम्हे उनकी शुजात का अंदाजा है, उस शक्स ने कहा नहीं, हज़रत अली ने कहा की अली की कद काठी बिलकुल मेरी तरह है, शुजात में उनसे थोडा कम हूँ, तो पहले तुम मुझको हराओ, अगर तुम मुझसे जीत गए तो समझो तुम अली से भी जीत जाओगे। जंग शुरू हो जाती है मिसम हार जाते हैं। तब अली कहते हैं मेरा ही नाम अली है और मैं चाहता हूँ तुम मेरा सर काटकर अपनी मुहब्बत हासिल करलो, यह कहकर वह नीचे बैठ गए और अपने चेहरे से नकाब हटा दिया, चेहरा देखते ही मिसम की नफरत मुहब्बत में बदल गई और वह आपके कदमों में गिर पड़े और धीरे धीरे वह वक्त आया की मिसम की गिनती मुहब्बतानी अल्वी में होने लगी यहां तक

हज़रत अली के साथ जा रहे है रास्ते में एक दरख्त दिखा, हज़रत अली ने मिसम से कहा की ऐ मिसम तुमको इसी दरख्त पर सूली दी जाएगी। वक्त गुजर गया मिसम अपने दोस्तों के साथ उसी दरख्त के पास से गुजर रहे हैं देखते हैं की वह पेड़ सूख रहा है। आप फ़ौरन उस पेड़ को जाकर पानी देने लगते हैं। दोस्त पूछते हैं के क्या माजरा है आप पूरा वाकिया बयान करते हैं और कहते है की मैं इसे इस लिए सीच रहा हूँ की कहीं मेरे मौला का कौल गलत ना हो जाए चुनांचे आपको उसी पेड़ पर सूली दी गई।

इब्ने ज़ियाद को जब हर का खत मिला तो उसने सबसे पहले उमरे बिन साद बिन अबी विकास को अपने पास तलब किया क्युकी अज़म की हुकूमत में बगावत हो चुकी थी और उमर बिन साद ४००० का लश्कर लेकर कूच कर चूका था और कुफे के बाहर खेमा जन था, बगावत कुचलने के बाद उसे "रै" की हुकूमत का गवरनर बनाने का फरमान था उमरे साद फ़ौरन ही ज़ियाद के सामने हाज़िर होता है। इब्ने ज़ियाद उसे कहता है की कत्ले हुसैन की मुहिम शुरू हो गई है और मैं तुमको इस काम के लिए भेज रहा हूँ पहले हज़रत हुसैन को कत्ल करो फिर अज़म के लिए जाना, यह सुनकर उमरे साद ताज्जुब में आजाता है और कहता है क्या ?। हज़रत हुसैन का कत्ल मैं नहीं कर सकता बेहतर हैं आप मुझे अज़म जाने दे क्युकी मैं और मेरी फ़ौज अज़म जाने का इरादा कर चुके हैं मेरे नज़दीक कर्बला जाना दुस्त नहीं, इब्ने ज़ियाद ने कहा ठीक है तुम "रै" का फरमान वापस करदो और चले जाओ, लाख कोशिशो के बाद भी इब्ने ज़ियाद राज़ी नहीं हुआ और रै की हुकूमत का फरमान वापस मांगता रहा, क्युकी रै की गवरनरी का अरमान उमरे साद के दिल में अरसे से था और वह किसी भी हालत में इसे छोड़ना नहीं चाहता था इस लिए उसने इब्ने ज़ियाद से १ रात की मोहलत मांगली और पूरी शब अपने दोस्तों अज़ीज़ो से इसी बात पर मशवरा लेता रहा सब लोग उसे कत्ले हज़रत हुसैन से दूर रहने का मशवरा देते रहे यहां तक

दूसरा दिन हो गया और इब्ने ज़ियाद के सामने हाजरी का वक्त भी आ गया उमरे साद ने आखरी कोशिश की और उसने इब्ने ज़ियाद से कहा बेहतर यही होगा आप मुझे अज़म जाने दे मुझसे कहीं ज्यादा अकल मंद और ताकतवर लोग आपको मिल जाएंगे कितनो के नाम तो मैं भी जानता हूँ कहिए तो मैं बताऊँ। इब्ने ज़ियाद बिगड़ गया और कहा की मैं तुमसे पूछकर काम नहीं करूँगा तुम रै का फरमान वापस करो मैं देख लूँगा।

उमरे साद हज़रत हुसैन को अच्छी तरह से जानता था, वह उनके खून से अपने हाथ रंगना नहीं चाहता था, वह खूब बड़ बड़ाया मैं रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को क्या मूह दिखाऊँगा, मैं जहन्नूम में जाना नहीं चाहता, फिर पलटा ना जाने मुझे जन्नत मिलेगी या नहीं दुनिया के लिए आखिरत का सौदा। फिर कहा रे की गवरनरी मेरा जूनून है और मैं उसे लेकर रहूँगा, आखिरत का क्या भरोसा और वह कर्बला जाने को तैयार हो गया। २००० के लश्कर के इज़ाफे के साथ ६००० का लश्कर लेकर ३ मुहर्रम शाम होने से पहले कर्बला पहुंच गया, इस लश्कर के पीछे शीस बनी रबई की ज़ेरे निगरानी में २४००० का शामी लश्कर जो कुफे में खेमा ज़न था पहुंच गया, यहीं ३ मुहर्रम को यज़ीदी लश्कर ३१००० तक कर्बला में जमा हो चूका था।

इधर इब्ने ज़ियाद ने बसरा और मदियन के रास्तो पर नाका बंदी कर दी थी, के किसी भी तरह की मदद कर्बला तक ना पहुंचने पाए कुफे और शाम और कदासिया के रास्तो पर लश्कर दूर दूर तक फैला दिया था, यूँ समझ ले के कर्बला की तरफ हर आने वाले रास्ते बंद हो चुके हैं। अभी तो नहरे फुरात मौजे ले रही है, शायद उसको नहीं मालूम की जो मौजे खुशी से आज साहिल को छू रही है वह बहुत जल्द इसी साहिल पर अपना सर पटक कर क़यामत तक रोती रहेगी, मैं भी लिख रहा हूँ और धीरे-धीरे दूर से बहुत दूर से १४०० बरस बाद से यह वाकिया देखने की कोशिश कर रहा हूँ क्युकी मैं इतना दूर हूँ की बीच में हज़ारो आंधिया, हज़ारो रातो के अंधेरे, ढेरो दुनियावी

गरदीशो का गुबार, लाखो आलिमो कि कलम, करोडो दीमग चटे वरक, सड चुकी किताबो के बीच से मैं यह वाकिया देख रहा हूँ, तो यकीनन कुछ तकलीफ तो आएगी, फिर भी मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगा की जो आंखे रोज़ ना खत्म होने वाले आसमान में खुदा को ढूँड लेती है, तो उनके मुकाबले कर्बला तो बहुत करीब है। मैंने बुजुर्गों की जुबानी सुन रखा है की आज मैं जिस मुकाम पर रह रहा हूँ वहां से चन्द दूरी पर माहिम नाम की जगह पर मखदूम शाह बुजुर्ग की आराम गाह है और उनकी मज़ार शरीफ के कुछ पीछे समुन्दर में एक छोटी सी ज़मीन यानी टीला है जहां लगा हुआ झंडा साहिल से देखा जा सकता है, यानी यही वह मुकाम है जहां इन बुजुर्ग शख्सियत को हज़रत ख्वाजा खिज़र तालीम देने आया करते थे, मैं अपने बुजुर्गों की यह बात आज तक दबाए हुए जी रहा हूँ और मैं कोशिश करूँगा के जब इस किताब का मौजू १० मुहर्रम को पहुंचेगा शायद कर्बला का सबसे छोटा शहीद जो बाद में सबसे बुलंद हुआ मुझे कुछ बशारत दे। मैं इंतज़ार में रहूँगा क्युकी “मैं हुसैन से हूँ”।

उमरे साद ने कर्बला पहुंचते ही पहला काम यह किया की उसने हज़रत हुसैन को एक पैगाम भिजवाया क्युकी वह कोशिश यही कर रहा था की किसी तरीके से बिना खून खराबा हुए यह मसला खत्म हो जाए, उसने हज़रत हुसैन को पैगाम में यह कहलाया की तुम क्यों आए हो, हज़रत हुसैन ने जवाब में कहा मैं अपनी मरज़ी से कुफे नहीं आ रहा था मुझे खत लिख कर बुलाया गया है और अगर तुम चाहते हो तो हम वापस चला जाएंगे, उमरे साद को यह बात समझ में आई और उसने पूरा वाकिया लिख कर उसी वक्त इब्ने ज़ियाद की तरफ कासिद रवाना कर दिया।

हबीब इब्ने मज़ाहिर, मुस्लिम बिन औसजा कर्बला पहुंच चुके हैं हबीब को देख कर लश्कर-ए-हुसैनी में खुशी की लहर दौड़ गई, हज़रत हुसैन ने हबीब को गले लगाया और कहा मैं

तुमको दी गई जान वापस मांग रहा हूँ, खेमो में बीबीयां भी खुश है। हबीब ने आकर लश्कर में एक नई जान फूक दी, खैर हबीब ने अपनी जानिब बहुत कोशिश की यहां तक कबिले बनी असद के १० अफराद को जंग पर राजी कर लिया लेकिन उमरे साद की सख्ती की वजह से वह लश्कर मदद को ना पहुंच सका।

हबीब इब्ने मज़ाहिर २४ रबिउस्तानि ५ हिजरी में मदीने में पैदा हुए आपके वालिद रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के बेहतरीन सहाबा में थे यहां तक के रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) इनकी किसी बात को नहीं टालते थे अक्सर मज़ाहिर रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की दावत अपने घर पर किया करते थे और रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) हर दावत में जाते थे, एक दिन मज़ाहिर ने रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को दावत में बुलाया हबीब ने अपने वालिद से कहा की रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) से कहिए की अपने साथ हज़रत हुसैन को भी ले कर आए, उन्होंने कहा बेशक हमने हज़रत हुसैन को भी बुलाया है, यह सुनकर हबीब खुश हो गए और घर के बुलंद हिस्से पर चढ़ कर हुसैन की राह ताकने लगे, आप अचानक नीचे गिर गए और आपकी मौत हो गई, मज़ाहिर ने सोचा की कहीं रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की दावत में खलल ना पड़ जाए इस लिए मौत को पोशीदा कर दिया। रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) पहुंचे दस्तर ख्वान लगा, रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) और हज़रत हुसैन या हज़रत हुसैन और रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) या दोनों एक बैठ गए, हज़रत हुसैन ने मुस्कुराकर कहा मेरे दोस्त हबीब को बुलाइए काफी बहानो के बाद मज़ाहिर को यह बात रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को बतानी पड़ी के हबीब मर चुके हैं। लाश लाइ गई रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने हुसैन से कहा इसके लिए खुदा से दुआ करो, हुसैन ने नन्हे नन्हे हाथ बारगाहे इलाही में उठाकर अपने दोस्त को मांगा और हबीब

ज़िंदा हो गए. यूं तो कई बार रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने मुरदो को ज़िंदा किया लेकिन अल्लाह जाने की इस बार हज़रत हुसैन से क्यों कह दी ।

४ मुहर्रम की सुबह से कर्बला में फौजों का अम्बार लगना शुरू हो गए है । उमरे साद ने इब्ने ज़ियाद को हज़रत हुसैन का मकसद जो लिख कर भेजा था उससे उमरे साद मुतमइन था की यह जंग नहीं होगी लेकिन, इब्ने ज़ियाद के जवाब ने उसे परेशानी में डाल दिया, इब्ने ज़ियाद ने उमरे साद को लिखा की जब हुसैन मेरे चुंगुल में फस गए है, तब वह वापस जाने की बात कर रहे है, तुम उनसे कहो की वह पहले यज़ीद की बैत करे और जो लोग उनके साथ है वह भी यज़ीद की बैत करे, फिर आगे हम कोई राय कायम करेंगे, असल में इब्ने ज़ियाद को यह गुमान हो गया था की हमारी फौजो की तादाद देख कर हज़रत हुसैन घबरा गए हैं और वह वापस जाना चाहते हैं । लेकिन उमरे साद यह समझ रहा था और देख रहा था की हज़रत हुसैन और उनके लश्कर पर मौत का कोई खौफ नहीं और हज़रत हुसैन सिर्फ हुज्जत तमाम करने के लिए वापस जाने की बात कर रहे हैं, हुसैनी लश्कर आज के दिन अपने खेमे दुरूस्त करने में लगा हुआ है, तक़रीबन १५० खेमे हैं सबसे पहले बीच में औरतो के खेमे लगाए गए और उनको इस तरह से मिलाकर गाड़ा गया था की एक खेमे से दुसरे खेमे में बिना बाहर निकले जाया जा सकता था, उसके चारो तरफ अज़ीज़ो के खेमे लगाए गए, फिर अंसारो के खेमे और सबसे बहारी तरफ जांबाज़ अंसारो के खेमे लगाए गए । खेमो को देख कर ही अंदाजा लग जाता था की इनका सिपेसलार कितना होशियार है । हज़रत हुसैन ने अपना खेमा बीच में लगाया और सबसे बाहर की तरफ हज़रत हुसैन के सीपेसलार अलमबरदार अब्बास का था । खेमो में औरते परेशान हैं और वह समझ नहीं पा रही है की आगे क्या होने वाला है, शायद उनको अभी भी उम्मीद है के कोई न कोई रास्ता जरूर निकलेगा क्युकी यज़ीद इतना ज़ालिम नहीं हो सकता की वह अपने ही खानदान की एक शाख काट दे । क्युकी

हम मुसलमान के साथ साथ आल-ए-नबी हैं, अभी तो खेमो में पानी भी है और खाना भी, अब्बास के चेहरे पर मुस्कराहट है की सामने जो लश्कर है वह उनके लिए कुछ भी नहीं। जैसे जैसे दिन चढने लगा औराह बिन कैस की निगरानी में ६००० का लश्कर आ धमका, उसके पीछे पीछे सिनान बिन अनस ४००० का लश्कर लेकर नहरे फुरात के किनारे आ गया, जोहर की नमाज़ दोनों तरफ अदा की गई और नमाज़ के फ़ौरन बाद नईम इब्ने अज़लान अंसारी जो कूफी थे हज़रत हुसैन से आकर मिले आप हज़रत अली के साथ जंगे सिफ़िन और जंगे जमल में मौजूद थे, आपने जब सुना की हज़रत हुसैन कर्बला में आ चुके हैं, तो आप पहुंचे, आपकी शहादत आशूरे को पहले हमले में हुई। शाम होते होते एक और लश्कर हसीन बिन नोमान की निगरानी में कर्बला आ पहुंचा इस लश्कर में ६००० सिपाही थे। इस तरह ४ मुहर्रम की रात होते होते कर्बला के मैदान में ४७००० की फ़ौज जमा हो चुकी थी। मगरिब का वक्त शुरू होते ही खेमो के पीछे जंगल थे उनमें से एक औरत के रोने की आवाज़ ने सबको चौकन्ना कर दिया, आल-ए-हरम परेशान की आखिर यह क्या माजरा है और यह कौन बीबी है धीरे धीरे यह आवाज़ अंधेरा बढने के साथ साथ धीमी पड जाती है और धीरे धीरे रात की खामोशि कर्बला में छा-जाती है। हज़रत हुसैन अपने असहाबो के साथ बातों में मुबतिला, हैं अब्बास और उनके चन्द साथी पहरदारी पर हैं। उमरे साद की फ़ौज गोलाई बनाते हुए छितर कर फैल चुकी है। यानी खेमे बीच में और दूर से चारो तरफ यज़ीदी फ़ौज के सिपाही घेरे हुए हैं की जिससे रात में कोई मदद ना आ सके और हज़रत हुसैन चुपके से कर्बला ना छोड़ सके। लेकिन इन्ही दुश्मन के खेमो में एक ऐसा शक्स है जो जाग रहा है, इधर से उधर टहल रहा है और सोच रहा है के अगर जंग हुई तो उसका जिम्मेदार कौन होगा अभी तो खेमो में बच्चे सुकून की नींद सो रहे हैं, औरते मुतमईन है और एक दूसरी सुबह के इंतज़ार में है की कल क्या होगा। उमरे साद लाख फ़ौजों को फैला दे लेकिन हक़ ही तरफ आने वाले को कौन रोक सकता है। जिस कौम के रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) अपने दरवाज़े पर मौजूद ४०

शमशीर ज़न के बीच से निकल कर हक के रास्ते चले गए, तो यहां पर भी ऐसी ही बात है, हुसैनी खेमे की तरफ आने वाला हर शक्स हक पर है। इसी हक पर चलते हुए इमरान इब्ने काब अल आस जई हज़रत हुसैन से आकर मिलते हैं आप कूफी है। आप बड़ी बहादुरी से आशूरे को लड़े और शहीद हो गए।

५ मुहर्रम की फजर के फ़ौरन बाद कासिद बिन जुहेर अलतगलबी और कर्दूस बिन जुहेर अलतगलबी, हज़रत हुसैन से आकर मिले, आप दोनों सगे भाई थे आप हज़रत अली के असहाब और कूफी थे आप दोनों आशूरे को पहले हमले में शहीद हुए। आपके पीछे पीछे थोड़ी देर बाद खंजला बिन उमर अल शिबानी आकर आपसे मिले आप कुफे के रईसों में थे। जब आपको पता चला के हुसैन कर्बला में हैं तो आप छुपते छुपाते पहुंचे और आशूरे के पहले हमले में शहीद हो गए, आपके साथ कनाना इब्ने अतीक अलतगलबी जो कुफे के मशहर पहलवानो में से थे साथ आए और आशूरे के पहले हमले में शहीद हुए। आपसे थोड़ी देर के बाद उमर इब्ने सबीहा अल सबई और जरगामा इब्ने मालिके अशतर, दोनों उमरे साद की फ़ौज के साथ कर्बला आए थे बाद में आप अलग होकर हुसैनी खेमे में आ गए थे, दोनों शुरू ही से अल्वी शिया थे और बहाने से कर्बला आ गए थे, जनाब कनाना आशूरे को पहले हमले में शहीद हुए और जरगामा जो मशहर पहलवान भी थे और आलिम भी आशूरे को बड़ी बहादुरी से जंग की और तकरीबन ५०० लोगो को क़त्ल करके शहीद हुए। ५ मुहर्रम की सुबह सूरज को निकले तकरीबन २ घंटे हो चुके हैं अभी तो सब ठीक है, फौजे अपनी जगह मुस्तैद हैं और हुसैनी लश्कर जिसको अभी लश्कर नहीं कह सकते, यानी हुसैनी काफिला फौजों से घिरा तो है, लेकिन मुतमईन है, अभी कुछ देर पहले ही हज़रत अब्बास अपने चन्द साथियो के साथ नहरे फुरात से पानी लेकर आए हैं, आपने चन्द जानवरों को भी पानी पिला दिया है। लेकिन दूर से उड़ता हुआ गुबार करीब आता हुआ लग रहा है, शायद यह

कोई नया लश्कर हो, मैं बड़ा ताज्जुब में हूँ की एक छोटे से काफिले के लिए इतने लश्कर ?! फिर यह सोच रहा हूँ की लश्कर से कोई फरक नहीं पड़ता है, कोई न कोई रास्ता निकलेगा ।

मैंने सूना है की इसी नैनवा (कर्बला) में हज़रत इस्माईल अपने गोफन चराने आया करते थे और उनके सारे गोफन इसी नहरे फुरात के किनारे आकर पानी पिया करते थे लेकिन वह सब एक खुसूस घाट को छोड़ कर पानी पिया करते थे । यह खुसूस घाट उन घाटो से पहले पड़ता था, तो आपको बड़ा ताज्जुब होता था, आखिर एक दिन आप खुदा से पूछ बैठे, खुदा ने कहा इन्ही से पूछो जो घाट छोड़ दिया करते हैं, तो आप जानवरों की तरफ मुखातिब होकर पूछते हैं । मैं हाथ जोड़कर उनसे यह पूछना चाहूँगा के, “ऐ अल्लाह के नबी (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) एक बार इसी तरह का वाकिया औलादे आदम के भी सामने आ चूका है और आगे इसी तरह का वाकिया गैर नबी के साथ आने वाला है, हम इतना तो समझते हैं के गैर नबियों को कौवे, कुत्ते कुछ सिखाए कुछ बताए तो दुरूस्त है । लेकिन नबियों को जानवरों से पूछना पड़े अल्लाह ही जाने.....” खैर हज़रत इस्माईल के सवाल पर गोफंदो ने हज़रत की ही बोलि में जवाब दिया, की इस खुसूस घाट पर चन्द अल्लाह वाले भूखे और प्यासे क़त्ल किए जाएंगे और वह दिन ऐसा क़यामत का दिन होगा की यह खुसूस घाट क़यामत तक के लिए शरमिंदा हो जाएगा । तो आप ही बताइए की हम उस खुसूस घाट से पानी कैसे पी सकते हैं ।

हज़रत मूसा (अलैहे सलाम) जब दरिया-ए-नील के किनारे अपने ना-फरमान लश्कर के साथ फस गए और उनकी और उनके वालो की यह पानी सबब-ए-मित बन गया तो अल्लाह ने मूसा (अलैहे सलाम) से फ़रमाया ऐ मूसा घबराओ नहीं जब सैलाब ए नूह से हम नूह और उनके वालो को बचा सकते हैं तो यह दरिया-ए-नील का पानी मेरे आगे क्या है । मैं किसी और का इस दरिया के किनारे इसी नीले पानी से इम्तिहान लूँगा ।

जो गुबार दूर से नज़र आ रहा था अब करीब आ चुका है यह फौजी दस्ता शिम्न जियुश लोशन उर्फ शर्जिल बिन उमरू की निगरानी में जिसमे ४००० सिपाही थे, एक नए फरमान के साथ आया, इसी लश्कर के पीछे हज़र बिन हूर की निगरानी मे ४००० का लश्कर और आ गया।

शिम्न ने उमरे साद को इब्ने ज़ियाद का वह खुसूस खत दिया जिसमे हुसैनी लश्कर का पानी बंद करने का हुक्म दिया गया था। उमरे साद जो अभी तक जंग टालने के चक्कर में था पशो-पेश में आ गया और उसने यही खत हज़रत हुसैन को भिजवाया दिया। खत पढने के बाद हज़रत हुसैन के असहाबो को तैश आ गया और वह जंग पे अमादा हो गए, लेकिन काफी समझाने भुझाने के बाद वह खामोश हो गए। उमरे साद ने उमर बिन उश्शाम को ५०० सवारों के साथ नहरे फुरात के किनारों पर लगवा दिया जिस सिम्त हुसैनी खेमे थे। फिर दोपहर होते-होते शीस बिन रबई की निगरानी में ६००० का लश्कर और हज़र बिन हूर की सर परस्ती में ४००० का लश्कर खेमो और नहर के बीच हायल कर दिया, ठीक उसी वक्त नज़र बिन खरशा और रकाब बिन कलबी के साथ २०००-२००० का लश्कर कर्बला पहुंचा। इस तरह ५ मुहर्रम तक कर्बला की ज़मीन ५९००० यज़ीदी फ़ौज से भर चुकी थी। ठीक ५ दिन बाकी है आशूरे में यानी आज खम्सा है, बाज़ आलिमो ने ७ मुहर्रम से पानी बंद होना तहरीर लिखा है, लेकिन असल में ७ मुहर्रम से खेमो में मौजूद पानी खत्म हो गया था। ५ मुहर्रम की नमाज़-ए-ज़ोहर के बाद हज़रत हुसैन ने अपने साथियो को खुल्बा दिया की “दुश्मन हमारी हुज्जत को हमारी बुज़दिली और हमारी कमजोरी समझ रहा है। यकीनन दुश्मन जुल्म पर उतर आया है और बंदिशे आब इस जुल्म की इब्तिदा है”। इसपर हज़रत अब्बास इब्ने अली ने कहा हम कुआ खोद लेंगे। चुनांचे कुआ खोदने का काम शुरू हुआ तक्रीबन ७० हाथ कुआ खोदने के बाद भी पानी नहीं मिला, कुआ खोदने की खबर जब उमरे साद को लगी तब उसने शिम्न से राय मशवरे के बाद कुआ खोदने पर पाबन्दी लगा दी और अपने लश्कर को खेमो के

और करीब कर दिया ताकि हुसैनी खेमो की हर हरकत उसे मिलती रहे। पूरे बंदोबस्त को अपनी निगरानी में करवा कर शिम्न कुफे वापस पहुंच गया और इब्ने ज़ियाद को पूरा आँखों देखा वाकिया बता दिया और इब्ने ज़ियाद ने फ़ौरन इसकी खबर दमिश्क में बैठे यज़ीद को भिजवा दी। इस वक्त इब्ने ज़ियाद इतनी ताकत में था अगर वह चाहता तो यज़ीद का तख्त पलट कर खुद खलीफा बन जाता और शायद उसके दिल में ऐसा कुछ था भी। शिम्न उसके इन इरादे को भांप चुका था और उसने अलग से अपनी इन दूर अनदेशी खयालो को यज़ीद के सामने तहरीर करवा दिया, शिम्न जो चाल चल रहा था कहीं ना कहीं वह उसके लिए बेहतर और यज़ीद के लिए बदतर होने वाली थी। ५ मुहर्रम हज़रत अब्बास बड़े गुस्से में हैं और सोच रहे हैं के हम लोग जान बूझकर दुश्मन को मौका दे रहे हैं। असल में अब्बास कर्बला की जंग को जंग के नज़रिए से देख रहे थे, जंग को फ़तेह कराने की ख्वाहिश रखते थे और हुसैन की जान बचाने के फिकरमंद थे। लेकिन हज़रत हुसैन इस जंग को कुर्बानी के नज़रिए से देख रहे थे और मकसद-ए-रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) फ़तेह करने के लिए अमादा थे और इस्लाम बचाने के फिकरमंद थे। **हज़रत अब्बास** आलमबरदारे हुसैनी, एक जांबाज़ एक शुजा वफादार, शेर-ए-अली के साथ साथ, सक्का (पिलाने वाला), अफ़ज़ल शोहदा-ए-सकीना की आस, हज़रत हुसैन के बाजू, आल-ए-हरम का पर्दा, ज़ैनब का गुर्र, हज़रत अली की ख्वाहिश, उम्मुल बनीन की तमन्ना और बहुत कुछ के साथ साथ कर्बला में आए थे। आपकी पैदाइश ४ शाबान २६ हिजरी बरोज़ ५ शम्बा बा मुताबिक १८ मई ६४७

इसवी मदीने में हुई

यू तो हज़रत अब्बास की पैदाइश मकसद-ए-हुसैनी के लिए हुई थी जो मैं पीछे बयान कर चुका हूँ, उस वक्त अरब की सर ज़मीन पर सबसे ज्यादा लहीम शहीम और बहादुर थे, मैंने बहादुर गलत कहा बलकी शुजा थे। शुजा और बहादुर यह अलग अलग अलफ़ाज़ हैं। लुगद में देखने पर

दोनों के मतलब तकरीबन एक ही मिलते हैं। यानी बड़ा ताकतवर, लेकिन मेरे नज़दीक बहादुरी का मतलब है स्सतम, जो लडा तो बडी बहादुरी से, लेकिन अपने ज़ख्मो पर ताब ना ला सका और अपनी जान बचाने के लिए दरिया में कूद गया। लेकिन शुजा का मतलब है अब्बास जो बहादुरी से लड़े भी और लड़ते हुए अपने मकसद को भी ज़ेहन में रखा, अपना वादा भी पूरा किया और मैदान में ही शहीद हो गए। इस लिए अब्बास को “गाज़ी” भी कहते हैं। **हज़रत अब्बास की वालिदा का नाम फात्मा बीनते हजम बिन खालिद** था। आप अरब के मशहर बहादुर कबिले कलबी से ताल्लुक रखती थी। शिम्न भी इसी कबिले से ताल्लुक रखता था और इसी नाते से वह हज़रत अब्बास को अपना मामू कहता था। कहीं-कहीं आलिमो ने शिम्न को हज़रत अब्बास का हकीकी मामू बतलाया है लेकिन मेरे नज़दीक वह गलत है, कैसे हकीकी मामू, कैसे भांजे जो मामू शायद कंस को शरमिंदा करने वाला हो वह सगा नहीं हो सकता, लेकिन शिम्न ने अपनी भेड़िया की चाल के तहत कर्बला के मैदान में इस रिश्ते का फायदा उठाने की कोशिश की, लेकिन भला हो अब्बास और उनके भाईयों अब्दुल्लाह, जाफर और उस्मान का जो चाल में नहीं आए और हज़रत अब्बास के साथ साथ हज़रत हुसैन के वफादार बनकर शहीद हो गए।

मैं अब्बास के बारे में जितना बताऊँ उतना कम है, मैं हुसैन के बारे में जितना बताऊँ कम है, मैं कर्बला के एक-एक शहीद के बारे में चाहे वह आका हो या गुलाम, चाहे वह दोस्त हो या अज़ीज़ दार यहां तक कोई तिफ़्ल क्यूँ ना हो उतना कम है, लेकिन इस किताब का मौजू "मैं हुसैन से हूँ" है, मैं उसके आस पास में ही चलना चाहता हूँ। अगर अल्लाह ने सदका-ए-हुसैन के बदले मुझे जिन्दगी दी तो मैं हर कर्बला के शहीद के ऊपर एक-एक किताब लिखूंगा, यानी मैं नब्बे (९०) किताबे लिखने की नियत कर रहा हूँ। तो मेरी उस किताब को उन नब्बे (९०)किताबो का सिर्फ इंट्रोडक्शन समझा जाए क्युकी हर शहीद होने वाले ने कभी न कभी किसी ना किसी मौके पर ज़रूर कहा है “मैं हुसैन से हूँ”, मैं तो बहुत पीछे हूँ मैं तो इतिहास के पन्नो में बुजुर्गों की जुबानो से

जो पढा है और जो सूना है वही लिख रहा हूँ। हज़रत हुसैन की ऐसी शख्सियत का ऐसा सबर, इस्लाम से उनकी बे पनाह मोहब्बत, खुदा पे इतना यकीन, नाना रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) पर इतना भरोसा मैंने किसी और में नहीं पाया। मैं एक ऐसे ज़ख्मी शक्स को देख रहा हूँ जिसके जिस्म पर २००० जख्मों के निशान हैं और वह तीरों पर लेटा हुआ है, फिर भी उसको अपने हरम के परदे का बहुत खयाल है। के कहीं उसकी बहने, जौजाएं, बेटियां वगैरह-वगैरह घबरा कर खेमो से बाहर ना निकल आएँ और यह शक्स सिर्फ ज़ख्मी नहीं है बल्कि पांच (५) रोज़ का भूखा प्यासा भी है। यह सिर्फ ज़ख्मी और भूखा प्यास नहीं है बल्कि अपने वतन से दूर, अपनों से धोखा खाया हुआ, जानिसार अज़िजदारो, दोस्तों और गुलामो की दर्द नाक मौत देख चुका है, वह भी दस (१०) घंटे के अन्दर। वह एक इस्लामी छोटा सा हुक्म "पर्दा" के लिए इतना बेचैन है उसके नज़दीक नमाज़ों का क्या आलम होगा, उसको रोज़े की कितनी ललक होगी, हजो से कितना लगाव होगा, अपनों से कितनी मुहब्बत होगी, मैं तो यह कहते हुए नहीं हिचकुंगा की जो चीज मैंने ऊपर बताई है वह अगर किसी भी इंसान में है तो वह कह सकता है की "मैं हुसैन से हूँ" अगर इनमे से एक भी चीज़ से बे-परवाह है तो रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) यह कह सकते हैं की मैं इससे नहीं हूँ और जिसको रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने कह दिया के मैं उससे नहीं हूँ वह फिर कुछ भी नहीं.....।

हज़रत हुसैन का सफ़र मदीने से कुफे तक का था लेकिन हज़रत हुसैन जानते थे की यह दस्ते बला (कर्बला) में आकर ख़त्म हो जाएगा क्युकी उनको अपने वालिद के साथ एक वाकिया अच्छी तरह याद था जो की उनको जंगे सिप्फिन से लौटते वक्त इसी मुकाम पर पेश आया था, हज़रत अली को एक छोटा शेर का बच्चा दस्ते बला में मिला, जो अचानक उनके घोड़ो के टापों के बीच में आ गया था, उन्होंने उसको उठाया और अपने साथ कुफे ले गए और वहां उसकी

परवरिश अपने बेटों के साथ ही की और उसका नाम “अबुल हारिस” रखा जब वह सियाना हो गया तो उसको कर्बला के जंगलों में छोड़वा दिया और यह कहा ऐ अबुल हारिस हमने बा हुक्म-ए-खुदा से तुमको जंगली जानवरों से बचाया एक दिन मेरे बच्चे मुसीबत में घिरे होंगे, तुम उनकी जिन्दगी तो नहीं बचा पाओगे लेकिन उनकी लाशों को खूंखार इंसानों और जंगली जानवरों से बचा लेना । इस तरह शाम-ए-गरीबा के मौके पर कनीज़ फिज़्ज़ा ने जंगल की तरफ रुख करके इसी शेर को आवाज़ दी थी और उसने आकर तमाम शहीदों की लाशों को यज़ीदी सिपाहियों और जंगली जानवरों से बचा कर अपना कर्ज़ और फ़र्ज़ दोनों पूरा किया क्यूकी हज़रत हुसैन यह बात सुन चुके थे इस लिए उनको यकीन था की हर हाल में कर्बला की जंग होनी है, वह लाख कोशिश करले लाख हुज्जते तमाम कर ले और नतीजा सिवाए क़त्ल होने के और कुछ नहीं । हज़रत हुसैन यह अच्छी तरह से जानते थे की किसी भी हुक्मत से जंग करना आसान नहीं । यकीनन यह जंग अगर सिर्फ यज़ीद और उसकी हुक्मत के खिलाफ होती तो हज़रत हुसैन हर शर्त पर बैत कर लेते लेकिन यहां पर इस्लाम और बिगड़े हुए इस्लाम (दुसरे मज़हब नहीं) के बीच हक और बातिल का फैसला करना था वरना आज दुनिया के सामने जो इस्लाम होता उसमें और गैर इस्लामिक मज़हबों में ज़मीन और आसमान का फर्क होता अगर गैर मज़हब कहते की भगवान् करोड़ों हैं तो यह कहता सिर्फ एक है जो खलीफा की कुरसी पर बैठा है, जुल्म, हैवानियत, नशा खोरी, सूद खोरी, नाच गाना, लूट मार, और हाथों में चमकती हुई तलवारे, घरों में लूट की भरी हुई दौलते, शरमाते हुए चर्च, रोति हुई जनाबे मरियम, दूध पीते हुए पत्थर यह सब बौने होते । फिरऔन, नमरूद, शदाद, कौम-ए-लूत, कौम-ए-समूद, रावण, कन्स यह तो कुछ भी नहीं थे । लेकिन हज़रत हुसैन जिनको हम पुरषोत्तम भी कहे तो बेहतर हैं शहीद होकर उस बिगड़े हुए इस्लाम की कब्र दमिशक के यज़ीदी महल में बना दी, आज जो इस्लाम हमें नसीब है, हम इतराते हैं, आल-ए-रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के खून से सींचा हुआ है और मैं तो यह कहता हूँ की आज भी

इस्लाम पर, इस्लाम के वजूद पर ज़रा भी कालक आती है तो, कोई ना कोई, कहीं ना कहीं, अपना लहू बहाकर या कलम चलकर उसको तरो ताज़ा रखता है और वह खून किसी आले-नबी का होता है, क्युकी वह अपना खून बहाता है, अपना कलम चलाता है, किसी और की जान नहीं लेता किसी और का खून नहीं बहाता, क्युकी किसी और का खून बहाने वाला दहशत गर्द होता है जेहाद नहीं होता, शायद मेरे यह अलफ़ाज़ मेरे अपने हैं ।

“इस्लाम इलाही शजर,

फूला फला है इस कदर,

इसे आल-ए-नबी आज भी लहू अपना पिलाते हैं”

हर इस्लाम बचाने वाला चाहे वह खून से बचाए या कलम से बचाए कह सकता है की “मैं हुसैन से हूँ” ।

६ मुहर्रम ६१ हिजरी को कर्बला का माहौल और ज्यादा खौफनाक हो गया क्युकी तमाम उलमाओं और आलिमो ने कर्बला की पूरी जंग को जो सिर्फ आशूरे को हुई थी, एक मुहर्रम से १० मुहर्रम तक बाट दिया, इस जंग में जानिसार असहाबो के साथ-साथ अज़िजदारो का भी खयाल रखा गया इस लिए ६ मुहर्रम को हज़रत हुसैन के बेटे अली अकबर और अली असगर के लिए मनसुख कर दिया गया है, जब यह यकीन हो गया की अब सिर्फ जंग होना है तब से हज़रत अब्बास, हज़रत अली अकबर, हज़रत कासिम और दीगर अज़िजदार यह गुफ्तगू किया करते थे के पहले कौन शहीद होगा, कहीं दुनिया यह न कहे के हुसैन ने अपने असहाबो को मरवा दिया और अज़िजदारो को बचा लिया, खैर उनका सोचना भी गलत नहीं था लेकिन हज़रत हुसैन के असहाब यह कैसे ग़वारा करते की उनके होते हुए हज़रत हुसैन अपने अज़ीज़ो पर रोए, इस लिए

पहले अंसारो ने जान दी एक (१) मुहर्रम से चार (४) मुहर्रम तक हुसैन के अंसारो, दोस्तों और जान देने वाले गुलामो (दोस्तों से बढ़कर), आलिम अपने हिसाब से जिक्र करते हैं, ५ मुहर्रम हज़रत ज़ैनब के साहब जादो के नाम मनसुख है, ७ मुहर्रम हज़रत कासीम के नाम से मनसुख है, ८ मुहर्रम को कर्बला के आखरी शहीद से पहले के नाम से मनसुख है, ९ मुहर्रम को बाज़ आलिम हज़रत अली असगर के साथ-साथ हज़रत इमाम हुसैन की ज़रा बयान करते हैं और बाज़ आलिम सिर्फ हज़रत हुसैन की जंग को बयान करते हैं। आशूरे के दिन यानी १० मुहर्रम को मंज़रे बाद-ए-शहादत-ए-हुसैन और शाम-ए-गरीबा बयान करते हैं, यह तो यक्रीनन सही है की ९ दिन के अन्दर हर शहीद की जंग बयान करना और उसके बारे में बताना मुमकिन नहीं इस लिए यह बड़ा मुश्किल हो जाता है की १ तरीक से ४ तरीक तक में किस अंसार का जिक्र करूं और किसका ना करूं, खैर मैं तो इस किताब में थोड़ा थोड़ा हर शहीद का जिक्र करूंगा।

मुझे ऐसा लग रहा था हज़रत हुसैन को सबसे अज़ीज़ अगर कोई था तो वह हज़रत अली अकबर थे, लेकिन कर्बला के मैदान में हज़रत हुसैन को सबसे अज़ीज़ उनका ईमान था, जिसपर हज़रत हुसैन ने अपने इस बेटे को भी कुर्बान कर दिया, मैं दूर से खड़ा यह मंज़र देख रहा था इतना दूर से की वहां तक पहुंचने में १३७० बरस लग जाते, लेकिन फिर भी मैंने देखा की जो माँ अपने बेटो की लाशो पर ना रोए वह अली अकबर के सीने से चिमट कर इतना रोई थी उसकी सर की सियाह चादर अकबर के खून से सुर्ख हो गई, वाह रे फूपी की मुहब्बत, खेमो में शोर, लैला का बिलखना, हुसैन का रोना, सकीना का तडपना, मैं कैसे बयान करूं। हुसैन के सर के बाल जो आशूरे की सुबह तक सियाह थे असर तक सफ़ेद हो चुके थे यह तो सिर्फ मसाएब की शुरुआत है।

६ मुहर्रम खेमो में पानी बिलकुल खत्म हो चूका है, बच्चो की सदा-ए-अलाताश फिज़ाओ में गूँज रही है, हुसैनी लश्कर तैयार है, यज़ीदी फौजे चौकन्ना हैं, उमरे साद को यह बात बखूबी

मालूम है की हज़रत हुसैन के लश्कर को प्यासा रखना ना मुमकिन है, उसने इब्ने ज़ियाद के हुकम के मुताबिक नहरे फुरात पे पहरा तो बिठा दिया है, लेकिन अभी मुतमईन नहीं हुआ, हुसैनी लश्कर के ३० जवान दोपहर तक नहरे फुरात पर पहुंच चुके हैं और ५ मशक भर कर खेमो की तरफ चल चुके हैं, यज़ीदी फ़ौज से छोटी सी जंग के बाद बिना जान गवाए पानी खेमो तक पहुंच गया। यह खबर खुली बिन यज़ीद असहाबी ने एक खत के ज़रिए इब्ने ज़ियाद को भेज दी और खत में लिखा उमरे साद हज़रत हुसैन पर कुछ ज्यादा ही मेहरबान हो रहा है, उसकी ढील की वजह से हुसैन के चन्द सिपाही बिना जान गवाए पानी लेने में कामियाब हुए और अगर ऐसा ही चलता रहा तो यकीनन हुसैन तेरे चंगुल से निकल कर कहीं और चले जाएंगे अगर तुम उमरे साद की सरदारी और "रे" की हुकूमत का फरमान मेरे हवाले कर दो तो यकीनन मैं क़त्ल-ए-हुसैन बेहतरीन तरीके से अंजाम दूंगा, ऐ अमीर मैं नहरे फुरात का पानी कुत्तो, सुअरो और जंगली जानवरों के लिए हलाल कर दूंगा और आल-ए-नबी के लिए हराम कर दूंगा।

यह खत पढ़ते ही इब्ने ज़ियाद आग बबूला हो गया और उसने फ़ौरन ही उमरे साद को लिखा "ऐ उमरे साद तुम्हारी हर खबर मुझ तक हर सुबह और शाम पहुंच रही है। रात के अंधेरो में तुम जो हुसैन के साथ तन्हाई में मसनद बिछा कर गुप्तगू करते हो उसको फ़ौरन बंद करो, हुसैन जैसा चालाक शक्स तुम्हारे हाथो से निकल जाएगा तुम अगर जंग के अंजाम से डरते हो तो मैं लाखो फ़ौजे तुम्हारे पास भेज दूंगा और अगर तुमने हमसे कोई गढ़ारी की तो नतीजा तुम जानते हो, हुसैन के ऊपर पानी का एक-एक कतरा हराम कर दो"। उमरे साद ने खत पढ़ने के बाद नहरे फुरात पर पहरा और ज़बरदस्त कर दिया तक्रीबन २०,००० का लश्कर खेमो और नहरे फुरात के बीच हायल हो गया अचानक फ़ौजों की आमद से हुसैनी लश्कर में बेचैनी बढ़ गई। हुसैन यह समझ गए के अब पानी लाना मुमकिन नहीं है उन्होंने हज़रत अब्बास से कहा की अब पानी का मतलब

है जंग की इब्तिदा करना । सूरज धिरे-धिरे ७ मुहर्रम की रात की तरफ झुक रहा है, कर्बला के सुन-सान मैदान में इतनी चहल-पहल है की किसी को रात का कोई खौफ नहीं । मगर अब्बास परेशान है इनको यह लग रहा है की ५ मशक पानी का बदला कहीं शब की जंग में ना बदल जाए और वह अपने सिपाहियों के साथ गुफ्तगू में लग जाते हैं, हुसैन भी परेशान हैं क्युकी उनको भी अभी कितनो का इंतज़ार है, वह एक बार फिर उमरे साद से इस फौजी हलचल का मकसद पूछते है मकसद पता चलने पर आप थोडा मुतमईन होते हैं लेकिन खेमो को ३ तरफ से महफूज़ रखने के लिए अब्बास को हुकुम देते हैं और सिर्फ एक रास्ते पर मुस्तैद रहने को कहते हैं । आल-ए-हरम अभी मुतमईन है क्युकी प्यास बुझ चुकी है और अब्बास के हाथ में चमकती हुई तलवार और चेहरे पर एक शेर जैसा रूप बरकरार है, जैनब को यकीन है की जब तक अब्बास जिंदा है तब तक हुसैन पर कोई आंच नहीं आएगी ।

७ मुहर्रम की रात बड़ी अहम रात है क्युकी सबको यह यकीन है के कल ७ मुहर्रम को या तो जंग होगी या सुलाह, क्युकी उमरे साद का हुसैन की तरफ झुकाओ “हर ” का बदला हुआ ख और खेमो में पहुंचा हुआ पानी यह सब किसी को भी यकीन दिला सकता है की यह फौजी दस्ते सिर्फ एक दबाव बनाने के लिए लगाए गए हैं, क्युकी हुसैन का खून बहाना इस्लामी सरहदों में गैर मुमकिन काम था हुसैन जैसी शख्सियत, हुसैन का इल्म, हुसैन का खानदान किसी को भी मुतास्सिर करने के लिए काफी था, इसलिए इब्ने ज़ियाद का यह पहला कदम हुआ की हुसैन से कोई मिलने ना पाए, यहां तक उसने हुसैन का वह पैगाम की मुझको यज़ीद से आमने सामने बैठकर गुफ्तगू करना है को भी ठुकरा दिया क्युकी इब्ने ज़ियाद को सिर्फ हुकूमत का लालच था, वह यह नहीं देख रहा था की उसके हुक्म से जो जो काम होने वाला है वह हमेशा के लिए हुकूमते बनी उमय्या को शर्मिदा कर देगा और शायद उसके बाद कोई भी यज़ीद के नाम पर अपना और अपने

बच्चो का नाम यज़ीद नहीं रखेगा. उसने यज़ीद को इस गुमराही में रखा की हुसैन किसी भी सूरत में यज़ीद को छठा (६) खलीफा तस्लीम नहीं करेंगे, जबकि पूरी इस्लामी सरहदें यज़ीद को छठा (६) खलीफा मान चुकी है, लेकिन हुसैन आशूरे की तरफ बड़ी खूबसूरती से अपने को बढ़ा रहे हैं क्युकी हज़रत हुसैन यह जानते हैं की उनके सिपाहियों की एक भी गलती उनके मिशन को फेल कर सकती है और दुनिया को यह मौका मिल जाएगा की वह लिखे की हुसैन की फ़ौज यज़ीदी फ़ौज से भीड़ गई और बगावत करने के इलज़ाम में सब मारे गए हुसैन की तेज़ निगाहे यह देख रही थी और हुसैन यह चाहते भी थे की यज़ीद हमारे ऊपर दबाव बनाने के लिए तमाम शहरो से ज्यादा से ज्यादा फ़ौज मांगा ले, इस लिए हुसैन बीच में दरिया-ए-फुरात से पानी लाने की इजाज़त अपने सिपाहियों को दे रहे थे, इन्ने ज़ियाद यह सोच कर फ़ौज बढ़ा रहा था की हुसैन की शहादत की खबर सब शहरो में एक साथ पहुंच जाए, तब भी वहां कोई बगावत ना खाड़ी हो सके क्युकी हर शहर की फ़ौज कर्बला में मौजूद होगी तो सिर्फ कुफे पर कोई आंच नहीं आएगी। मुशरिकीनो की यह चाल बहुत पुरानी है उन्होंने खुद रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को क़त्ल करने के लिए हिजरत की रात हर कबिले से एक एक नौजवान ले लिया लेकिन क्या रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ख़त्म हो पाए क्या इस्लाम ख़त्म हो गया बल्कि नतीजतन उन पूरे ४० कबीलों में शरमिन्दगी और खौफ दोनों पैदा हो गया। हज़रत हुसैन भी यही चाहते थे के उनके क़त्ल की खबर इस्लामी सरहदों के कोने कोने में खुद यज़ीदी फ़ौज के ज़रिए ही पहुंचे जिसके एवज़ में जो बगावत की आंधियां उठेगी, नफरत के तूफान बनेंगे तो यज़ीदी हुकूमत की जड़ें हिल जाएगी और यह पेड़ हमेशा के लिए गिर कर ख़त्म हगो जाएगा।

इस लिए हज़रत अब्बास और दीगर असहाब ७ मुहर्रम को जंग की इजाज़त हज़रत हुसैन से मांगते रहे, हज़रत हुसैन बच्चो की आलातश की आवाजे सुनकर भी जंग को आगे बढ़ाते जा रहे हैं। हज़रत हुसैन के खिलाफ दमिश्क से लेकर कुफे तक और कुफे से लेकर कर्बला तक साजिश

रचने वालो की कोई कमी ना थी, एक से एक आलिम बड़े से बड़े सूबेदार हुसैन को घेर कर कर्बला तक लाने का खेल-खेल रहे हैं और कामियाब भी हुए इधर सिर्फ तन्हा हुसैन जो अपना हर फैसला खुदा की मरजी से कर रहे है, अपना हर कदम खुदा की मरजी से उठा रहे हैं। दुश्मन यह समझ रहे हैं की मैं अपनी चाल में कामियाब हो रहा हूँ और हुसैन मुस्कुरा रहे हैं की मैंने तन्हा ही पूरी साजिश का खात्मा कर दिया।

कर्बला की जंग असल में इसको जंग कहना ही गलत है बल्कि मेरे नज़दीक फ़तेह इस्लाम होना चाहिए, हक़ और बातिल का अलफ़ाज़ कर्बला के वाकिये के साथ हमेशा जुड़ा रहता है और तमाम बीके हुए आलिम यह तेहरिर करते हैं की अगर हुसैन हक़ पर थे तो शहीद क्यों हुए और यह ऐसा नाज़ुक नुख़्ता है की इसे हर पढ़ने वाला एक बार इस बात पर ज़रूर गौर करता है, क्युकी यह आलिम अकसर याद दिलाते हैं की रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने तमाम जंगे कम फ़ौज़ होने के बाद भी फ़तेह करली रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) मक्के से मदीने तलवारों से बचकर पहुंच गए यहां तक जब मिसाल देने पर आते हैं तो राम की जीत, महाभारत की जीत तक को दलील बना देते हैं और पढ़ने वाला इनही दलीलों में उलझ कर यह तय नहीं कर पाता की कर्बला में हक़ कहां था और बातिल कहां था, बेशक सिर्फ कर्बला की जंग को देखकर यह कोई भी नहीं बता सकता की हक़ और बातिल क्या है, हक़ और बातिल की जंग इतनी पुरानी है जितना इंसान। हज़रत आदम (अलैहे सलाम) के पैदा होते ही उनको यह हक़ हासिल हुआ की फ़रिश्ते ताज़ीम के लिए बा-हुक्म-ए-खुदा झुक जाए, जो झुक गए वह हक़ की तरफ हुए और जो नहीं झुके, मैं गलत लिख गया, जो नहीं झुका वह राहे बातिल हुआ, यानी पहला इंसान बनते ही हक़ वालो की कोई कमी नहीं थी और बातिल सिर्फ एक था, लेकिन ना जाने या सिर्फ खुदा जाने की सिर्फ एक बातिल ने कौनसी चाल चली की एक लाख चौबीस हजार कमोबेश पैगम्बर गुजर जाने के बाद जिसमे वह पहला इंसान भी शरीक है जिसकी हमने ऊपर बात की, गुजर जाने के बाद

जब आखरी नबी रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) दुनिया में तशरीफ़ लाए तो एक हक़ और पूरी दुनिया बातिल पे थी तो यह क्या हुआ ?, कैसे हुआ ?, और क्यों हुआ ? यहां सब जानते हैं और सब समझ रहे हैं तो यह बात तो यहां पे साबित हुई की कभी कभी हक़ भी अकेला होता है और कम होता है और मजबूर होता है, हज़रत इब्राहीम (अलैहे सलाम) हक़ पर थे तो बचे, हज़रत नूह (अलैहे सलाम) हक़ पर थे तो बचे, हज़रत मूसा (अलैहे सलाम) हक़ पर थे तो बचे, हज़रत ईसा (अलैहे सलाम) हक़ पर नहीं तो मरे क्या यह कहना सही है, नहीं हज़रत ईसा (अलैहे सलाम) हक़ पर थे तो मरे, हज़रत याहिया हक़ पर थे तो मरे, हज़रत ज़करिया हक़ पर थे तो मरे, हाबिल हक़ पर थे तो मरे और बनी इज़राइल के तमाम पैगम्बर हक़ पर थे तो मरे । तो मैं तो यह देख रहा हूँ की हमारी फेहरिस्त में हक़ पर मरने वालो की तादाद ज्यादा है । तो मैं यह बात कह सकता हूँ की सिर्फ़ जिंदा बचना ही हक़ नहीं होता बल्कि मर कर भी हक़ पर रहा जा सकता है, कर्बला के वाकिये को जानने के लिए हक़ को समझने के लिए हमे पूरे इस्लाम को पहले समझना पडेगा, पूरे बातिल को पढना पडेगा, हमने यह पढा की नमरूद ने अपने को खुदा कहने का दावा किया और हज़रत इब्राहीम (अलैहे सलाम) ने उसे मारने से इनकार कर दिया । जब आप (हज़रत इब्राहीम (अलैहे सलाम)) आग में फेके गए तो बचा लिया और नमरूद ऐसी मुसीबत में मुत्तिला होकर मरा जिसका कोई इलाज ना था । अगर सिर्फ़ इस वाकिये के ऊपर हज़रत इब्राहीम को हक़ पर और नमरूद को बातिल पर करार दें । यहां तो कर्बला का वाकिया हमे हक़ समझ में ना आएगा इसी तरह और भी वाकिये हैं, चाहे वह मूसा (अलैहे सलाम) का हो, चाहे वह लूत (अलैहे सलाम) का हो । हक़ को समझना इतना मुश्किल है की रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की वह हदीस “की जन्नत में जाना इतना मुश्किल है की उसके मुकाबले सुई के नाके से ऊठ का निकलना आसान है” । तो हमारे नज़दीक जन्नत और हक़ दोनों एक ही नाम है, जो हक़ पर है वह जन्नती है और जो बातिल है वह जहन्नुमी है, हम जब हज़रत इब्राहीम (अलैहे सलाम) की पूरी

ज़िन्दगी के हर अमल को पढे और नमस्द के हर कारनामे को देखे, हज़रत नूह के हर अमल पढे और कौमे नूह की हर ना फ़रमानी को देखे, हम हाबिल के हर अमल को पढे और काबिल की हर बुराई को देखे और बढ़ते-बढ़ते हज़रत रसूल-ए-खुदा (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के हर अमल को देखें और बनि उमय्या की हर बात को देखें तो शायद तब भी हम हक़ और बातिल को नहीं समझ पाएंगे। तो पूरी तरह समझने के लिए इन सबके बाद हम हुसैन को देखे कर्बला की जंग देखे यज़ीद और उसकी फ़ौज की हर हरकतों को देखे तब कहीं हम ७५% हक़ और बातिल को समझ पाएं और अगर हम उसपर अमल करे तो हम ९०% हक़ और बातिल को समझ सकते हैं बाकी अल्लाह के हाथ में है वह हमे ऐसी तौफ़ीक़ अता करे की हम सब हक़ पर चले और बातिल से लड़े और बचें। क्युकी अगर रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की वफ़ात के साथ ही, या हुसैन की शहादत के बाद बातिल मिट चूका होता तो इस्लाम में जिहाद की कोई जगह नहीं होती।

कुफ़े का आलम यह है की वहां पर खबर आम हो चुकी है की हज़रत हुसैन अपनी आल के साथ कर्बला में घेर लिए गए हैं और जो यह हकीकतन हुसैन को चाहने वाले थे वह बेचैन हैं की किस तरीके से हुसैन की मदद के लिए पहुंचे, कर्बला जाने वाले सभी रास्तो की नका बंदी हो चुकी है, यानी चाह कर भी कोई कर्बला नहीं जा सकता। आज ही के दिन शाम से एक फ़ौजी लश्कर " खुली " की निगरानी में कुफ़े पहुंचा है जिसमे १०,००० सिपाही है, इस फ़ौज का आलम सबसे जुदा है। लश्कर का आना जाना देखा कर कुफ़े के लोगो में यह डर बैठ गया है, की हुसैन के साथ तक्रीबन १५,०००-२०,००० का लश्कर जरूर होगा क्युकी फ़ौजों का बराबर कर्बला की तरफ जाना और लोगो का अन्दाजतन बताना की लाखो फ़ौजे जा चुकी है तो ऐसा लगता है की हुसैन के साथ बहुत बड़ा लश्कर है दिल में हर चाहने वाला कर्बला जाना चाहता है लेकिन मजबूर है।

कर्बला की यह शब शायद ही कोई सोया । जो ना समझ है वह जंग देखना चाहते हैं और जो समझदार हैं वह लडना चाहते हैं कर्बला का " लू " (गर्म हवा) मारता हुआ रेगिस्तान, तलवारों और नेज़ो (तलवारों) की तेज़ होती हुई धारो की आवाज़ें किसी खौफनाक अंजाम की तरफ इशारा कर रही है, फुरात की सांप की तरह चमकती धारा शायद किसी को रोक रही है । हज़रत हुसैन अपने लश्कर के साथ एक खेमे में अपनी इबादत में मशगूल हैं और अब्बास जंग करने के बारे में सोच रहे हैं, हज़रत अब्बास की यह जंग एक बेहतरीन मौक़ा है की वह अपने को साबित कर सके की वह शेर-ए-अली के साथ साथ कमर-ए-बनी-हाशिम है, यूं तो अब्बास ने तमाम जंगो के बारे में सूना और शरीक भी हुए फ़तेह आब हुए लेकिन बराबर का मसला था । लेकिन यहां पर पूरे सौ गुने (१००%) का फर्क है । साथ में सबसे अहम बात की हज़रत हुसैन की जान बचाना है, बच्चो को सितम से बचाना है और अगर खुदा-ना-खास्ता हार भी जाते हैं तो हुसैन की औलादों से पहले अपनी जान देना है । इसी सोच में हज़रत अब्बास घोड़ो की रकाबो पर ज़ोर देकर खड़े होते हैं और फिर यह कहते हैं की यह फ़ौज तो मैं अकेले ही मार दूंगा खुशी से घोड़े की पीट पर जो बैठते हैं तो घोड़े की रीड की हडडी टूट जाती है । एक अरबी घोडा इतना लहीम शहीम होता है की किसी सवार के वज़न से वह ज़ख्मी नहीं हो सकता, लेकिन यहां पर ऐसा हुए तो इससे इसी बात का अंदाजा लगाया जा सकता है की अब्बास की लम्बाई चौड़ाई और ताकत किस हद तक होगी । यह बात मैं अगर ५० साल पहले लिखता तो मुझे ज़रूर ताज्जुब होता की हज़रत अली की खुद की लम्बाई और उनके दुसरे बेटे की लम्बाई औसद दरजे की थी, लेकिन सिर्फ इस बेटे की लम्बाई, चौड़ाई और ताकत.... क्युकी शायद इसकी वजह नहीं बता सकता था लेकिन आज तरक्की के दौर में यह साबित हो चूका है की अगर शेर-ए-बब्बर किसी मादा टाइगर के साथ जिस्मानी रिश्ता बनाए तो उससे पैदा हुआ बच्चा और पहला बच्चा अगर नर है तो वह बाघिन और शेर-ए-बब्बर से कई गुना ज्यादा ताकत वर और लंबा और तगडा होगा अकसर इनकी लम्बाई १६ फिट तक देखि

गई है। अब हमें समझ में आ गया कि हज़रत अली ने अपने भाई अक़ील से यह क्यों कहा कि किसी ऐसे बहादुर कबिले की लड़की से अगद (शादी) करवाओ कि जिससे ऐसा बच्चा पैदा हो कि हज़रत हुसैन की हिफाज़त कर सके। यह तो सब जानते हैं हज़रत अली का लकब शेर-ए-खुदा है और अब्बास की वालिद बहादुर कबिले की एक बहादुर बाघिन औरत है।

हज़रत हुसैन की शहादत के बाद ही से कर्बला का वाकिया इस्लाम का जुज़ बन गया और इस बात को लेकर इस्लाम में तमाम फिरके बटना शुरू हो गए कोई फिरका हुसैन को हक़ पर मानता है कोई यज़ीद को हक़ पर मानता है कोई इस मसले में पढना नहीं चाहता वगैराह वगैराह

लेकिन यह बात पूरी दुनिया तस्लीम कर चुकी है कि मज़हब के लिए सब कुछ कुर्बान किया जा सकता है यानी मज़हब से बड़ा कोई दूसरा रिश्ता नहीं है क्योंकि मज़हब हमको वह सलीका सिखाता है कि हम इंसानों के साथ साथ खुदा से कैसे जुड़े, परिन्द, चरिद, जिन्नात, परियां और दूसरी मखलूक से हम क्या रिश्ता रखे। मसलन सही मज़हब यह सिखाता है कि जानवरों का हम सही इस्तेमाल करें उसको अपनी आसानी बनाए यह नहीं के भगवान बनाकर पूजने लगे। इसी तरह इंसान इंसान के साथ भाई जैसा बरताव अपनी बरतरी के लिए, जुल्म नहीं जैसे कि फिरऔन को खुदा न कहने वालों के हाथ पैर काट दिए गए और खुदा कहने वालों को माला माल कर दिया गया। लेकिन क्या खुदा ने या गॉड ने या इशवर ने कभी किसी के साथ ऐसा बरताव किया?। बल्कि हमने तो यह देखा कि नास्तिक तो बड़े मजे में रहते हैं और धार्मिक अक्सर परेशान रहा करते हैं। इस तरह गैर इन्सानी कौमे, जिन्नातो का इस्तेमाल दोस्ती के लिए करना चाहिए बुरे काम के लिए नहीं। मज़हब हमें इस दुनिया से लेकर खुदा के सामने खड़ा करने

का काम करता है, खुदा के सामने पहुंचे और मज़हब खत्म, अब मेरे आमाल मेरे साथ हैं और इंसान यह जानता है की अच्छा और बुरा आमाल क्या है ।

हमने करबल के मैदान में एक मज़हब को समझने के लिए बेहतरीन नमूने देखे अगर वाकिया-ए-कर्बला हमारे सामने ना होता तो हम शायद मज़हब को इतनी गहराई से ना समझ सकते, एक दोस्त को हुसैन पर जान देते देखा, एक बहन को हुसैन पर अपने बच्चे लुटाते देखा, एक भाई को जान गवाते पाया, एक बेवा को अपने देवर पर अपने बच्चो को जंग में भेजता देखा, गुलामो को आका पर मरते देखा, साथियों को हुसैन पर जान गवाते देखा, बेटो को हुसैन पर मरते देखा लेकिन यह बात सही है की यह सब अपनी मरजी से हुसैन पर शहीद हुए । लेकिन अब जो मैं बता रहा हूँ उस्से यह साबित है की औलाद से भी ऊपर मज़हब का दर्जा है । हुसैन ने अपने ६ महीने के बच्चे को हुसैन पर कुर्बान कर दिया, अली असगर की शहादत दुनिया के लिए एक पैगाम है की मज़हब से बढकर कुछ नहीं उसके बाद खुद अपनी कुर्बानी पेश करना खुद इस बात का सबूत है की मज़हब के ऊपर ना तो रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) है और ना आल-ए-रसूल है ।

हाँ सबके शहीद होने के बाद जब कोई न बचा अपनों के खून से लतपत, इतने प्यासे की खाल हड्डियों में चिपक चुकी है, इतने गम ज़दा के सर के सारे बाल सफ़ेद हो चुके है । तन्हा हुसैन असर से कुछ देर पहले कर्बला के मैदान में “ क्या है कोई मेरी मदद करने वाला ” कहते नज़र आ रहे हैं, मैं सोच रहा हूँ की हुसैन ये किसे कह रहे हैं, २ मुहर्रम से १० मुहर्रम तक हुसैन लाख हुज्जते करते रहे, लाख सुलह के रास्ते बनाते रहे यहां तक के सारे असहाब तमाम बनी हाशिम लुटाने के बाद उसी फ़ौज से जिसने कासिम के लाशे को पामाल कर दिया जिसने हम शक्ले नबी अली अकबर के सीने में बरछी उतार दी । जिसने अब्बास को फुरात के फिनारे मार दिया उस फ़ौज से यह कहना शायद मेरी समझ से बाहर है । लेकिन अचानक खेमो से रोने की आवाज़ हुसैन के साथ

साथ मुझे भी बेचैन कर देती है, हुसैन पलट कर जाते हैं और रोने का सबब पूछते हैं, तो जैनब कहती है की भाई आपकी आवाज़ सुनकर अली असगर ने अपने आपको झूले से गिरा दिया है। हुसैन ६ महीने के बच्चे को अपनी गोद में लेते हैं और अपने आबा के दामन से ढाक लेते हैं, यकीनन कर्बला का मैदान, उसपर से चमकती हुई धूप ३ दिन का भूखा प्यास मासूम बच्चा बहती हुई लू को बर्दास्त नहीं कर सकता था। धूप और गर्म हवा से बचाने के लिए शायद बच्चे को ढाक लिया, यहां फौज में तला तुम की शायद हुसैन बैत करने आ रहे हैं। कोई कह रहा है हुसैन कुरआन ला रहे हैं और वास्ता देंगे। मैं तो बड़े ताज्जुब में हूँ के अजीब खान दान है। खानदान-ए-बनी हाशिम की कभी मुशरिकीन (जो इस्लाम नहीं लाए थे) हिजरत की रात चादर में ढके इस बच्चे के दादा को रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) समझ रहे थे और आशूरे कि शाम मुसलमान (जो इस्लाम नहीं लाए थे) उसी दादा के पोते को चादर से ढका कुरआन समझ रहे हैं वल्ला आलम।

फौजों में बड़ा तलातुम मचा है और खुद शिम्र को यह ताज्जुब हो रहा है की सब कुछ मिटाने के बाद क्या हजरत हुसैन बैत करने आ रहे हैं, खैर लड़खडाते हुए हुसैन के कदम मैदान-ए-कर्बला में आकर रुक गए दामन हटते ही तमाम फौजियों के होश उड़ गए, उन्होंने देखा फूल सा मुरझाया बच्चा हुसैन के हाथों में गफलत की हालत में पड़ा है। लाखों फौजों के बीच इतना सन्नाटा कभी कदार ही देखने को मिलता है, हुसैन ने कहा ऐ फौजियों तुम्हारी निगाह में अगर मैं गुनेहगार हूँ तो इस बच्चे ने तो कोई खता नहीं की है, यह ३ रोज़ का भूखा प्यासा है और माँ का दूध सूख चुका है। इसे थोड़ा पानी पिला दो शायद इसकी जान बच जाए, फौजों में अभी कोई भी हलचल नहीं हुई, हजरत हुसैन ने कहा के अगर तुम यह समझ रहे हो की मैं झूठ बोल रहा हूँ की मैं पानी खुद पी लूंगा तो मैं पीछे हट जाता हूँ तुम इस बच्चे को खुद पानी पिला दो, हुसैन ने बच्चे

से कहा बेटा तुम अपनी प्यासी अदा दुश्मन पे जाहिर करो, एक बाप और एक इमाम का हुक्म कैसे टाला जा सकता है। बच्चा गफलत से होश में आया दुश्मनों की तरफ नन्ही सी गर्दन घुमाई और सूखी जुबां सूखे होटों पर फेरना शुरू की। यह एक ऐसा मंजर था की खुदा इस कायनात में किसी भी बाप को कभी न दिखाए, फौजों में तलातुम मच गया और यह आवाज़े आना शुरू हो गई की बेशक बच्चे को पानी देना चाहिए, हुसैन का यह नन्हा सिपानी ऐसी जंग करेगा के जैसे कोई ना कर पाया, बिना तलवार, बिना सवारी सिर्फ जुबां दिखा कर दुश्मन को अपने हक में कर लेना वाकई किसी शुजा से कम नहीं है। यह शुजा सिर्फ खानदान-ए-बनी हाशिम में देखने को मिल सकता है, शिम्र ने जब हालात बदलते देखे तो फौरन हर मुला को हुक्म दिया के अली असगर को कत्ल कर दो वरना पूरी जीती हुई जंग हम हार जाएंगे।

ज़मीन इतनी जल रही थी के हज़रत हुसैन ने जैसे ही अली असगर को लिटाया वह ६ महीने का मासूम बच्चा मछली की तरह तड़पने लगा, हज़रत हुसैन के कदम पीछे हटे फिर आगे आकर बच्चे को हाथों में उठा लिया, बच्चे को बोसा दिया, फिर उसके कान में कुछ कहने लगे बच्चा मुस्कुराया, यह दूसरा वाकिया है जब हज़रत हुसैन ने इसी बच्चे से मदीने छोड़ते वक्त उसके कान में कुछ कहा था और बच्चा हसकर हज़रत हुसैन की गोद में आ गया था वहां पर तो हज़रत हुसैन ने अली असगर से यह कहा था “बेटा शहीदों की फेहरिस्त में तुम्हारा भी नाम है” लेकिन हाय अफ़सोस हज़रत हुसैन ने बच्चे से यह कहा होगा, “बेटा तुम अपने मजबूर बाप को माफ़ कर देना की उसने तुम्हे जलती हुई ज़मीन पर लिटा दिया, अभी हज़रत हुसैन सर भी सीधा नहीं कर पाए थे के तीन भाल का तीर हवाओं को चीरता हुआ अली असगर के गले में पार हो गया, तीर का एक भाल हज़रत हुसैन के बाजू में पेवस्त हो गया और बच्चा मुस्कुराता हुआ शहीद हो गया, यह तीर उसुलन जंगो में इस्तेमाल नहीं होता था, यह अक्सर बड़े जंगली जानवरों को मारने में इस्तेमाल किया जाता था। हरमुला कुफे का सबसे बेहतरीन तीरन्दाज़ माना जाता था, “वाह”

हरमुला की बहादुरी उसका निशाना आज देख लिया। हज़रत हुसैन ने तीर को असगर के गले से खींचा और जो खून की चन्द बूंदें गले से टपकी उसे अपनी चुल्लू में भर लिया, ज़मीन की तरफ फेकना चाहा तो आवाज़ आई “ऐ हुसैन अगर इस खून का एक कतरा भी मुझपर गिर गया तो कयामत तक एक भी अनाज का दाना नहीं उगेगा”, आसमान की तरफ फेकना चाहा तो आवाज़ आई “कयामत तक पानी नहीं बरसेगा”, हज़रत हुसैन ने यह कहकर “इनकार आसमान को है, राज़ी ज़मीन नहीं, असगर तुम्हारे खून का ठिकाना कहीं नहीं” और आपने खून अपने चेहरे पर मल लिया, दामन ढाका और खेमे की तरफ मूह कर लिया जहां एक माँ अपने प्यासे बच्चे का इंतज़ार कर रही थी, हज़रत हुसैन आगे बढ़े खेमे के दर तक गए फिर सात (७) कदम पीछे हटे और कहा “इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन” और फिर सात (७) कदम आगे आए “इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन” और आवाज़ दी रब्बाब अपने बच्चे को वापस ले जाओ, रब्बाब से पहले हज़रत हुसैन की ४ बरस की बेटि सकीना ने खेमे का पर्दा हटाया और कहा बाबा आप भाई को पानी पिला लाए और मैं प्यासी रही। हज़रत हुसैन ने आबा का दामन हटाया, खेमो में कोहराम मच गया रब्बाब ने कहा क्या तेरी उम्र के बच्चे भी तबाह किये जाते हैं। यानी गला छिदा नहीं बल्कि ज़िबाह हो चुका था। खेमो में कोहराम के साथ-साथ हज़रत हुसैन को अभी बहुत कुछ करना था। अभी आपने बच्चे पर आंसू बहाने थे, अपने बच्चो का अपनों का बदला लेना था, एक इमाम की जंग लड़नी थी, बैत को जड़ से मिटाना था, लेकिन सूरज अपनी आग से खुद जल रहा था और यह सोच रहा था के काश मेरी आग मुझे खुद जला दे, के आज मेरी गर्मी में आल-ए-रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के लाशे जल रहे हैं, यकीनन ज़मीन इतनी गर्म थी की अगर चना गिर जाता तो भुन जाता। सूरज जल्द से जल्द छुपना चाहता था और हज़रत हुसैन दुनिया को "हक़" की ताकत दिखाना चाहते थे।

यका-यक हज़रत हुसैन कुछ सोचते हैं और खेमे में आकर अली असगर की लाश को अपने सीने से चिपकाए खेमे से दूर लेजाते हैं, हज़रत हुसैन ने क्या सोचा मैं कुछ नहीं कह सकता हज़रत हुसैन एक मुकाम पर बैठ जाते हैं और वह तलवार जो अली के लिए उतरी इसने तमाम जंगो में शौहरत हासिल की आज वही जुल्फिकार हज़रत हुसैन के हाथ में नन्ही सी तुर्बत (कब्र) खोदने के काम आ रही है। हज़रत हुसैन ने बच्चे को दफन किया, हाथो से छोटी सी तुर्बत (कब्र) बनाई और फिर इतना रोए के कब्र आसुओं से तर हो गई फिर कुछ सोचा और तुर्बत का निशान मिटाया, दामन को झाड़ा और खेमो की तरफ चल दिए। यह ऐसा वक्त है के हज़रत हुसैन के चेहरे पर असगर का खून सीने पर अकबर का लहू पूरे जिस्म में कहीं न कहीं किसी अपने का खून लगा है, जिधर देख रहे हैं उधर यज़ीदी फ़ौजे, अब तो मदद के लिए कोई भी नहीं, मुझे बड़ा ताज्जुब हो रहा है इतने गम उठाने के बावजूद इस वक्त हज़रत हुसैन बेहद मज़बूत नज़र आ रहे हैं।

मैंने अब्बास की शुजात देखि अकबर की जंग देखि असगर का हादसा देखा लेकिन जो बात हुसैन में देख रहा हूँ वह किसी में नहीं है, शब-ए-आशूर में मैं समझ रहा था की शायद हुसैन टूट जाएंगे, बच्चो की अलाताश की आवाज़े बैत करने पर मजबूर कर देगी, लेकिन आशूरे की शाम होते-होते मेरा खयाल मिटटी में मिल गया। हर शहादत के बाद हज़रत हुसैन और मज़बूत होते चले गए।

हुसैन की शहादत पर हम आंसू को बहाते हैं,
इस आंखो के पानी से हम हक़ को जिलाते हैं,
अशको की बूंदों से भर देंगे हम यह दुनिया,
सैलाब-ए-नूह को हम पहले से जताते हैं,
अकबर का लाशा भी उठाया हुसैन ने,
मज़हब से बड़ा कुछ नहीं वह हमको सिखाते हैं,
दुनिया न भूलेगी ज़ैनब के शेरों को,
रिशतो की एहमियत वह हमको पढाते हैं,
अलमबरदार के बाज़ू कटे, पामाल कासिम हुए,
यह वाकिए हमे बार-बार स्लाते हैं,
मासूम वह लाशा तुर्बत में भी वह ना रह सका,
हादा की हैवानियत दादा बताते हैं,
कर्बला को जाए नुसरत मज़हब का बैर नहीं,
अब्बास बढकर उसे मेहमान अपना बनाते हैं,
हुसैन की शहादत पर हम आसूं को बहाते हैं,
इस आँख के पानी से हम हक़ को जिलाते हैं ।

७ मुहर्रम की शब काफी चढ चुकी है यज़ीदी फ़ौज उंघानी (उंघना) की हालत में हैं, घोड़े और जानवरों की घंटियों की आवाज़ें धिरे-धिरे कम हो गई, हुसैनी खेमो से भी चहल कदमी नहीं सुनाई दे रही है. यानी सुबह का इंतज़ार करते करते सब नींद की आगोश में आ रहे हैं आज की शब जो मैदान अँधेरे और सन्नाटे में रहता था वहां पर इतनी मशाले रौशन है की एक बड़े कसबे को चुनौती दे सकता है अचानक हुसैनी खेमो में एक हलचल होती है जनाब अब्दुल्लाह इब्ने जुहेल अलकलबी अपनी जौज़ा हबीबा के साथ तशरीफ़ लाते हैं आप कबीला-ए-अलीम से ताल्लुक रखते थे, और कुफे के हमदान मोहल्ले में रहते थे, आप किसी तरह से छिपते छिपाते हज़रत हुसैन तक पहुंच गए जब आपको खबर लगी के हज़रत हुसैन कर्बला में खेमा जन है तो आपने अपनी जौज़ा से इस बात का ज़िक्र किया तो जौज़ा ने भी साथ चलने की ज़िद की आप जंग-ए-मकबूला में शहीद हुए आपके लाशें पर जब आपकी जौज़ा हबीबा गिरिया ज़र थी उस वक्त शिम्र के गुलाम स्तम लई ने सर पर नेज़ा मार कर हबीबा को शहीद कर दिया क्युकी हज़रत हुसैन की फ़ौज में कोई मोहतरमा शरीक नहीं थी इस लिए आपका नाम कर्बला की फेहरिस्त में नहीं आता है क्युकी जितनी टुकड़ी हज़रत हुसैन ने तैयार की थी वही कर्बला के शहीदों में गिने जाते है। क्युकी कई बच्चे प्यास से हलाक हो गए थे और कई गुलाम जो अपने आकाओं के साथ आए थे वह भी शहीद हो गए थे लेकिन उनका नाम कर्बला के शहीदों में नहीं आता। उसूलन कर्बला में ११२ लोग शहीद है लेकिन कर्बला के शहीदों की तादाद ७२ मानी गई है मेरे नज़दीक ७२ हुसैन के असहाब है और १८ बनी हाशिम यानी कुल तादाद ९० शहीदों की मानी जाती है आज ही की रात जुहेर इब्ने सलीम अलअसदी जो उमरे साद के साथ फ़ौज में शरीक हो कर आए थे और जब उनको यकीन हो गया की अब सुलाह मुमकिन नहीं है तो हुसैनी खेमो में आ गए, आप कुफे के बहादुरों में गिने जाते थे आप बड़ी बहादुरी से लड़े और जंग-ए-मकबूला में शहीद हुए।

धिरे-धिरे यह रात ७ मुहर्रम की लाली में कहीं गुम हो गई और अपने पीछे छोड़ गई एक कयामत भरा दिन ।

खुदा किसी बाप को उसके जवान बेटे की लाश न दिखाए क्यूकी बेटे की लाश का बोझ बाप के कंधे पर पूरी कायनात से भारी बोझ होता है, लेकिन अफसोस बेटा अली अकबर जैसा हो यानी हमशकले नबी, (दूर दूर से लोग जिन्होंने ने रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को नहीं देखा था) वह मदीने आते थे और हज़रत हुसैन से यह फरमाइश करते थे के हमने सुना है की आपके बेटे की शकल हु-ब-हु रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की शकल है और जब अली अकबर सामने आते थे तो वह तमाम सर ताज़ीम के लिए झुक जाते थे, हज़रत हुसैन को अली अकबर सबसे ज्यादा प्यारे थे क्यूकी वह नाना की शबी थे और वहां से रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की वह बात भी हकीकत बनती थी जिसको किसी दलील की ज़रूरत नहीं है कि अगर कोई अली अकबर से पूछता था के तुम्हारे वालिद का क्या नाम है, आप लहजे रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) में बोलते थे " **मैं हुसैन से हूँ** " और हकीकत में अली अकबर हुसैन के बेटे थे जब सब शहीद हो गए बार बार अली अकबर जंग में जाने की इजाज़त मांग रहे हैं लेकिन एक बाप कैसे इजाज़त दे-दे जब की आशूरे की शब हज़रत हुसैन ने यह कहा था की सबसे पहले मेरा बेटा जाएगा की कहीं ऐसा न हो की दुनिया कहे हज़रत हुसैन ने पहले असहाबो को कटवा दिया, बेशक बिलकुल सही है । हज़रत हुसैन जब ३ दिन के भूखे प्यासे और कर्बला के शहीदों को दुनियावी आलिम यह लिख सकते हैं की रोज़े-आशूरे हज़रत हुसैन और उनके असहाबो ने शहादत के पहले गुसुल किया, नहीं-नहीं हज़रत हुसैन ने हुक्म दिया की गुसुल के लिए एक खेमा लगाया जाए और उसमे खुशबू और नूरा का बखूबी इंतज़ाम किया जाए, नूरा असल में फ़ालतू बालो को साफ़ करने में इस्तेमाल किया जाता था, बारी बारी सबने गुसुल किया और रोज़े-आशूरे खेमो के बीच से हज़रत

हुसैन के असहाबो के हसने और मज़ाक करने की आवाज़ें बुलंद हो रही थी..... तो उनके लिए कुछ भी लिखना कितना आसान है ।

यह कैसे मुमकिन था की हज़रत हुसैन के दोस्त मौजूद रहे और हज़रत हुसैन का बेटा शहीद हो । यही एक जंग मुझको नज़र आती है की हर शहीद होने वाला पहले शहीद होना चाहता है और हर कोई यह चाहता है बनी हाशिम पर आंच ना आए और हर बनी हाशिम यही चाहता है की हज़रत हुसैन बच जाए, खैर हज़रत हुसैन ने अली अकबर को मरने की इजाज़त दे दी, कहा बेटा जाओ आले हरम से स्कसत हो लो, १८ बरस का कड़िअल नौजवान ३ रोज़ का प्यासा इतना खुश है जैसे किसी को अपनी शादी की खबर सुनकर खुशी होती है, अली अकबर खेमे में जाते हैं और अपनी माँ हज़रत लैला से स्कसत लेते हैं, यही माँ आशूरे की शब, जब यह तय हो गया की सुबह शहीद होना है, मैंने यह इसलिए लिखा की हर माँ यह समझ रही थी की इस जंग में सिर्फ़ शहादत है, जिंदा रहने की उम्मीद नहीं । फजर से कुछ वक्त पहले इसी माँ ने अली अकबर को ज़ानो पर लिटाया और चेहरे को देखने लगी सर पर हाथ फेरने लगी, खेमो में इतनी रौशनी तो है की चेहरा साफ़ दिख रहा है, लेकिन माँ ने रौगन को हाथ में उठा कर चेहरे के करीब कर लिया, शायद लैला अपने चाँद को दिल भर के देख लेना चाहती थी क्युकी यह चाँद अब जो छुपेगा तो रोज़े हशर में ही मुलाकात होगी, मेरा दिल यह कहता है की एक माँ का दिल यह तसव्वुर कर रहा होगा की मेरा बेटा दुल्हा बनता तो कैसा लगता, फज़र हुई माँ नहीं चाहती थी की मेरा बेटा उठे । हर कोई नई सुबह उठकर खुश होता है ताजगी महसूस करता है लेकिन हाय कर्बला वाले, उनकी माएं, उनके बच्चे, उनकी जौज़यें यह दुआ मांग रही थी की या खुदा सुबह ना हो काश कयामत आ जाए लेकिन सुबह ना हो. हज़रत हुसैन ने कहा अली अकबर अज़ान दो समझ में नहीं आया की हज़रत हुसैन ने अली अकबर से क्यूँ कहा अज़ान दो क्युकी इसके पहले कभी नहीं कहा, मुझे याद आ रहा है, फ़तेह मक्का का वक्त जो इस्लाम की सबसे बड़ी फ़तेह थी काबे में पहली अज़ान देना उस

वक्त सबसे बड़ा शर्फ का काम था। रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने अली से नहीं कहा के अज्ञान दो, रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने किसी सहबा से नहीं कहा, खुद भी रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने अज्ञान नहीं दी ताज्जुब है पहली नमाज़ तो रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने खुद पढी और पढाई और पहली अज्ञान किसी खास को भी नहीं एक गुलाम को हुक्म **"बिलाल"** अज्ञान दो, रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) का हर हुक्म मैं खुदा का हुक्म समझता हूँ। **जंग-ए-खैबर** में रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने कहा अली को बुलाओ लेकिन यहां क्यों नहीं। हज़रत बिलाल के अज्ञान देने से माज़-अल्लाह काबे की एहमियत कम नहीं बल्कि खुद बिलाल की इज्जत बढ़ गई। कर्बला में आज फज़र की अज्ञान खुद हमशक्ल-ए-नबी दे रहे हैं मैं आगे कुछ नहीं लिखूंगा..... यानी काबे को बुतों से आज्ञादी दिलाना इस्लाम पर बड़ा एहसान नहीं था लेकिन इस्लाम को यज़ीदी चुंगल से निकालना बेशक इस्लाम पर एहसान है। रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) जानते थे हाथियों कि बहुत बड़ी फ़ौज से खुदा ने अपने घर को बचा लिया तो मुशरिकीन से और उनके बुतों से काबे को बचाना कितना आसान काम था, तो रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने इतना आसान काम किया और उसका शर्फ हज़रत बिलाल को दे दिया। जब आल-ए-रसूल ने अपना खून बहाकर इस्लाम को बचाया तो अली अकबर ने रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की शक्ल में रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के लहजे में कर्बला में अज्ञान देकर यह शर्फ रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को दिला दिया।

अली अकबर की स्कसती मानो एक नौजवान लाशे की स्कसती के बराबर की थी जनाब-ए-लैला, जनाब-ए-ज़ैनब, उम्मे-कुलसुम, फिज्ज़ा वगैरह वगैरह इतनी बेचैन मुझे इससे पहले नज़र नहीं आई क्युकी सबको मालूम है की अली अकबर की लाश हज़रत हुसैन पे सबसे बड़ा सदमा

होगा, बेशक क्यों ना हो एक ऐसा शक्स ५७ बरस का जईफ़ ५ दिन का भूखा प्यासा जिसके सारे दोस्त, जिसके सारे भाई, जिसके सारे अज़ीज़ चन्द घंटो में मार दिए जाए उसका जवान बेटा यानी उसकी कुल ताकत, अली अकबर ने हज़रत हुसैन से इजाज़त मांगी की बाबाजान मैं मरने जा रहा हूँ, हज़रत हुसैन ने कहा खुदा हाफ़िज़, ऐ खुदा तू देख रहा है की मैंने राहे हक में अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया अली अकबर का घोड़ा तेज़ी से धूल उड़ाता हुआ फौजों की कतारों में छुप गया एक जईफ़ बाप की कमज़ोर निगाहें ज्यादा दूर क्या देख सकती थी, लेकिन हज़रत हुसैन को वह वक्त याद आ रहा है की जब मदीने में अब्दुल्लाह नाम का शक्स यह ख्वाहिश लेकर आया था की हमने सुना है की आपका एक बेटा हम-शक्ल-ए-नबी है, क्युकी हमने नबी (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को नहीं देखा है लेकिन हम उनकी ज़ियारत करना चाहते हैं, हज़रत हुसैन ने अली अकबर को बुलाया और अब्दुल्लाह देखते ही अपना होश खो बैठा और बोसा लेता है और हज़रत हुसैन से फरमाता है की मैं चाहता हूँ की आप खुदा से दुआ कर दे की मुझे भी वह इसी तरह का एक बेटा अता फरमा दे, हज़रत हुसैन ने कहा की बेशक मैं दुआ कर दूंगा लेकिन पहले तुम यह बताओ की अगर इस बेटे को चोट लग जाए तो तुम क्या करोगे उस शक्स ने तड़प कर कहा मैं अपनी आँख में चोट उसकी चोट की बदले खुदा से ले लूंगा लेकिन उसपर कोई आंच नहीं आने दूंगा, हज़रत हुसैन ने कहा की फिर ऐसे बेटे की तमन्ना ना करो यही बेटा, हाँ यही बेटा आज हमारे सामने शहीद होने जा रहा है इस लिए हज़रत हुसैन ने ऐसे बेटे की दुआ नहीं दी थी। यह कहते हुए हज़रत हुसैन खेमे में पलटे और लैला के खेमे में गए और कहा ऐ लैला हमने सूना है की माँ की दुआ खुदा कुबूल करता है, इसलिए आप अली अकबर के ज़िन्दा लौटने की दुआ करें लैला तो शायद इसी इंतज़ार में थी आप बारगाहे इलाही में हाथ उठाकर दुआ मांगने लगी, मैंने हज़रत हुसैन को एक पल के लिए टूटता हुआ पाया की जो हज़रत हुसैन २६ रज्जब ६० हिजरी से लेकर अब तक हर कदम पर मज़बूत रहे जिसने अपनों की लाशे उठाई, बच्चो की अलातश की आवाजें सुनी

लेकिन बेटे को जिन्दा देखने के लिए उनका दिल तड़प गया, लेकिन मेरा दिल और सोच उस वक्त के हालात के हिसाब से बहुत छोटी है. मैंने अली अकबर की वापसी की तमन्ना तो सुन ली लेकिन इसमें छुपा हुसैनी पैगाम नहीं समझ सका था.

ऐ मूसा (अलैहे सलाम) को उनकी माँ से मिलाने वाले, ऐ यूसूफ (अलैहे सलाम) को उनके बाप से मिलाने वाले, ऐ इस्माईल (अलैहे सलाम) को छूरी से बचाने वाले तुझे वास्ता है अपने हबीब का तू मुझे बेटे से मिलादे। लैला की दुआ खत्म नहीं होने पाई थी की अली अकबर ने खेमे में आकर सदा दी, यही कर्बला में जाकर एक हिस्से की जंग लड़कर खेमे में वापस आगए बिना ज़ख्मी हुए। हज़रत हुसैन ने बेटे को गले लगाया और इतना रोए की गाश में आ गए और जब होश में आए अली अकबर ने फरमाया बाबाजान आपने मेरी जंग देखि अगर एक कतरा पानी का मिलजाता तो मैं दुश्मनों को मिटा देता। किसी भी बाप के सामने जिसका बेटा मरने (शहीद) होने जा रहा हो और वह कोई ख्वाहिश कर दे और अगर वह बाप छोटी ख्वाहिश होने के बावजूद पूरी ना कर पाए तो उस बाप के सीने पर इस बेटे की मौत से भी बड़ा ज़ख्म, दर्द देती रहेगी।

हज़रत हुसैन ने कहा बेटे अपनी ज़बान मेरे मूह में दे दो (यह सुनने में छोटी सी बात है लेकिन हमारे लिए हमारी सोच के लिए बहुत बड़ी बात है, मैं अब क्या करूँ मैं अपनी सोच को बदल नहीं सकता, मैं अल्फाजो के मतलब को बदल नहीं सकता, मैं तो कहूँगा वाह हुसैन आपने अपने नाना का एहसान जो उन्होंने आपके पैदा होते ही आपके साथ किया था, आपने मरने से पहले वह एहसान चुका दिया और आपने रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) की वह हदीस बिलकुल सही साबित कर दी की मेरा हुसैन मुझसे है और “मैं हुसैन से हूँ”) अली अकबर ने हज़रत हुसैन के दहन में अपनी जुबान दी और फ़ौरन निकाल ली और कहा बाबा आपकी जुबान तो हमसे ज्यादा सूखी है यह एक जज़्बा था, एक पैगाम था, उस दुनिया के लिए जहां पर चन्द

अपने मतलबों के लिए बाप अपने बेटों को कुर्बान कर दिया करते हैं। चाहे पुराने ज़माने का बादशाह हो या नए ज़माने का हुकमरान, आज तक वही परंपरा चली आ रही है। जनाब-ए-अली अकबर को हज़रत हुसैन ने दुबारा रक्सत (रवाना) कर दिया उसी भूखी प्यासी हालत में और कहा “ऐ खुदा अब मेरे लखते जिगर को जंग के मैदान से ज़िंदा ना भेजना”, अली अकबर जंग के मैदान में पहुंच कर एक बेहतरीन जंग लड़ते हैं और यज़ीदी फौजों के छक्के छुड़ाते हैं, लेकिन अचानक दुश्मनों ने आपको चारों तरफ से घेर कर एक साथ हमला कर के शहीद कर दिया, आपने आवाज़ लगाई “ऐ बाबाजान मुझे बचाईए” लेकिन हज़रत हुसैन आपकी मदद ना कर सके, हज़रत हुसैन आगे बढ़े और अपने लखते जिगर के लारों को कंधे पर उठाकर किनारे ले आए। मेरी आँखों में आंसू, की किस तरह एक बूढ़ा बाप जवान बेटे के लारों को उठाए चले आ रहा है, मैं दुआ कर रहा हूँ ऐ खुदा किसी भी दुश्मन को यह दिन ना दिखाए क्यूकी “मैं हुसैन से हूँ”। ज़ैनब ने जैसे ही अली अकबर का खून से नहाया लाश देखा तो आप उनके जिस्म से लिपटकर इस तरह रोई के उनकी काली चादर अली अकबर के खून से लाल हो गई।

खेमो में तलातुम मच गया खानदान-ए-बनी हाशिम, खानदान-ए-बनी कमर सोग में डूब गए सबसे एहम बात तो यह थी जो लोग नबी की शर्बी देख कर सुबह की शुरुआत करते थे, क्या अब उनकी सुबह नहीं होगी ?। मैं बहुत परेशान हूँ की अब हुसैन का क्या होगा ?। मैं हुसैन को अपनी जगहा रख कर सोच रहा हूँ के अगर मेरे साथ यह वाकिया पेश आता तो मैं वहीं ज़मीन पर गिर पड़ता, लेकिन हज़रत हुसैन इस सख्त घड़ी में भी बिल्कुल मज़बूत खड़े हैं जैसे कोई पहाड़ जो तमाम बड़े बड़े तुफानों को झेलता रहता है और गुजरने के बाद जैसे के तैसे डटा रहता है, आज हम हज़रत हुसैन को उसी तरह मज़बूत देख रहे हैं।

७ मुहर्मा का सूरज नमूदार हुआ जो की ६ मुहर्मा से भी ज्यादा भारी था क्युकी कल तो कुछ मशक पानी आ गया था आज तो बिलकुल नहीं, औरतो की परेशानी बच्चो की प्यास, क्युकी लोग तो बर्दास्त कर सकते हैं लेकिन बच्चो को किस तरह बहलाया जाए क्युकी खेमो से अलाताश की आती हुई आवाजें हमारे कानो को तकलीफ पहुंचा रही है और आँखों से खून के आंसू बह रहे है। लेकिन मैं मजबूर की चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता क्युकी खुदा का हुक्म नहीं है।

अब्बास परेशान की क्या किया जाए ?. किस तरह “पानी” नेहरे फुरात से लाया जाए। ताकि बच्चो की प्यास बुझाई जा सके लेकिन “हज़रत हुसैन” का हुक्म नहीं, आप तिलमिलाए हुए इधर से उधर घूम रहे हैं। दर हकीकत यह थी की हज़रत हुसैन इस जंग को आशूरे की सुबह लड़ना चाहते थे, क्युकी आपको मालूम था की मेरी शहादत का दिन खुदा ने मुकर्रर कर दिया है और अब अगर पानी लाने की कोशिश की गई तो जंग लाज़मी है, जिसमे कुछ नौजवान और बच्चे एक हल्ले में मारे जाएंगे। हज़रत हुसैन चाहते थे की पूरा एहले अवाल मेरे साथ एक दिन में शहीद हो। हज़रत हुसैन तन्हा शहीद होना नहीं चाहते थे। हुसैनी खेमो को पूरी तरह से घेरा जा चुका था। यानि यूं समझो की किसी को घेर कर यानी चारो तरफ से एक गोल दायरा बनाकर कत्ल किया जा रहा हो, बलकी मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे लाखो फौजों की दीवार खड़ी करदी गई हो, ताकि कोई भी बच कर ना जा पाए। आज उमरे साद ना चाहकर भी सख्ती करने पर मजबूर है, क्युकी वह हर हाल में हुक्मत-ए-रे हासिल करना चाहता है, उसके लिए अब वह हर कुर्बानी देने को तैयार है, चाहे कत्ल-ए-हुसैन ही क्यों न करना पड़े।

शहादत के मुकाम के लिए सभी आले-रसूल बेताब है, हर शक्स यही चाहता है की मुझे पहले जंग करने के लिए भेजा जाए हज़रत हुसैन अपने खेमे में बैठे मशवरा कर रहे हैं। साथ में

नबी-ए-करीम (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के सहाबा और तमाम अंसार है, सबकी राय ली जा रही है, वही तरीका, वही अंदाज जैसे नाना जान किया करते थे, मैं भी कुछ बोलना चाहता हूँ क्युकी “मैं हुसैन से हूँ” । दर हकीकत मैं यह चाहता था की आप यह जिम्मेदारी मेरे हवाले कर दे ताकि मैं इन लाखो यज़िदियों को वह सबक सिखाऊं ताकि इस कायनात में दूसरा यज़ीद बनना तो दूर कोई अपने बच्चे का नाम भी यज़ीद ना रखे ।

जब हज़रत हुसैन तरतीब समझाते की पहले कौन जंग करने जाएगा फिर उसके बाद कौन जाएगा तो एक गुलाम जिसका नाम जान था और वह हब्शी था उसने कहा आप मुझे जंग में जाने की इजाज़त दें, हज़रत हुसैन ने उसे मना कर दिया, वह फिर आपसे गुजारिश करता है लेकिन आप इनकार कर देते हैं. **“जान”** से बर्दास्त नहि हुआ तो वह कहने लगा “हाँ अब मैं समझ गया की आप मुझे क्युं मना कर रहे हैं, क्युकी मैं गुलाम हूँ और आप आल-ए-नबी हैं, मेरे खून से बदबू आएगी और आपके खून से खुशबू आएगी और कहीं ऐसा ना हो की बदबू वाला खून खुशबू वाले खून से मिल जाए”, जब गुलाम अपनी बात कह चूका तो हज़रत हुसैन ने जवाब दिया “जान तुम्हारे खून से मुश्क जैसी खुशबू आएगी” । जब जान को जंग लड़ने की इजाज़त मिल गई तो उसने भी एहले बैत के लिए जंग लड़ी और शहादत का दरजा पाया ।

जंग-ए-कर्बला खत्म होने के बाद जब एक काफिला वहां से गुजर रहा था तो उस काफिले वाले तमाम जिस्मो को ठिकाने लगाने लगे और उन लोगो को एक हब्शी गुलाम के खून की सबसे ज्यादा खुशबू आ रही थी ।

हुसैन के मूह से निकली हर दुआ खुदा कुबूल कर रहा है लेकिन बच्चो के मूह से निकलती हुई अलाताश की आवाजों को हुसैन नहीं रोक पा रहे हैं तमाम दुआ के बावजूद मासूमो को पानी मुहैय्या नहीं करवा पा रहे हैं, अजीब-ओ-गरीब मंजर है ।

मैं बेहद परेशान रनजीदा कुछ चाह कर भी कुछ नहीं कर पा रहा हूँ। काश खुदा मुझे हुक्म दे देता तो मैं यह काम बड़ी आसानी से कर देता। उमरे साद ने फौजों को नहरे फुरात पर सख्त पहरे का हुक्म दे रखा था, की एक कतरा पानी भी हुसैनी खेमो में ना पहुंच पाए।

इधर अब्दुल्लाह इब्ने-ज़ियाद ने हुसैनी लश्कर पर दबाव बनाने और उमरे साद को फौजों को मजबूत करने के लिए १०,००० का लश्कर और भेजा अब यज़ीदी फ़ौज की तादाद ६९,००० हो चुकी थी।

हज़रत कासिम इब्ने हसन, हज़रत हुसैन के पास अदब से कहते हैं, चचा जान आप मुझे भी जंग पर भेज दीजिए हज़रत हुसैन ने यह कह कर इनकार कर दिया की तुम तो मेरे भाई की निशानी हो मैं तुमको जंग पर जाने की इजाज़त नहीं दे सकता. जनाब-ए-कासिम मायूस होकर अपने खेमे में तशरीफ़ ले जाते हैं और बेचैन रहते हैं अचानक उनका बायां हाथ दाहिने हाथ पर बंधे इमाम जामिन पर जाता है, तो वह उसे खोल देते हैं की इसमें क्या है ?। हज़रत कासिम ने ताबीज़ में लिखे खत को पढा जो इस तरह था " ऐ मेरे बेटे हमारे खानदान पर एक वक्त ऐसा आएगा जब तुम्हारे चचा हुसैन इब्ने अली पर यज़ीदी फ़ौज हमला करेगी इसमें तमाम बनी हाशिम, बनी कमर और अंसार शहीद होंगे तुम हुसैन का साथ दोगे और उनके पहले तुम शहीद होगे मैं तुमको अपने भाई पर कुर्बान करता हूँ, तुम्हारा हसन इब्ने अली ". खत पढते ही आप खुशी से चिल्लाते हैं और खत को लेकर हज़रत हुसैन के खेमे में जाते हैं और खत का मज़मून पढवाते हैं, हज़रत हुसैन खत पढ कर खामोश हो जाते हैं और कुछ ही पलो बाद बोलते हैं की मैंने भी अपने भाई से वादा किया था की मैं अपनी बेटी कुबरा का निकाह कासिम से करवाउंगा। आपने अपनी बेटी का निकाह खुद पढाया अजीब ओ गरीब हालत है, दुल्हन सजी और दुल्हा सजा लेकिन राते जफ़फ़ाफ़ा की घडी नहीं आई आप अपनी जौज़ा से स्क्सत होने की इजाज़त मांगते हैं, एक रात की दुल्हन जिसने दिल

भर कर अपने शौहर को देखा भी नहीं इजाज़त देती है, आप अपनी माँ से जंग पर जाने की इजाज़त मांगते हैं माँ उन्हें आंसू भरी आँखों से निहारती है और वह यह भी जानती है की अब मैं अपने बेटे से दोबारा नहीं मिल पाऊंगी यानी उनका बेटा मौत के मूह में जा रहा है जहां से कोई लौट कर वापस नहीं आता, आप एहले हरम से स्वसत होकर जंग पर निकल जाते हैं ।

हज़रत कासिम अपने घोड़े पर सवार होकर यज़्ज़ीदी फ़ौज के सामने जंग करने के लिए पहुंच जाते हैं आप पहुंच कर शिम्र को ललकारते हैं, तो शिम्र अपने जांबाज़ सिपाहियों को मुकाबला करने के लिए भेजता है, आप बड़ी बहादुरी से उनको शिकस्त देते हैं, शिम्र आपकी जंग देखकर घबरा जाता है और एक साथ तमाम सिपाहियों को भेजता है, जो आपको चारो तरफ से घेरकर हमला करते हैं । आपने दुश्मनों के दांत खट्टे कर दिए, तमाम यज़्ज़ीदी क़त्ल हुए लेकिन कब तक एक तन्हा इंसान सैकड़ो से मुकाबला करता, आखिर कार दुश्मनों के चौतरफा हमले से आप घोड़े से नीचे गिर जाते हैं और फिर वापस उठ ना सके । यज़्ज़िदियो के तमाम घोड़े आपके जिस्म को रौन्दते हुए गुजरे इतनी बेदरदी जिसको देख कर शैतान भी शर्मा गया । जब आपका जिस्म मुबारक हज़रत हुसैन को मिला तो वह दब-दब कर लम्बाई में दुगना हो गया था । खेमो में रोने की आवाज़े गूँजने लगी ।

हज़रत हुसैन आपके लाशें से चिपक कर खूब रोए जब जनाब-ए-ज़ैनब ने आपका यह हाल देखा तो वह भी अपने भतीजे से चिपक कर खूब रोई ।

आहिस्ता-आहिस्ता ७ मुहर्रम का सूरज ढल गया और ८ मुहर्रम की शब नमुदार हो गई ।

८ मुहर्रम की रात काफी परेशानियों से भरी थी उमरे साद शिम्र की तमाम बातों को ना चाह कर भी अमल में ला रहा था । हज़रत अब्बास पूरी मुस्तैदी के साथ आल-ए-हरम की खेमो की

निगरानी कर रहे हैं, बस खौफ और डर के किस तरह हज़रत हुसैन और उनकी आल की हिफाज़त की जाए, खेमो में प्यास से चिल्लाते हुए बच्चो की आवाज़े अब बर्दास्त नहीं हो रही है, बड़े कश-म-कश में है क्या करूं और क्या ना करूं, आपको याद है जब पिछली बार कमर-ए-बनी-हाशिम २ मशक पानी लाए थे तो नौबत जंग की आ गई थी तो क्या फिर वही खतरा उठाया जा सकता है हालात को देखते हुए अचानक हज़रत अब्बास के पूरे जिस्म में बिजली दौड़ जाती है। आप एक नज़र से तमाम एहले हरम को देखते हैं मशक को अपने कंधे पर डालते हैं और बिजली की रफ्तार से घोड़े पर सवार होकर दरिया-ए-फुरात के लिए रवाना हो जाते हैं, मैं यह देख कर ताज्जुब में पड़ जाता हूँ की जिस पानी के लिए आप जा रहे हैं वहां तो हज़ारों की फ़ौज से जंग करना पड़ेगी मैं तो यह कहूँगा की पानी लेने नहीं बल्कि मौत लेने जा रहे हैं यह तो हम पहले ही बता चुके हैं की अब्बास वह शेर है जो अकेले ही पूरी जंग लड़ सकता है, यह वह शेर-ए-अली है जो झुंड में नहीं चलता बल्कि बड़े बड़े झुंड इससे डर कर भागते हैं।

अब्बास जैसे ही नहरे फुरात के करीब पहुंचते हैं यज़ीदी फ़ौज होशियार हो जाती है, मैं तो यह कहूँगा की फ़ौजे अब्बास को देख कर दंग है और उनमें खौफ तारी हो गया है अब्बास कहते हैं मैं तुमसे जंग लड़ने नहीं आया हूँ, मैं सिर्फ प्यास से तड़पते बच्चो कि खातिर एक मशक पानी भरना चाहता हूँ। अब्बास की बात सुनकर फ़ौज खामोश रही। मुझे लगता है की वह चाहते थे के अब्बास को पानी मिलना चाहिए, मौके की नज़ाकत को देखते हुए उमरे साद आगे बढ़ा और कहा हमारे खलीफा यज़िद का यह हुक्म आया है की नहरे फुरात का पानी हुसैनियो पर बंद कर दिया गया है, अब्बास बोले की यह पानी मासूम बच्चो के लिए है जो कई दिनों से प्यासे हैं और मैं भी यह पानी नहीं पिऊंगा, उमरे साद मजबूर क्या करूँ क्या ना करूँ इसी दरमियान अब्बास बिजली की रफ्तार से फ़ौजियों के बीच से निकलकर नहरे फुरात पहुंच कर जल्दी-जल्दी मशक भरते हैं और पीठ पर लाद कर अपने घोड़े पर सवार होकर खेमे की तरफ घोड़े को दौड़ाते हैं, अब्बास का

मकसद जंग करना नहीं था, उनको प्यास से तड़पते हुए बच्चो का खयाल था, इसी लिए आप कुर्बानी देना चाहते हैं, इधर उमरे साद हक्का बक्का की क्या हो रहा है, उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा है के अब्बास को रोकू या जाने दूं क्युकी इसको याद है इब्ने ज़ियाद का फरमान के हुसैन और हुसैनियों पर नहरे फुरात की एक-एक बूँद हराम है और अगर इसकी खबर इब्ने ज़ियाद को लग गई तो मेरा ख्वाब " रे " की हुकूमत का अधूरा रह जाएगा । यह खयाल आते ही उमरे साद फौजियों को हुक्म देता है की अब्बास का पीछा करो, हुक्म सुनते ही सैकड़ो घुड़-सवार फौजी तेज़ रफ्तार से अब्बास का पीछा करने लगते हैं, और तीरों और भालो से हमला करने लगते हैं । अब्बास घोड़े को और ज़्यादा रफ्तार से भगाते हैं । अब्बास को जानसे मारने की पूरी कोशिश की जा रही है और कई बार तो ऐसा लगा की यह तीर तो अब्बास का काम तमाम कर देगा लेकिन अब्बास बार बार मौत को मात देते रहे, तकरीबन २ मील का रास्ता आप तय कर चुके थे और धुन्दले धुन्दले खेमे नज़र आने लगे । आपकी आंखो में खुशी छलकने लगी, आप अपने घोड़े को और तेज़ भगाते हैं ताकि जल्द से जल्द खेमे पहुंच कर मासूम बच्चो को पानी पिला दूं, अब आप खेमो के काफी करीब पहुंच चुके हैं और अगर इसी रफ्तार से चलते रहे तो अगले ५-१० पालो में अपने मुकाम पर पहुंच जाएंगे । तभी अचानक एक तीर आपके बाजू को चीरता हुआ पार हो गया आपका बाजू कट गया मशक ज़मीन पर गिर गया, अब्बास फ़ौरन घोड़े से नीचे उतरते हैं और मशक उठाने की कोशिश करते हैं, लेकिन कामियाब नहीं हो सके फिर आप मशक को अपने दांत से दबाकर घोड़े पे सवार होकर खेमे कि तरफ रवाना होते हैं, पीछे से दुश्मन आप पर तीरों से हमला कर रहे हैं, अब आप खेमो से बिलकुल नज़दीक पहुंच चुके हैं, तभी आप गिर जाते हैं चारो तरफ से हमले हो रहे हैं कई तीर आपके जिस्म को ज़ख्मी कर चुके हैं, अचानक एक तीर आपकी आँख में घुस जाता है जिस वजह से आप घोड़े से नीचे गिर जाते हैं फिर भी आप मशक को बचाने में कामियाब है । आप उस तीर को निकाले तो कैसे निकाले, बाजू तो पहले ही कट चुके है,

अब्बास इतनी तकलीफ उठा रहे हैं तो सिर्फ प्यास से तड़पते और रोते बच्चो की खातिर, की किसी भी तरीके से पानी पिला सकू, मैं अब्बास की हिम्मत पर कुरबान जाऊं, तभी तो मैंने लिखा है की मैं जितना लिखू अब्बास के बारे में कम है, अब्बास आँख में घुसे तीर को निकालने की कोशिश कर रहे हैं आप दोनों घुटनों के बीच सर को लाते हैं और तीर को घुटने से फसा कर सर को खींच कर तीर निकालते हैं। आँख से खून जारी हो जाता है। आप फौरन दूसरी बार मश्क को दांत से उठाकर भागने की कोशिश करते है तभी एक तीर मश्क को चीर देता है और सारा पानी ज़मीन पर बिखर जाता है। मश्क का पानी जैसे ही बिखरा यूं समझो अब्बास की रूह जिस्म से निकल बिखर गई।

८ मुहर्रम का सूरज नमूदार हो गया आज तपिश कुछ ज्यादा ही है, खेमो में भूख और प्यास से तड़पते बच्चे और औरते उसपर रेगिस्तान की तपिश और उससे ज्यादा यज़ीदी फौजों का जमावड़ा जो कर्बला के माहौल को और गर्म कर रहा था अब हर जगहा नाक बंदी की हालत है। अगर आस पास के कबिले वाले चाहे की चोरी छुपे हुसैनियो की मदद कर दें, तो अब नामुमकिन है। मैं हर पल को बारीकी से देख रहा हूँ। लेकिन मैं आज कुछ ज्यादा ही परेशान हूँ क्युकी मैं भी तो हुसैन से हूँ, शिम्न ने एक बार फिर अपनी फौजों का मुआइना किया, उमरे साद से कुछ गुफ्तगू की, शिम्न ने उमरे साद से कहा देखो कहीं से भी चूक ना हो जाए, एक बेहतरीन मौका है हुसैन को उनके एहलो अवाल के साथ खत्म करने का और इससे अच्छा मौका नहीं मिल सकता। लेहाज़ा कोई गलती नहीं करना वरना तुम्हारा ख्वाब "रे" की हुकूमत करना खत्म हो जाएगा। उमरे साद जवाब देता है की मैं रे के लिए ही तो इस काम को अंजाम दे रहा हूँ, वरना मैं इस काम,के लिए राजी भी नहीं होता, शिम्न ने इब्ने ज़ियाद को कासिद के हाथो एक खत भेज जिसमे कर्बला के ताज़ा हालात और कुछ और कुमुक (फ़ौज) भेजने के लिए कहा जिसका नतीजा यह हुआ की दिन

ढलते ढलते ७००० का लश्कर शबस्त की निगरानी में कर्बला पहुंच गया यानी ९ मुहर्रम की शब में यज़ीदी फौजों की तादाद ७६,००० हो चुकी है। मेरी समझ में नहीं आ रहा है की एक छोटे से लश्कर के लिए इतनी बड़ी फ़ौज। क्या यज़िदियों में इतना खौफ तारी है, की इतनी तादाद में जमा हो कर भी कहीं न कहीं यह मुट्टी भर सबर और शुकर वाले इन लोगो पर भारी न पड जाएं। आहिस्ता आहिस्ता ९ मुहर्रम की शब रात के अंधेरे में सोने लगी। लेकिन हज़रत हुसैन को नींद नहीं आ रही है क्युकी जंग करना ९ मुहर्रम को तय था। आप उमरे साद को एक पैगाम भेजते हैं की मैं इस जंग को १० मुहर्रम को लडना चाहता हूँ, सिर्फ एक दिन की बात है। उमरे साद पैगाम सुनकर खुश हो गया, क्युकी उमरे साद शुरू से ही समझौता करवाना चाहता था वह अपने हाथ हुसैन के खून से रंगना नहीं चाहता था। उमरे साद ने कयास लगाया शायद हुसैन जंग लडने से कतरा रहे हैं, शायद हुसैन बैत करना चाहते हैं, इसलिए एक दिन की मोहलत मांग रहे हैं। यह सोचकर उमरे साद ने हामी भर दी की शायद रात में अपने अंसारो और अपने खानदान के लोगो में बैठ कर मशवरा करेंगे।

हज़रत हुसैन अपने खेमे में चहल कदमी कर रहे हैं, मैं सोच रहा हूँ की इतनी रात गुज़र चुकी है, तमाम लोग अपने अपने खेमो में आराम कर रहे हैं, एक आप ही हैं जो टहल रहे हैं और कुछ बड बडा रहे हैं की कोई आ रहा है - कोई आ रहा है, मैं समझा मुझे याद कर रहे हैं क्युकी मैं हुसैन से हूँ, इसलिए मैं उनके करीब पहुंच गया और सुनने की कोशिश करने लगा अब मुझे आवाज़ साफ़ - साफ़ सुनाई दे रही है, हुसैन कह रहे हैं कोई आ रहा है कोई आ रहा है, मैं सोच में पड गया की इतनी रात गए और इतनी बड़ी तादाद में फौजों की घेर बंदी में कौन आ सकता है, तभी दूर से घोडो की टापों की आवाजें आने लगी और धीरे-धीरे टापों की आवाज़ साफ़ सुनाई देने लगी और खेमो के बाहर से किसी मर्द आवाज़ ने पुकारा हुसैन ने काहा कौन है ?! और क्या चाहते

हो ?। जवाब मिला मैं हर हूँ, आपसे मिलना चाहता हूँ, हज़रत हुसैन खेमे से बाहर निकले और हर को अन्दर ले आए, हर से बैठने को कहा लेकिन हर सर झुकाए हाथ बांधे खड़ा रहा और बोलने लगा "मैं आपका गुनाह गार हूँ, मेरी वजह से ही आप पानी की एक एक बूँद के लिए तरस रहे हैं, अगर मैं आपको नहरे फुरात से दूर खेमा लगाने को ना कहता तो आज इस तरह बच्चे प्यास से ना तड़पते, मैं खुद इसका मुजरिम हूँ मेरा गुनाह माफ़ी के लायक नहीं, अगर हो सके तो मुझे माफ़ कर दें". हुसैन ने फरमाया ऐ हर हम तुमको माफ़ करते हैं। हर ने कहा अगर आपने मुझे माफ़ कर दिया है तो " जब जंग शुरू हो तो सबसे पहले आप मुझे ही जंग पर भेजेंगे और मेरे हाथ पीछे से बांध देंगे, अगर आपने ऐसा किया तो हम समझेंगे के आपने हमे माफ़ कर दिया, नहीं तो समझूंगा आपने माफ़ नहीं किया। हज़रत हुसैन ने जवाब दिया ऐ हर मैंने तुमको माफ़ कर दिया मैं जानता हूँ तुमने जो कुछ भी किया तुम्हारी वह मजबूरी थी और जो अब कर रहे हो वह तुम्हारा हक़ है और हक़ वाले बातिल का साथ नहीं देते।

हज़रत हुसैन ने अपने दिए हुए वादे के मुताबिक़ जनाबे हर को जंग में भेज और वह शहीद हो गए।

९ मुहर्रम की शब ख़त्म हो गई और ९ मुहर्रम का सूरज नमूदार हो गया, हालात यह है की औरते खाली बर्तनों को भरा समझ कर उठा रही है, आज इतना भी मयेस्सर नहीं की बच्चो को खाने की जगह गरम पानी उबाल कर ही पिला दे। हाय रे वक्त यह वही आल-ए-हरम है जिनके घरों से कोई मांगने वाला, सवाल करने वाला आज तक खाली हाथ नहीं लौटा, अनाज और दौलत से लबरेज़ जिनके घर में चुल्हा हमेशा जलता रहता था, पता नहीं कौन मुसाफ़री या कौनसा मेहमान आ जाए और वह भूखा ना रह जाए। लेकिन आज ना तो कोई मेहमान और ना कोई मुसाफ़िर और ना ही घर में एक दान खाना खाने के लिए। औरते अपने मासूम बच्चो को अपने

पास बिठा कर निहार रही है, हर बच्चा यह कह रहा है "मैं हुसैन से हूँ"। मैं यह मंज़र खुद देख रहा हूँ की बच्चों में भी उतना ही सब्र दिख रहा है जितना बड़ों में है और इन मासूमों में जनाब-ए-ज़ैनब के दोनों बेटे " **औन** " और " **मुहम्मद** " भी हैं, दोनों बेटों को जनाब-ए-ज़ैनब अपने भाई पर कुर्बान करने के लिए जंग के मैदान में भेजती हैं, छोटे-छोटे बच्चे क्या जंग करते दुश्मनों के एक हमले में बच्चे शहीद कर दिए गए, जब बच्चों के जिस्म को जनाब-ए-ज़ैनब के सामने रखा तो आपने उनके माथे पर हाथ फेरा और खुली हुई आँखों को बंद कर दिया और खामोश रही। मैं बड़े ताज्जुब में हूँ की यह वही किरदार है जो अली अकबर के लाशे से लिपट लिपट कर रोई वह अपने बेटों के लाशों को देख कर खामोश क्यों बैठी है ?! यह तो खुद ज़ैनब जाने या खुदा जाने लेकिन जंग ख़त्म होने के बाद जब ज़ैनब अपने घर पहुंची और अपने बेटों के पढ़ने की जगह को देख कर खूब रोई यहां तक बेहोश हो गई। यह मेरा अपना खयाल है की कर्बला में ना रोने की वजह या सबर करने की वजह यह हो सकती है की उनके रोने से कहीं हुसैन कमजोर ना पड़ जाए या यह ना कहे की मेरी वजह से मेरी बहन की गोद उजड़ गई। लेकिन तारीफ है ज़ैनब की अपने भाई के ऊपर अपने बेटों को निछावर कर दिया।

९ मुहर्रम को फौजों की तादाद और बढ़ने लगी उमरे साद को कल रात जो उम्मीद जागी थी की हुसैन जंग को टाल देंगे और यज़ीद से बैत कर लेंगे, वह शाम होते होते ना उम्मीदी में तब्दील हो गई। क्यूकी ९ मुहर्रम का सूरज काफी तपने के बाद डूब रहा है। लम्बी लम्बी परछाइयां और फिर अंधेरा और १० **मुहर्रम** की शब दिन भर की परेशानियों को अपने आघोष में ले रही है। आज वह शब है जिसका मसियत को काफी लम्बा इंतज़ार करना पड़ा। ना जाने कितनी मख़लूके इसका इंतज़ार कर रही थी। हज़रत हुसैन अपने खेमों में बैठे अपने अंसारों से गुफ्तगू कर रहे हैं, कल की जंग के बारे में के कल क्या होगा और दुश्मन-ए-हुसैन अपनी चालों पे

चाले चले जा रहे हैं। आज इनकी आँखों में शैतानी खुशी है, इन्हें अपनी कामयाबी नज़र आ रही है, फौजों की टुकड़िया खेमो के करीब सिमट कर आ चुकी है।

हज़रत हुसैन को अगर फ़िक्र है तो बच्चो और अंसारो की, कहीं उनकी दुश्मनी का खामियाज़ा इनको ना भुगतना पड़े। हज़रत हुसैन को फ़िक्र है की नाना जान ने जो वादा खुदा से किया है वह हर हाल में पूरा होना चाहिए और जो वादा हज़रत हुसैन ने अपने नाना से किया है वह हर हाल में पूरा करना है, हज़रत हुसैन को हर हाल में इस्लाम को बचाना है। अब सबसे बड़ी फ़िक्र इस्लाम कि है जो की यज़ीद की वजह से खतरे में पड़ चूका है, उसकी हिफाज़त करना है और इस्लाम फैलाना है। जब रात अपनी शबाब पर आ गई तब हुसैन ने अपने खेमे में सभी लोगो को जमा किया और मशालो की लौ को बढ़ा दी ताकि सभी हजरात साफ़ साफ़ नज़र आए जब सभी लोग इक़ठा हो गए तब हज़रत हुसैन ने खुतबा देना शुरू किया।

“ अस सलाम अलैकुम मैंने आप सबको ”

जमा किया है ताकि मैं अपनी बात रख सकू

मैंने २ मुहर्रम से लेकर ९ मुहर्रम तक तमाम हुज्जते की

ताकि कोई रास्ता निकले लेकिन दुश्मन राज़ी नहीं हुआ।

हम जानते हैं यज़ीद की दुश्मनी हमसे है ना तो अंसारो से और ना ही बनी कमर से है।

लेकिन आप सबको मेरी वजह से पिछले कई दिनों से भूखा और प्यास रहना पड़ रहा है

और अब जान पर आफत है।

कल यानी आशूरे को हम सबको क़त्ल कर दिय जाएगा जबकि किसी का कोई कसूर नहीं है ।

आपमें से जो भी जाना चाहे वह हमे छोड़ कर जा सकता है और रही बात जन्नत की वह

सबको नसीब होगी ।

इसके साथ आपने मशाल बुझाकर अंधेरा कर दिय ताकि जाने वालो को कोई देख ना सके, हज़रत हुसैन ने दोबारा मशाल जलाई तो देखा जो जहां बैठा था वह वही मौजूद है । आपने यह देख कर अपने फैसले पर खुशी महसूस की के मेरे फैसले पर सबकी एक राय है । अंसारो ने हज़रत हुसैन से मुखातिब हो कर कहा क्या आप यह समझते हैं “हम जन्नत की लालच में आपका साथ दे रहे हैं ”, तो हर गिज़ नहीं, हमे भी हशर में खुदा और नबी-ए-करीम (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) को मूह दिखाना है । हम कल की जंग में आपसे पहले शहीद होंगे इंशाअल्लाह, हमारे होते हुए आपको और एहले हरम को आंच भी नहीं आएगी । इन बातो को सुनने के बाद हुसैनी लश्कर में एक नई जान आ गई, एक नया जोश पैदा हो गया, यह वहि सिपाही है जो ३ दिन से भूखे प्यासे है, लेकिन अपने आका पर मर मिटने के लिए बेताब है । मैं आज बहुत सहमा हुआ हूँ के किसी तरह ९ दिन तो गुजर गए और मैं हज़रत हुसैन को देख कर मुतमईन हूँ लेकिन कल की सुबह क्या मैं यह सूरज (हज़रत हुसैन) को देख सकूंगा ? . क्युकी मैं हुसैन से हूँ । तो सोचना लाज़मी है । हज़रत हुसैन अपने अज़ीज़ दारो से बैठ कर बात कर रहे हैं और सबको समझा रहे हैं की कल जंग को किस तरह अन्जाम देना है । अजीबो गरीब कैफियत है हज़रत हुसैन अगर कुछ भी सोच रहे है तो अपने खानदान की औरतो के बारे में, उनके बाद उनकी बहनों, बेटियों और बीवियों का क्या होगा । उनको शहर बनो का वाकिया अच्छी तरह याद है, शहर बनो से एक औलाद हुई जिन्हें हम **जैनुल अबिदीन** कहते हैं, तमाम मर्दों में सिर्फ आप ही अकेले बच गए, क्युकी आप बीमार थे, और जंग पर नहीं गए थे । शहर बनो की हुकूमत इरान में थी जब हज़रत अली ने इरान पर हमला

किया था तो उस जंग में शहर बनो कैदी की शक्ति में आई थी, शहर बनो का एक भाई जिसका नाम **विक्रम-आदित्य-२** था। वह उस वक्त हिन्दुस्तान में हुकूमत कर रहा था। हज़रत अली ने जंग खत्म होने के बाद सबको आज़ाद कर दिया था लेकिन शहर बनो ने ईरान जाने से इनकार कर दिया तब हज़रत अली ने कहा तुम यहां पर बैठे तमाम मर्दों में से जिसे चाहो अपना शौहर बना सकती हो। यह सुनकर तमाम मर्दों में दिलचस्वी बढ़ी इन मर्दों में यज़ीद भी मौजूद था वह शहर बनो पर फ़िदा था और उम्मीद कर रहा था की शहर बनो उसको ही पसंद करेगी क्यूकी वह शादी शुदा नहीं है। लेकिन शहर बनो ने हज़रत हुसैन को पसंद किया लिया और निकाह कर लिया। यज़ीद के दिल में एक तरह से जलन पैदा हो गई और वह हर हाल में शहर बनो को हासिल करना चाहता था। हज़रत हुसैन के दिल में यह यकीन था की वह ज़रूर शहर बनो को कैद करेगा, इस लिए आपने अपने घोड़े जिसका नाम **जुलजिना** था उसके कान में कुछ कहा, क्या कहा यह तो खुदा ही जाने। लेकिन घोड़े ने अपनी वफादारी दिखलाई, घोड़े ने जब यह देखा की हज़रत हुसैन शहीद हो चुके हैं, तो यही घोड़ा तेज़ रफ़्तार से वापस आता है और शहर बनो के पहरन को पकड़ कर खींचता है, आप समझ नहीं पाती की घोड़ा क्या चाहता है, जब आप खेमे से बाहर निकल आई तो घोड़ा बैठ गया और इशारा कर रहा है की मेरी पीठ पर बैठ जाओ, आप घोड़े की पीठ पर बैठ जाती है, घोड़ा आपको तेज़ रफ़्तार से जंगल की तरफ ले जाता है और एक जगह जाकर रुक जाता है, यह ऐसी जगह थी जहां बीच में मैदान और चारो तरफ पहाड़ थे। शहर बनो घोड़े से उतर कर ज़मीन पर खड़ी हो जाती है, घोड़ा शहर बनो के पास से हट जाता है, तभी दुश्मनों के घोड़े की करीब आने की आवाज़ें आती है। शहर बनो घबरा कर उसी जगह बैठ जाती है, घोड़ा आते हुए दुश्मनों के सिम्ट चलता है, तभी दुश्मन रुक कर शहर बनो को देख कर चिल्लाते हैं, घोड़ा दुश्मनों और शहर बनो के बीच खड़ा रहता है, मैं सोच रहा हूँ की यह घोड़ा शहर बनो की हिफाज़त कैसे कर पाएगा। तभी अचानक शहर बनो जिस हिस्से पर बैठी थी वह हिस्सा धस गया

और कुछ ही पालो में वह हिस्सा दोबारा बराबर हो गया यह मंजर देख कर दुश्मन में खौफ तारी हो गया और वह वहां से भाग गए। जब जुलजिना ने देखा की शहर बनो को ज़मीन ने अपनी आगोश में ले लिया है। तो वह पहाडो के करीब पहुंच कर अपने सर से टक्कर मार-मार कर अपने को लह लोहान कर लेता है और मर जाता है। वह रे वफादार घोडे तू भी हुसैन से है।

हज़रत हुसैन अपने एहले खानदान को अपने नज़रिए से देख रहे हैं और सोच रहे हैं इनका क्या होगा यज़ीद की दुश्मनी तो मुझसे है, लेकिन इसका खामियाजा मासूम बच्चो से लेकर बूढों तक को उठाना पडेगा। " ऐ खुदा मैं तुझसे दुआ करता हूँ की अगर मेरा फैसला ज़र्रा बराबर भी कमज़ोर है तो मुझे माफ़ करना मैं अपने नाना को दिए वादे को पूरा करने जा रहा हूँ इसका तू खुद गवाह है"।

हज़रत हुसैन अपनी बहन ज़ैनब को आवाज़ देते हैं, के बच्चो को सुला दो, तो आप कहती है बहुत कोशिश की भाई बच्चे भूख और प्यास के मारे नहीं सो पा रहे है, आप बच्चो के पास जाते है और उनके सर पे हाथ रखते है और कहते है मेरे प्यारे बच्चो इस भूख और प्यास का ज़िम्मेदार मैं हूँ मैंने लाख कोशिशे कर ली की हमारी दुश्मनी की आंच (आग) तुम लोगो को ना जलाए लेकिन अफसोस हमारी सारी कोशिशे नाकाम रही। यज़ीद और उसके फौजियों का एक ही मकसद है की कोई भी जो अपने को कहता है मैं हुसैन से हूँ वह उसका नामो निशान मिटाना चाहता है। इस लिए ऐ बच्चो मुझे माफ़ कर दो, बच्चे यह सुनकर आपसे लिपट जाते है और कहते है आप हमें माफ़ कर दीजिए, हमे नींद इस लिए नहीं आ रही के हम भूखे और प्यासे है, बल्कि हम सब बेचैन है के कब सुबह होगी और हम जंग लड कर शहादत का जाम पी लें और हमेशा के लिए एक गहरी नींद में सो जाएं, आपकी आंखो में आंसू आ जाते है आप बच्चो को बोसा कर के अंसारो के खेमे में आ जाते है और कहते है कल क्या होगा यह तो खुदा जाने लेकिन

एक बात तय है की हमारे शहीद होने के बावजूद इस्लाम पर आंच नहीं आएगी और नाना का दीन ऐसे फैलेगा जिस तरह पेड़ पर बौर आ जाया करता है। जिसकी वजह से पेड़ झुक जाया करता है। अगर आप किसी को भी हमसे कोई शिकायत है, या आप लोगो को लगता है की मैंने कोई फैसला सही नहीं किया है, या कुछ कमी रह गई है तो मुझे माफ़ कीजिएगा और आपने मेरा साथ देकर जो एहसान किया है, आले-हरम पर उसका कर्ज़, हम चुका नहीं सकते। यह कहकर आपकी आंखों में आंसू आ जाते हैं, सभी अंसार एक साथ कह उठते हैं क्या आपने हमारे साथ कुछ कम किया है, आपने तो वह काम किया है जिसको पूरी अंसार कौम ज़िन्दगी भर भूल नहीं पाएगी, आपने हम से साथ नहीं मांगा बल्कि आपने हम सबको साथ लेकर हम पर एहसान किया है, जिसे हम ता क़यामत तक भूल नहीं सकते। जब-जब हुसैन का नाम आएगा या लिया जाएगा तब-तब अंसारो का नाम भी लिया जाएगा, यानी ता क़यामत तक अंसार भी हुसैन के साथ ज़िंदा रहेंगे। आपने तो वह काम और वह फैसला किया है जिसकी तारीफ़ अगर हम लिखना चाहे तो पूरी लिख नहीं पाएंगे, इस लिए हम सभी आपके कर्ज़ दार हैं, बस आपसे एक गुज़ारिश करते हैं के कल की सुबह बाद नमाज़-ए-फ़जर जंग शुरू हो तो सबसे पहले हम अंसार आपके लिए जंग करें और आपके नाम पर शहीद हो जाए क्युकी “मैं हुसैन से हूँ”। हमारे होते हुए आले-हरम पर आंच तक नहीं आएगी इशाअल्लाह, बस आपके हुक्म का इंतज़ार है, आप हमे हुक्म दें और हम अपने वादे को पूरा कर सकें, आपने हमे इस लायक समझा की हम आपके वफादार बन सके हमारे पूरे खानदान के लोग आप पर कुर्बान आपके बच्चो पर कुर्बान इन्शाअल्लाह।

हज़रत हुसैन अंसारो से मिलकर अपने खेमे में आ जाते हैं और बनी हाशिम और बनी कमर के लोगो को जमा करते हैं और जब सभी लोग इकट्ठा हो जाते हैं तो सभी लोगो को हसरत भरी निगाहों से देखते हैं और यह देखने की कोशिश करते हैं। कहीं से किसी की आंखों में कोई शिकायत तो नहीं या किसी में खौफ़ तो नहीं। यह जानने की एक कोशिश करते हैं। लेकिन आपने

सभी को मज़बूत पाया, हज़रत हुसैन बारी बारी से सबके सर पर हाथ रखते हैं और बोसा करते हैं, उसके बाद बैठ जाते हैं और खामोश रहते हैं, कुछ पल की खामोशी के बाद एक बार फिर से कहते हैं किसी को कोई शिकायत तो नहीं ? । आवाज़ आती है आपने आज तक किसी को भी शिकायत का मौका ही नहीं दिया तो फिर किस बात की शिकायत । इसके बाद आप जमा लोगो से मुखातिब होकर कहते हैं,

यज़ीद की दुश्मनी हुसैन से है,

आप लोगो से कतई नहीं,

आप लोगो में से जो भी चाहे वह,

मुझे छोड़ कर जा सकता है,

हमारा उस शक्स से कोई गिला शिकवा नहीं रहेगा,

बल्कि हमारी तमाम दुआओ में वह शरीक रहेगा,

और रही जन्नत की बात तो मैं वादा करता हूँ,

तुम सबको खुदा जन्नत में दाखिल करेगा बिना जंग लड़े इन्शाअल्लाह ।

यह ख़ुत्बा देने के बाद आप खेमे में मौजूद जलती हुई मशाल को बुझा देते हैं और खामोश हो जाते हैं । कुछ पलो बाद आप दोबारा मशाल रोशन करते हैं और निगाह दौड़ाते हैं की कौन कौन लोग अभी तक साथ देने के लिए अभी भी मौजूद हैं । लेकिन हज़रत हुसैन को छोड़कर एक शक्स भी नहीं गया जो जहां पर था और जिस हाल में था वह वैसे ही बैठा मिला, हज़रत हुसैन की आंखो

में खुशी के आंसू आ गए तभी अंसारो ने कहा, क्या आपको ऐसा लगता है हम लोग आपका साथ जन्नत की लालच में दे रहे हैं ?! हम लोग आपका साथ अपनी खुशी के लिए दे रहे हैं और आपके नानाजान की मुहब्बत में दे रहे हैं। अगर हम आपका साथ नहीं देंगे तो क्या यज़ीद का साथ देंगे ?! जब हशर में हम सबका सामना नबी (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) से होगा तो हमारे चेहरे उस वक्त झुके नहीं होंगे क्युकी हमने आल-ए-नबी (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) के लिए आपनी जाने कुर्बान कर दी।

हम यह मंजर देख कर बहुत खुश हुए की मैं भी तो हुसैन के साथ खड़ा हूँ और मुझे फक्र है की “मैं हुसैन से हूँ”।

अज **१० मुहर्रम** की सुबह है हज़रत हुसैन अपने सभी साथियों के साथ मैजूद है, नमाज़-ए-फजर का वक्त हुआ आपने इमामत की और नमाज के बाद आपने दुआ की “ऐ खुदा तू मुझे कबूल फरमा और हमारी और हमारे सभी साथियों की कुर्बानी को कबूल फरमा और हमारे नाना का दीन हमारे बाद भी कायम रहे इसपर कोई आंच ना आ पाए “आमीन”। तमाम दुआओ के बाद आप जंग की शुरुआत करते हैं और एक के बाद एक तमाम अंसार और आल-ए-नबी शहीद होते हैं। जब तमाम आल-ए-नबी शहादत का जाम पी चुके और उनके लाशो को आप खुद उठा कर खेमो में लेकर आए।

अब हज़रत हुसैन (अलैहे सलाम) खुद घोड़े पर सवार हो कर जंग के मैदान में उतरते हैं, आपके सामने किसी की ताकत नहीं की आपसे कोई मुकाबला कर सके, शिम्र ने आपके मुकाबले अपने खास फौजियों को मुकाबले के लिए ललकारा। लेकिन कोई भी टिक ना सका और जहन्नुम वासी हुए, हज़रत हुसैन की ताकत और हौसले को देखकर एक बार भी नहीं लगा की यह वही हज़रत हुसैन है जो सुबह से लेकर अब तक अपने तमाम दोस्तों, अजीज़दरों और बेटो को खो

चुके हैं, ज़रा बराबर भी नहीं लगता की हज़रत हुसैन कहीं से भी दूटे हैं या कमजोर हुए हैं। तभी तो यह कहते हुए मुझे फक्र है की “मैं हुसैन से हूँ”। जिसका लखते जिगर हज़रत अब्बास जैसा शेर, जांबाज़ अंसार सभी शहीद हो चुके हो, वह शख्सियत इतनी शानदार जंग कर रहा है की तमाम फौजे एक साथ हमला कर रही है, शिम्र और उमरे साद का हाल यह है की वह अपने को बचा रहे है खुद फौजों के बीच छिप गए और फौजियों को उकसा रहे हैं, हज़रत हुसैन (अलैहे सलाम) को जैसे कुवत-ए-इलाही मिल चुकी है, फौजों में मौत का खौफ तारी हो चूका है, सब अपनी जान बचा कर भाग रहे है, आज किसी की ताब नहीं है जो हज़रत हुसैन से मुकाबला कर सके, आपके हाथ में **जुल्फिकार-ए-अली** है जिसने **जंग-ए-खैबर** में दुश्मनों के दांत खट्टे कर दिए। अचानक मशियत से एक आवाज़ सुनाई पड़ी “ऐ हुसैन जांबाज़ी का मुज़ाहिरा कर चुके अब सब्र का मुज़ाहिरा करो”।

आप समझ गए की हुक्मे इलाही है और आपको नबी-ए-करीम सल-लल-लाहो-अलैहे-वसल्लम का अल्लाह को दिया वादा याद आ गया। की तुम्हे कुरबानी देनी है, पूरे इस्लाम की तरफ से तब आपने कहा था नाना जान मैं राज़ी हूँ, तभी तो रसूल (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने कहा था “हुसैन मुझसे है” और “मैं हुसैन से हूँ”। हज़रत हुसैन ने तलवार मयान में रखी और पलटे और जैसे ही आप पलटे चारो तरफ से बछियों की बौछार शुरू हो गई, मुझसे बरदास्त नहीं हुआ मैं आपके सामने हाज़िर हुआ और कहा अगर आप मुझे हुक्म दे दें तो हम आपकी तरफ से जंग लड़ेंगे। आपने जवाब दिया की हम किसके लिए जंग करें हमारी औलादें, हमारे भतीजे, हमारे भानजे, हमारा अब्बास सब खत्म हो गए और फिर खुदा का हुक्म नहीं है की मैं जंग करूं, मुझे सब्र का हुक्म मिला है तभी वक्त-ए-ज़ोहर हो गया, आपने दुश्मनों से कहा की मैं नमाज़ अदा करना चाहता हूँ, लेकिन दुश्मन-ए-इस्लाम अपनी हरकतों से कहाँ बाज़ आने वाले थे, किसी तरह

आपके बचे हुए अंसारो ने आपके साथ नमाज़ की तैयारी की। जब हुसैन इमामत के लिए खड़े हुए तो पांच अंसार आपके आगे दीवार बनकर खड़े हो गए, अब बचे अंसारो के साथ आपने नमाज़ शुरू की दुश्मन तीरों से आप पर हमला करते रहे, आपके आगे के अंसार तीर खाते रहे और जैसे ही आपने दाएं जानिब सलाम फेरा तो देखा सब शहीद हो चुके हैं, फिर आपने बाएं जानिब सलाम फेरा तो यह सब भी शहीद हो चुके हैं और जैसे ही दुआ के लिए हाथ उठाया तो आगे के अंसारो ने कहा हुसैन खुदा हाफिज और पांचो शहीद हो गए। इनके शहीद होते ही हज़रत हुसैन ने चाहा की सजदा-ए-शुक्र अदा किया जाए, तभी एक तीर आपकी पेशानी में घुस गया फिर भी आपने सजदा-ए-शुक्र किया की ऐ खुदा तेरा शुक्र है, की मैंने तेरा हुक्म पूरा किया, अब आप खड़े हो गए और अपना मूह आसमान की तरफ किया और कहा “ऐ खुदा तू मुझसे राज़ी है ?”। इस दरमियान हज़ारो तीर आपके सर से लेकर पैर तक घुस चुके हैं। लेकिन आप अभी भी ज़िंदा हैं आप ज़ख्मो की वजह से गिरना चाहते हैं। लेकिन जिस्म में इतनी तादाद में तीर लगे हैं की आपका जिस्म ज़मीन पर नहीं लेट पाता।

तभी अचानक आसमान पर १२ जमातें नमुदार होती हैं जिन्हें इस अज़ीम कुरबानी का इंतज़ार था।

शिम्न हज़रत हुसैन के जिस्म की तरफ बढ़ता है, रास्ते में तमाम पत्थर पड़ें हैं, अपनी तलवार को पत्थरो पर मारता हुआ आगे बढ़ रहा है जिस्से तलवार की धार कुंद हो रही है, ताकि हज़रत हुसैन का सर काटते वक्त हज़रत हुसैन को तकलीफ हो, शिम्न हज़रत हुसैन के सामने खड़े होकर वेहशी निगाहों से देखता है और पहला वार आपकी गरदन पर करता है, लेकिन आपको शहादत का जाम नसीब नहीं होता। यह मंजर देख कर फरिश्तो की जमात यह कहते हुए चली

जाती है की हम यह जुल्म बरदास्त नहीं कर सकते । ना जाने कितने फरिश्तो का आपने भला किया अपनी दुआओ से, आपका खुदा हाफिज़ हज़रत हुसैन ।

शिम्र दूसरा वार आपकी गरदन पर करता है, लेकिन आपको शहादत का जाम नसीब नहीं होता । दूसरी जमात जिसमे मलाएका थे यह कहते हुए चले जाते हैं की हम अब नहीं देख सकते तुम्हारा खुदा हाफिज़ ऐ हज़रत हुसैन ।

शिम्र तीसरा वार करता है, लेकिन फिर भी आपको शहादत नसीब नहीं होती औलियाओ की जमात बरदास्त नहीं कर पाती और चली जाती है ।

अब शिम्र आप पर चौथा वार करता है, लेकिन अभी भी आप शहीद नहीं होते, यह देख कर पैगम्बरों की जमात भी चली जाती है ।

शिम्र हज़रत हुसैन पर पांचवा वार करता है, लेकिन अभी भी हज़रत हुसैन को शहादत का जाम नसीब नहीं हुआ यह देख कर सहाबाओ की जमात आँखों में आंसुओ का सैलाब लिए यह कहकर चली गई की हम कैसे बरदास्त करें क़त्ल-ए-हुसैन जिन्हें हमने अपनी गोद में खिलाया था ।

शिम्र हज़रत हुसैन पर छटा वार करता है, लेकिन हाय अफ़सोस अभी भी आप शहीद नहीं हुए और इमामो की जमात यह कहते हुए चली गई की अब हम और जुल्म बरदास्त नहीं कर सकते, हज़रत हुसैन आपको खुदा हाफिज़ ।

इस अज़ीम क़ुरबानी को देखने के लिए अभी भी ६ जमातें खड़ी हैं, असल में शिम्र यह चाहता था की हज़रत हुसैन को ज्यादा से ज्यादा तकलीफ हो तभी तो उसने अपनी तलवार को कई

पत्थरो पर पटका था, ताकि तलवार की धार पलट जाए और गरदन काटते हुए ज्यादा से ज्यादा वार करने पड़े और खूब तकलीफ पहुंचे ।

शिम्र ने हज़रत हुसैन पर सातवा वार किया, लेकिन आपको शहादत नसीब नहीं हुई हुसैन की तकलीफ देखकर वलियों की जमात यह कहकर चली गई की अब हम हुसैन पर और जुल्म नहीं देख सकते आपको खुदा हाफिज ।

शिम्र की आँखों में खून सवार है और साथ ही साथ लालच का शैतान सवार है, जिसका मकसद है दौलत को हासिल करना ।

इसी दरमियान शिम्र आप पर आँठवा वार करता है, लेकिन अभी भी आप जिंदा है, जिन्नातो की जमात जो अभी तक इस मंजर को देख रही थी उनका भी सब्र जवाब दे गया और यह जमात भी आँखों में आंसू लिए रवाना हो गई ।

लेकिन मैं अभी तक जुल्म होता देख रहा हूँ इस आस पर की शायद हज़रत हुसैन मुझे हुक्म दें और मैं उनकी मदद करूँ । लेकिन इतनी तकलीफ उठाने के बावजूद नाना के लिए कुरबानी दे रहा नवासा मदद लेने के लिए तैयार नहीं ।

इस दरमियान शिम्र आप पर नौवां वार करता है लेकिन अभी भी हज़रत हुसैन शहादत का जाम ना पी सके, हज़रत हुसैन के मूह से आवाज़ निकली नानाजान आप हमसे खुश तो हैं, आपने ही कहा था हुसैन मुझसे है और **“मैं हुसैन से हूँ”** । नबी-ए-करीम (सल्लल्ला हु अलैहे वसल्लम) ने यह सुनकर अपने ऊपर काबू ना रख सके और नम आँखों के साथ हुसैन को खुदा हाफिज कह कर चले गए । हज़रत हुसैन की इस कुरबानी को देखते हुए अभी भी ३ जमातें मौजूद है ।

शिम्र एक बार फिर आगे बढ़ता है और आप पर दसवा वार करता है। लेकिन आपको शहादत नसीब नहीं होती, यह देख कर भाई हसन भी अपना सब्र टूटता देख हुसैन को खुदा हाफिज कह कर चले जाते हैं।

शिम्र की शक्ल इस वक्त खूंखार भेड़िये की तरह हो चुकी है, जिसका मकसद सिर्फ शिकार पर टूट पडना होता है।

शिम्र ग्यारवा वार करता है, जिस्से हज़रत हुसैन की गरदन का आधा हिस्सा कट जाता है, यह देख कर शिम्र शैतान की तरह हसता है, आपके वालिद जनाब हज़रत अली इब्ने अबू तालिब रो पडते है और कहते हैं अब हम इस जुल्म को नहीं बरदास्त कर सकते, मेरे बेटे मैं जा रहा हूँ और हज़रत अली चले जाते हैं।

यह वही अली है जब आपकी पीठ में जहर बुझा खंजर लगा था और दर्द का यह हाल था की किसी भी करवट आराम नहीं, तमाम हकीमी इलाज बेकार साबित हो रहे थे। तब हज़रत अली ने हज़रत हुसैन से कहा बेटा दुआ करदो मेरी मौत आसान हो जाए और हज़रत हुसैन ने अल्लाह से दुआ की तब कहीं जाकर आपको शहादत नसीब हुई। लेकिन आज हुसैन पर दुश्मन-ए-इस्लाम जुल्म पर जुल्म कर रहे हैं जिस्म खून से नहाया हुआ और जिस्म का हर हिस्सा तीरों से सजा हुआ है। बेटे की तकलीफ बाप से बरदास्त नहीं हुई और आप वहां से स्वस्त हो जाते हैं।

हुसैन आसमान की तरफ देखते हैं और कहते हैं **“ऐ खुदा तू मुझसे राज़ी है ?”** यह वही खुदा है जिसे हुसैन की आँखों से आंसू देखना पसंद नहीं था, आज हुसैन की आँखों से निकलता खून देख रहा है, जब ग्याराह जमातें चली गई तो आपने आखरी कलाम कहा **“क्या सब मुझे**

छोड़ कर चले गए”। मशियत से एक आवाज़ आती है नहीं मेरे लखते जिगर में अभी भी तेरे पास हूँ तेरी माँ फ़ात्मा ज़हेर ।

आप हज़रत हुसैन के सर मुबारक को अपनी गोद में लेती है और शफक्कत का हाथ रखती है तभी दुश्मन-ए-हुसैन अपनी तलवार से आखरी वार करता है और हज़रत हुसैन का सर जिस्म से जुदा हो जाता है ।

शिम्र आगे बढ़ता है और हज़रत हुसैन के सर मुबारक को नेजे से उठाकर आसमान की तरफ ख़ुशी से बुलंद करता है ।

आज वाकिए कर्बला को गुजरे हुए **१३७३ साल** गुजर चुके है, लेकिन आज भी हर मोमिन यही कहता है,

“ मैं हुसैन से हूँ ”, “ मैं हुसैन से हूँ ”, “ मैं हुसैन से हूँ ” ।

लेखक

नुसरत आलम शेख (जाफ़र)